

सत्ती बोदी

अंगिका उपन्यास

सती बोदी

अंगिका उपन्यास

लिखनियार
डॉ. अमरेन्द्र

जे हिन्दी कथा-साहित्य के
आकाशदीप बनी गेलों छै
शिव कुमार शिव
लेली!

—अमरेन्द्र

सत्ती बोदी

“सुन, तोरा सिनी कें एक ठो कहानी सुनाय छियौ” माधो मिसिर नें आपनों दायों तर्जनी सें दायों आँख मुनी लेलें छेलै, जेना कहानी के कोय बात याद करै के कोशिश करतें रहें, आरो फेनु मूंडी कें एक झटका दै, आँख खोलतें कहनें छेलै, “गाँव के तें नाम नै याद आवी रहलौं छै, मतरकि है खिस्सा छेकै आसे-पासे गाँव के; चाहे पँचपुरा के रहौ, आकि बहबलपुर के आकि आपने गाँव के। मतरकि है आपनों गाँव के खिस्सा नै हुए पारें। ई छोटों गाँव आरो सबटा पंडिते के घोर; तीन घोर खाली तोरों कैथों के, की अमर—ठीक छै की नै? ई कहानी खाली हमरों गाँव कें बदनाम करै लेली उड़ाय देलौं गेलों छै—बाबू साहब सिनी के करतूत होतै। अभियो सुनवे नी करै छें—कहै छै, महापातर कहिया के पंडित भै गेलै। पंडित के मतलब होय छै—पुजारी, जे मंदिर में पूजा करावें। महापातर समसानी में पूजा करावै छै, ऊ पंडित कहिया के! आबे तोंही बताव अमर, पंडित पँचपुरा दुर्गा मंदिर के रहें कि चीर के मुर्दघट्टी में पुराण पढ़ैवाला—पंडित नी भेलै।”

“माधो, तोंय कोय कहानी बताय लें जाय रहलौं छेलैं, है कौन पुराण लै कें बैठी रहलैं?” अमर नें ओकरा टोकलें छेलै। वैं माधो कें खूब जानै छै, जौन बात कें लैकें ऊ उठै छै, ओकरा पर कभियो टिकहै नै पारें। कहतें-कहतें ऊ वहाँ पहुँची जाय छै, जहाँ पहिलको बात ओकरा कुछुवे नै याद रहै छै आरो फेनु ऊ खिस्सा छोड़ी कें कोय दोसरों-तेसरों गप्प उठाय लै छै।

अमरजीत के टोकला पर माधों कहना शुरू करलकै, “हों, तोहें ठीक टोकलैं, कहानी कोय्यो गाँवों के रहें, मजकि छेकै एकदम सच्च— चार

दोस्त, चारो पकिया यार, पूजा सें लै कें चोरी तांय साथें रहैवाला । वैमें पंडित के बिचलका बेटा संतोषो एक मित्र.....एक दिन चारहीं प्लान बनैलकै कि आयकों रात डगरा धोबी के पाठा कें जब्दें करलौं जाय । फेनु की छेलै—चारो ओकरो घरो में घुसलै आरो ऊ टापे-टुप अन्हरिया राती में ऐंगनोंवाला टटिया कल्ले-कल्ले हटाय कें पाठा उठाय लै आनलकै आरो हसिया-कचिया सें ओकरा दकची-हुकची, छीली-छीली कें रान्ही लेलकै । फेनु की छेलै, राते भर में चार सेरो के माँस चारो के पेटों में अँटी गेलै । विहान होलै, तें डगरा धोबी के कनियैन गाँव भरी में कानना-बाजना शुरू करलकी—‘हमरो गदहा बच्चा कें राती टटिया खोली कें कौनें चोराय लेलकै । लौटाय दौ, नै तें यशपुरा जाय कें काली माय कें कबूलती कबूली ऐवै, हों.....’ आबें तें चारो मित्र खाली एक दूसरा के मुँ टुकटुक देखै—पाठा के बदला गदहा-बच्चा के माँस रात भर चिबैतें रहलौं छेलै । जीहा के सवाद बदलना शुरू भै गेलौं छेलै ।”

एतना सुनीकें अजनसिया, कल्लर, सकीचन आरो अमरजीत तें हँसतें-हँसतें जेना लोटपोट । मतरकि माधो के मुँहों पर कटियो टा हँसी नै छेलै, जेना वैं कोय बड़का गंभीर बात बताय रहलौं रहें । केकरो हँसी पर बिना ध्यान देल्लें वैं आगू कहलकै, “आबें तें चारो कें ई शंका सतावें लागलै कि है जे पाठा के जग्घा में गदहा खाय लेलें छै, ओकरो छूत सें ऊ सब केना बचतै? तबें पंडित के बेटा छोड़ी कें तीनो साथीं विचारलकै कि है बात पंडिये जी कें कही देलौं जाय, हुनिये है पापों के निवारण करें पारै, कैन्हें कि है कामों में हुनकों बेटाहौ शरीक छै ।

“फेनु की बात छेलै, चारो दोस्त पंडित जी के पास पहुँची गेलै । सब बात सुनी कें पंडी जी माथों ठोकी लेलकै, मतरकि बात तें हुनकों बेटाहौ के छेलै । से हुनी बोललै, ‘अच्छा घबड़ाय के कोय बात नै छै । एक मंतर छै, जे ई पापों सें मुक्ति दिलावें पारें । फेनु की छेलै—तड़ातड़ ऐंगनों गोबर सें जेना-तेना निपैलौं गेलै । आसन बिछैलौं गेलै । धूपो-धुमनों जलैलौं गेलै । पोथी-पतरा खोललौं गेलौं । पंडित जी आसन पर बैठला आरो जनेऊ पर तीन-चार लम्बा हाथ फेरतें मंतर पढ़लकात, ‘चार चोर, एक संतोष, गदहा खेलें कुछु नै दोष ।’ आरो कहलकै—जो, आबें चारो गदहा खाय के पापों सें मुक्ति पावी गेलौं छैं ।”

अबकी तें सकीचन, बलजीत साथें माधो भी आपनों हँसी नै रोके पारलकै आरो ठठाय केँ हॉसी पड़लै। कि तखनिये अजनसिया गंभीर होय गेलै, आरो आपनों निचलका ठोरों केँ दबैतें कहलकै, “मतरकि है कहानी कहै के की मतलब? माधो तोहें बिना मतलब के कोय कहानी तें कहें नै पारें।”

“ठीक पकड़लैं तोहें, अजनसिया; बिना मतलब के तें आँखी के पिपनियो नै हिलै छै। देख, सिंधनाथ पंडी जी तें लम्बा-लम्बा हॉकी गेलै कि देवघर के बाबा पर सुलतानगंज के गंगा-जल चढ़े—तभिये पुन्न, नै तें सौ कोस के जतरा बेरथ। देख अजनसिया, जबें पंडी जी के मंतर पढ़ला सें पेटों के गदहा पाठा होय जावें पारें, तें है चीर के पानी काँवर में जग्घों पैहें गंगाजल कैन्हें नी बनें पारें। यहाँ सें लैकेँ देवघर तांय जबें बोलबम के मंत्र जाप होतै, तें चीर के जलो जरुरे गंगाजल बनी जैतै, की है बात तोरासिनी केँ समझै में नै आवै छौ।”

माधो के बात सुनहें सब गंभीर होय उठलें छेलै। सकीचन ठोरों सें अंगुली हटैतें कहलकै, “माधो गलत की बोली रहलें छै। सुलतानगंज सें गंगाजल भरों कि चीर-चानन सें, बात सब बराबरे छै। मॉन पवित्र होना चाहियों। फेनु सुलतानगंज के बदला जों हमरा सिनी मसूदन बाबा के दुआरिये सें काँवर उठाय छियै, तें सोची लें आधा जतरा के थकान तें हेन्हें बाबा भोलेनाथ कम करी देलकै। की अमरजीत, जरा बातों पर गौर करें।”

“लें, कपिलदेवो आवी रहलें छै, आबें ओकरों की मत बने छै, यहू जानी लेना चाहियों, हमरा सिनी लें तें माधों के मत ही फिट बुझावै छै।” अमरजीतें आपनों कोकड़ी सहलैतें बोललै।

ओकरों बोलना छेलै कि सब के नजर कपिल मिश्र के दिस गेलै, जे हाथों में एकटा लम्बा बेंत घुमैलें-घुमैलें आवी रहलें छेलै। कपिल मिश्र के नगीच ऐहें सकीचन बोललै, “की कपिल, आय बेमौसम हाथों में बेंत देखै छियौ। घरों में कुछ होलौ की?”

“अरे घरों में की होतै, मुहल्लावाला सें होलै। घरों के पिछुवाड़ी में हौ जे बड़का नाला छै नी, नै जानौं कहाँ सें वैमें पाँच हाथों के साँप छल्लर काढ़ी रहलें छेलै। देखवैय्या के ठसमठस भीड़। सब के मुँहों सें एक्के बोली—धन्य हमरों भाग, जे भोले बाबा आपनों दर्शन करैलकै। की कहियौ,

सँपवा, एल्ले-एल्ले आदमी देखी कें हमरों घरों के पिछलका भीती पर चढ़ना शुरू करी देलकै। कि आव नै देखलियै ताव, हममें कुल्हड़िया के पान-दुकानी के ई बेंत खिंचलियै आरो साँपों दिस बढैलियै। हमरों हाथों में बेंत देखी कें सब बोलें लागलै, 'हे हे, कपिल, है की करै छों, सावन में साँप मारै छौ। है की साँप छेकै, भोलेनाथ ही छेकै।' आबें सोचें सकीचन, हममें देखी रहलौ छियै कि साँप हमरों दिवाली पर चढ़ी रहलौ छै, आरो धूरी घोष हमरा बताय रहलौ छेलै कि भोलेनाथ छेकै। अरे, जों भोलेनाथ छेलै, तें उठाय कें आपनों घोर लै जैतियै। से तें नै। हौ तें विरिज काका के मंझलका बेटा छेलै, नै तें तखनिये जवाब दै देतियै।”

“तबें होलै की?”

“अरे होतियै की? हममें दूरे सें साँप कें ई लम्बा बेंत सें हटैलियै। आबें तें साँप उलटी कें चेतु मिसिर के दुआरी दिस सरपट मुड़लै। फेनु की छेलै, अभी तांय जे चेतु मिसिर जय भोले नाथ करी रहलौ छेलै, ऊ सीधे आपनों दरवाजा बंद करै लें दौड़लै। केवाड़ बंद होय के फटाक सना आवाज होलै, तें सँपवों वहा तेजी सें फेनु मुड़लै आरो हौ जे कापरी काका के फुलवारी छै नी, साँप ओकरहै में फुँफकारलें दुकी गेलै...कापरीका के फुलवारी में साँप दुकै के मतलब छै, साँप केकरो घरों में कखनियो घुसें पारें। से सब फुलवारी कें चारो दिस सें घेरी लेलें छै। हममें देखी लेलें छियै, आबें केकरो मुँहों पर सावन में साँप-दर्शन के महिमा नै छेलै आरो हमरा यहू मालूम छै कि हौ खोखन काका रहें कि कापरी काका आकि चेतु मिसिर ही केन्हें नी रहौ; सब साँप के साथ कौन व्यवहार करैवाला छोंत। वही सें हममें हिन्नें चल्लो ऐलियौ, नै तें आब्हौ पारतियै की। तें की बात भेलौ, से सुनाव!”

“है बात तें तैय्ये छै कि काँवर लैकें देवघर जाना छै, बस नया बात एतन्है टा जुड़लै कि सुल्तानगंज सें गंगाजल भरै के बदला चीर नद्दी के ही जौल काँवर में भरलौ जाय आरो मसूदन बाबा के दुआरिये सें बोल बम के नारा देलें सीधे देवघर।”

“एकदम फिट सोचलें छें। हममें तें पहिलो कहलें छेलियौ कि सुल्तानगंज के गंगा आरो मंदार के चीर में फरक करना मुरखौआ बात छेकै। वहाँ अजगैवीनाथ के मंदिर छै, तें यहाँ सीधे भोला बाबा के घोर, मंदार। वहाँ

जहनुऋषि तप करै छेलै, तें ई चीर नदी पर परशुराम धनवंतरी ऋषि तप करै छेलै। है हम्मै नै कहै छियौ, पुराण कहै छै, पुराण। तोरा सिनी के निर्णय एकदम फिट छौ, आरो आबै हम्मै फेनु हुन्नै कापरीका के फुलवारी दिस जाय छियौ। आदमी के सोभाव जानवे करै छैं, ओकरा पर चेतौ मिसिर, अरे कहीं हमरौ घरौ दिस नै ऊ साँपों के सिधियाय दै आरो सब हर-हर भोले बाबा करलें आपनों घोर दिस चलै छियौ सकीचन, आबै साँझै भेंट, बोल बम।”
आरो सब्भैं एक्के साथै नारा देलकै, “बोल बम !”

(२)

सावन बीती गेलौ छेलै, भादो भी, आसिन भी आरो फेनु कातिको। सत्ती आपनों ऐंगन के औसरा पर बैठली-बैठली सोचै छै, “आरो के बात तें आरो छै, मतरकि हमरौ कोखी के जनमलौ है अमर, की रं आपनों पेटों में है बात के गुड़मुड़ियैलें रही गेलै ! हे भगवान, जौ कजायत हेनौ-हेनौ होय जैतियै, तें ई अभागिन के दसौ दिशाहै नी बंद होय जैतियै।” आरो फेनु ऊ आपनों अँचरा आपनों हथेली में राखी दोनौ हाथ भगवान दिस उठैतें कहलकै, “देखियो देव, माँगों के सिनूर नै राखें पारलें, तें कोय बात नै, कोखी के सिंगार बचैलें राखियो।”

सत्ती के ठीक उतरवारीवाला ऐंगनों में घमासान मचलौ होलौ छेलै। उतरवारीवाला ऐंगनों ओकरौ भैसूर आशु बाबू के छेलै। पहिले तें दोनौ ऐंगनों एक्के छेलै, आठ-दस कट्ठा के ऐंगन, जेकरौ दक्खिन दिशा में लम्बा-लम्बी दू कट्ठा में बनलौ एक्के कोठरी में बीचों सें दीवार दैके दू बड़ौ-बड़ौ कोठरी बनाय देलौ गेलौ छेलै, आरो कोठरी के ठीक बीचवाला दीवार के सोझे-सोझी ऐंगना में एक मोटौ रँ माँटी के दीवार दै देलौ गेलौ छेलै, जेकरा सें दू परिवार के अलगे-अलग रहै के साफ-साफ बोध होय छेलै। दीवार के सिरा पर छोटों-छोटों बाँसों पर परछत्ती बनलौ होलौ छेलै आरो दीवारिये सें सटलौ-सटलौ देहरी, जेकरा पर एक आदमी तें आराम सें

करवट-उरवट लिए पारें, सुतै पारें; चौड़ाई एतन्है छेलै आरो लम्बाई तें एतन्है कि पाँचो-छो आदमी लम्बा-लम्बी सुती रहें, तहियो जग्घो खालिये बची रहें। आँगन सें लागलौ औसरा बच्चा के पढ़ै-लिखै सें लैकें मॉर-मरदाना के खाना-पीना तक में काम आवी जाय छेलै।

आय वहें औसरा पर सिमरन, भदेवा, मंगलिया, बदरी साथें सकीचन, कपिल, गुलगुलिया आरनी जमलौं होलौं छेलै, आपनों-आपनों पक्षों में सफाई देतें। बीचों में अमरजीत के बड़का बाबू आशुतोष घोष चुपचाप सबके बात सुनी रहलौं छेलै, बोलै कुछ नै छेलै। भदेवा आरनी में से जेकरा भी जे कुछ कहना रहै, झट सना देहरी सें उठी कें हुनको सामना में आवी आपनों हाथ हिलाय-हिलाय कहें लागै। जबें पारी बदरी के ऐलै, तें वैं एक दाफी देहरी पर बैठलौं सिमरन सें लैकें गुलगुलिया तक कें देखलकै। फेनु कहें लागलै, “बड़का दा, ये सबमें जे भी जे कुछ बोललौं, एकदम झूठ बोललौं। अमरजीत कें हमरें में सें कोय सनकैलें छेलै कि जों हियाव छौ, तें ई शिवगंगा पार करी दिखाव। सौन-भादों में चीर नदी पार करवों आसान छै, मतरकि शिवगंगा कें हेली पार करवों; समुद्र कें लाँघबों छेकै। ई आपनों गाँव के तालापुल नै छेकै कि हिन्नं सें कुदलौं आरो हुन्नं सें निकललौं।”

“आबें की कहियौं, अमरा नें आव नै देखलकै ताव, धौंस दइये तें देलकै, धोतिये पिन्हलें आरो पच्चीस-तीस शेरवाला रेहू मछली नाँखी शिवगंगा में छप-छप करतें बीच लाट तांय बिना पलक मारतैं पहुँची गेलै। मतरकि छप-छप करै में ही धोती ठो ढील पड़ी गेलै आरो अमरजीत के गोड़ों सें लतफनाय गेलै। पहिलें तें हमरासिनी यहें बुझलियै कि बीच में पहुँची कें शिव गंगा कें थाहै के कोशिश करी रहलौं छै; जबें ओकरो हाथ-गोड़ ढीला पड़ें लागलै; नै हौ छप-छप, नै हौ गति, तबें हमरासिनी कें शंका भेलै आरो बातो ठो समझै में आवी गेलै। मतरकि हमरासिनी में हेलवैय्या कोय रहें तबें नी। चीख-पुकार मचैबों शुरू करी देलियै। दुर्भाग देखों, कि वहाँ कोय हेलवैय्या बम भी नै छेलै, जे कूदी जैतियै। हौ तें भोलाहे बाबा रों किरपा कहों कि तखनिये लतफनैलौं धोती सोझराय गेलै आरो अमरजीत पानी पर लेटी झब सना धोती सड़यैलें छेलै आरो पट सना पलटी कें एक्के साँसे शिवगंगा हेली गेलै। नै तें बड़का दा, जे अपयश हमरासिनी के माथों पर लगैतियै, ओकरा सें तें ई जिनगी भर उबरना मुश्किले छेलै। गोबध के पाप

कहीं छूटै छै की? अमरजीत केँ कुछ होय जैतियै, तें हमरासिनी में कोय्यो पाप सेँ निवृत्त नै हुएँ पारतियै। सबसेँ बड़ों गलती तें यहें छेलै कि एकरा बम में शामिले नै करना छेलै।”

“हमरोँ दिस ताकी केँ बात खतम नै करेँ बदरी। हम्मों अमरजीत केँ नै उकसैलें छेलियै, बम बनै लें। जे उकसैलें छेलै, आकरोँ माथा पर तें बम फोड़ै के साहस नै होतौँ।” गुलगुलिया नेँ देहरी सेँ नीचेँ पसरतें हुएँ आगुयो कहलें छेलै, “मक्खी उड़ाय केँ भनभन दूर करै लें चाहै छें, बदरी! है भनभन विरनी सिनी के कारनेँ छेकै, आरो ओकरा में हाथ दै केँ तोहरोँ साहस तें होतौ नै।”

“देख गुलगुलिया, मुँह-कमर सेती केँ राखें। बहुत छुट्टा होय गेलों छें। हमरा सिनी विरनी आरो मधुमाँछी। अरे, मधुमाँछियो काटै छै। बाभन होय केँ बाभनसिनी पर दोषारोपण रे।” बदरी नेँ बैठले-बैठले हाथ चमकेतें कहलें छेलै।

“देख बदरी, यैमें बाभन, बभनौटीवाला बात नै छै। बात केँ विषाक्त नै करेँ। यैमें दोषारोपण के की बात छै। कहें कि गलती बाभनों सेँ नै भै छै की ! अरे, गलती तें ब्रह्मों सेँ होय छै, फेनु आदमी तें आदमिये छेकै। बदरी, खाली तौँही बाभन नै छेकैँ, हम्मू छेकियै, मतरकि पाप के दोष सब्भे पर बराबरे लागै छै आरो ओकरोँ परछालन एक्के नाँखी सबकेँ करै लें लागै छै। है नै कि एक जात मूँ सेँ खाय छै, नाक सों सांस लै, आँख सेँ देखै छै, गोड़ सेँ चलै छै, आरो दूसरोँ जात नाँकी सेँ खाय छै, मुँहों सेँ देखै छै, आँखी सेँ साँस लै छै आरो गोड़ों सेँ चन्दन लगावै छै। गलती होलों छै, गलती मानी लेलाहै में फायदा छै—गलथोधरी करला सेँ कुछ हासिल नै होय वाला छै। दोष तें सबके माथा पर जाय छै, जत्तेँ बाभन टोला के माधो, बदरी, कपिल, ओतन्है कोयरी टोला के मंगलिया, सिमरन आरो सकीचनों पर; हीं।”

बदरीं अभी आरो कुछ कहै लें हाथ उठैले छेलै कि आशुतोष बाबू नेँ ओकरोँ उठतें हाथों केँ नीचेँ करते हुएँ कहना शुरू करलकै, “यैमें उटका-पैँची के कोय बात नै छै, नै हेंसा-हेंसी के। हम्मों आय बभन-टोली के चाँद मिसिर, कश्मीरी झा, किरपा मिसिर आरो कोयरी टोलों के धन्नु, महतो, कानू महतो आरो सुग्गी मरड़ केँ बुलावै छियै, फेनु पूछै छियै कि गाँव आबें हेन्है चलतै कि आरो रस्ता सेँ।”

कि तखनियै आपनों माथों पर अँचरा लेलें आपनों ऐंगना सें सत्ती बाहर निकललै आरो दुआरी के चौखटी सें सट्टी कें खाड़ों होय गेलै। घूँघटा सें कुछ देखलकै आरो आपनों दायों हाथ कें थोड़ों आगू बढ़ैतें हुएँ कहलकै, “आबें कोय पॉर-पंचैती करै के जरूरत नै छै। हम्मैं ई सोची लेतियै कि आबें अमर कें ई गाँव में नै रखना छै। अमर के बाबू सरंग सिधारी गेला, मतरकि अभियो विपत वक्ती हुनी हमरों साथ नै छोड़ै छोंत। आबें हुनके आदेश मानी हम्मैं ई तय करी लेलें छियै कि अमर कें तगेपुर पहुँचाय ऐवै, अमूलदा कन। वहीं रहतै, तें दादा के आशीर्वाद सें दू अच्छर पढ़ी भी लेतै; नै तें यहाँ लभारे रँ करतै जिनगी काटी लेतै। गाँव भरी हमरा सुक्खों-दुक्खों में साथ देनैं ऐलें छै, आबें अमरजीत कें लैकें हम्मैं आपनों गोतिया-लौय्या नाँखी टोला-पड़ोसा सें मनमुटाव नै लिएँ पारों। विधाता विपरीत होतियै, तें अमर घुरी कें घोर नै ऐतियै। हिनी खाली गुलगुलीजी के बाबू सें एतनाहै पता करवाय दियै कि पंचक कहिया सें कहिया तक पड़ै छै। बस।” आरो एतना कही कें वैं अँचरा कें खोपों तक लै आनलें छेलै; सीधे आपनों ऐंगनों दिस मुड़ी गेलें छेलै। एक घनघोर चुप्पी कें पीछू छोड़तें होलें। जे जहाँ छेलै, होन्है कें रही गेलें छेलै, जेना देखतैं-देखतैं सब माँटी आरो पत्थल रों मरुत।

(३)

“बस, आय सें अमरजीत कें ई मंडली सें छुट्टी” बदरी नें दायों मुट्ठी उठाय कें कसलों ओंगरी सिनी कें ई तरह झटका सें खोली देलें छेलै, जेना सामन्है में बैठलें कोय चिड़िया कें उड़ैतें रहें।

“तोहें तें हेनो आपनों निर्णय सुनाय देलैं, जेना तोहीं मुंशी-मुंसफ रहें।” सिमरन कें गुस्सा आवी गेलें छेलै।

“एकरा में मुंशी-मुंसफ के कोय बाते नै छै। हम्मैं अमर कें मंडली में नै राखे लें चाहै छियै, यहू बात नै छै, मतरकि जानी ले, जों ओकरा कुछ होतौ, तें एकरा में एक नै फँसवे, सत्ती बोदी मंडली भर पर ढेंस लगैतौ, जानी

ले, आरो ओकरों बाद सोचें कि अमर कें मंडली में राखै लें चाहै छैं, की नै?” बदरी नें ई बात शान्तिये भाव सें कहलें छेलै।

बात सचमुचे में चिन्तित करैवाला छेलै। कमरथुआ बम में अमर कें शामिल करै के नाम पर जोन रँ बवंडर महीना भरी पहिले गाँव में उठी चुकलें छेलै, ओकरा देखतें आबें केकरौ हियाव नै रहलें छेलै कि अमरजीत कें मंडली में शामिल करलें जाय। के मुसीबत मोल लें।

“एतन्है नै, एक बात तें हम्में कहै लें भूलिये गेलां। कल सत्ती बोदी कन गेलें छेलियै; साफ कहियौ, सेर भरी चौर देतें नैकी बोदी की कहलकै? कहलकै, ‘सकीचन जी, आरो एक बात कि अमरजीत कें तोरासिनी उड़ारी-पुड़ारी कें नै लै गेलें करों। तोरा सिनी कें जे नाटक-नौटंकी करना छौं, करों; अमर वैमें पाट-ऊट नै लेतौं; नै तें ओकरा उकसैलें करों। हों।’”

“सब बात ठीक छै, नै बदरी कें हम्में गलत कहें पारौं, आरो नै तें बोदी कें ही। बमवाला घटना लै कें हुनको मॉन एतन्है नी दहली गेलें छै कि हुनी कुछुवो नै सोचें पारें। मतरकि बात एकरों नै छै, बात तें यहाँ एकरों छै कि मानी लें अमर कें मंडली में नै राखै छियै, नै सत्ती बोदिये ओकरा यहाँ आवें दै छै, तें राम के पाठ के करतै। मंगलिया? की गुलगुलियां?” कपिल नें बड़का विपद दिस संकेत करतें, हाथों पर गाल धरी चुप होय गेलें छेलै।

“फिकिर नै करें कपिल, सिद्धिनाथ कें शामिल करी लेना छै। कम नै बूझें, ओकरा। बस उन्नीस-बीस के अन्तर पड़तै, मतरकि रामलीला तें नै रुकतै।” निदान के मुद्रा में सकीचन नें मुड़ी हिलैनें छेलै।

“सिधियाँ राम रों पाठ करतै, ही, ही, ही, ही....” कपिल कें जना गुदगुदी लगी गेलें रहें, “ई तें यहें भेलौ, कि जन्मे सें भुसगोल साधुनाथ सें संस्कृत-पाठ करैवों। हा, हा, हा, हा,”

सिद्धिनाथ साधुनाथ के बड़का भाय छेकै, जों साधुनाथ केकरो माल पचैयो कें साधुवे बनलें रहला में माहिर छै, तें सिद्धिनाथ कें केकरौ उल्लू बनाय में सिद्धि हासिल छै। पता नै, ई नाम के धरनें छेलै। ओकरों माय-बाबू सें पूछला पर यहें पता चललै कि दोनों के नाम चमरू, जमरू छेलै। जामों बच्चा छेकै, बस मिनिट के अन्तर लैकें जनमलें छेलै दोनो भाय। रंग-रूप सें दोनो के एक्के रंग-रूप, बोली-चाली में जरियो टा फरक नै। यही सें गाँव में कोय सिद्धि कें बुलावै, तें साधुवे जाय कें काम कराय आवै,

लोगें समझे सिद्धिये ऐलों छै, होने कें जे साधू कें बोलावें आरो साधू घरों में नै रहें, तें सिद्धिये श्राद्ध आरनी के काम कराय आवै छेलै। ई एक्के रंग-रूप के कारणे माय-बापों कें कभी काल परेशानियो होय जाय छेलै, यही सें माय-बाबू के कहला पर सिद्धि कमीजो के भीतर कारों गंजी पहनना शुरू करी देलें छेलै, जे बात खाली घरे भरी कें मालूम छेलै। घरों के बाहर तें हवौ कें मालूम नै छै।

अमरजीत गाँव में सबसें बेसी जों केकरौ सें चिट्ठे छेलै, तें सिद्धिनाथ आरो साधुनाथ सें। जों कन्हौं दोनों कें वें देखी लै, तें आपनों बनैलों कविता ई रं दुहरावें लागै कि जेना इस्कूली के पाठ सिहारतें रहें।

हेना कें तें सिद्धि आरो साधु भी संस्कृत-पाठ करै छै, मतरकि ओतने टा, जतना ओकरा दोनों कें ओकरे बाबू सिखैनें छेलै, ओकरा सें एक शब्द आगू बोलै के कोय सवाले नै छेलै। फेनु जे बोलै छेलै, ओकरों मानै भी नै जानै छेलै। ई तें सिखायवाला के दोष छेलै कि ओकरों अर्थ नै बतैलें छेलै। हिन्नें अमरजीत गाँव भरी में सब में ज्यादा पढ़लों-लिखलों गिनलों जाय छेलै। जेकरों बापे खुद संस्कृत के मास्टर, भला ओकरों बेटा केना नै संस्कृत बोलतियै, मंडन मिश्र के तें सुगवो संस्कृत बोलै छेलै। से आपनों विद्या के बलों पर अमरजीत नें संस्कृत के एक श्लोक में हेर-फेर करी कें एक नया श्लोक बनाय लेलें छेलै आरो जहाँ सिद्धि सार्थे साधु कें देखै कि बोलना शुरू करी दै,

सिद्धि साध्ये सध्वामस्त
मधुवा चधुजटे
तालापुलेन गृहं अस्ति
हरमुनियम जानसि कला

ई श्लोक सुनि, सिद्धि आरो साधु कें कुछ-कुछ हेनों बुझावै कि ई कविता हुँ-नें-हुँ ओकरे लेली अमर नें बनैलें छै, से एक दिन दोनो पंचपुरा इस्कूल पहुँची गेलों छेलै आरो कें हू-ब-हू श्लोक गन्हौरी गुरुजी कें सुनाय कें पूछलें छेलै, “की हेनों श्लोक संस्कृत के किताब में छै, गुरुजी?” आरो गन्हौरी गुरुजी के है कहला पर कि पंचतंत्र के संस्कृत किताब यहेँ श्लोक से शुरू होय छै, दोनों निचिन्त होय गेलों छेलै। दरअस्त गुरुजी नें श्लोक के एकाधे शब्द सुनी कें आपनों निर्णय दै देलें छेलै। बाकी सुनै कें हुनी जरूरते

नै बुझलें छेलै, नै तें हुनियो मामला के खोज करतियै। ऊ दिनों सें अमरजीत के श्लोक के कोय असर दोनों भाय पर नै हुऐ, भले अमर श्लोक पढ़तें-पढ़तें दोनों भाय के बगले सें गुजरी जाव।

आय वहें सिद्धि कें, नाटक में, राम के पाठ दै के बात सोचलें जाय रहलें छेलै। सिद्धि कें राम के पाठ दै में एक फायदा तें सबकें ई बुझाय रहलें छेलै कि ओकरो मुँहो-देहो पर कोय मुर्दाशंख लगाय के जरूरत नै छेलै, नै कोय रंग-रोगन चढ़ाय के जरूरत। ओकरो देहे के रंगे छेलै राम हेनो। मतुर सबसे बड़ो दिक्कत ई छेलै कि कोय बात के आगू ऊ बिना छिनरी सांय लगैनें बोलै नै पारै। मंचो पर राम जबें परशुराम कें छिनरी सांय कहतै, तें परशुरामो की आपनों कुल्हाड़ी रोकें पारतै? वहू में जबें अजनसिया परशुराम के पाठ करी रहलें छै, अच्छे बातों पर मार करै वास्तें सद्धोखिन तैयार। नै, सिद्धि कें राम के पाठ नै देलें जावें सकै छै। बहुत मंथन बादे ई तय होलै कि साधुनाथ सें ही राम के अभिनय करैलें जाय।

यहू तय होलै कि सिद्धि विश्वामित्र बनतै आरो जेन्हें छिनरी सांय बोलै पर होतै, तखनिये दूसरो पात्र आपनों गोड़ों के बुढ़वा औंगुरी सें ओकरो कोय अंगुरी दबाय देतै, जैसे सिद्धि कें आपनों गलती बुझाय जाय। आरो वहा होलै। नाटक के रिहर्सल शुरू भै गेलें छेलै, नदूदी कछारी पर खड़ा झबरलें बोर गाछी नीचें।

अमरजीत सें कुछुवो बात छिपलें नै छेलै। छिपलें की रहतियै, सिद्धि आरो अजनसिया तें आपनों संवाद एतें जोरो-जोरो सें बोलै कि तहखाना में बैठलें आदमियो कें सुनाय पड़ें, आरो ठोठों फाड़ी कें ई रं संवाद बोलै के पीछू एक्के मकसद रहै—अमरजीत कें ई बतैबो कि देख, तोरो बिनाहो नाटक हुएँ पारें। मुर्गा नै बोलतै, तें विहान नै होतै की?

आरो हिन्ने आपनों खटिया पर पड़लें-पड़लें अमरजीत फदकतें रहै, भला राम हेन्है कें बोलै छै, कतें रुक्खों, कतें उस्सट वचन। केला गाछी में टिकोला झूलतें रहें, आरो अजनसिया के ठोठों देखें, जेना बरसाती में सौढ़ा गरजतें रहें। कौआ कें भण्डारी बनैतै, तें पत्ता पर गूए-गू नै होतै, तें होतै की? आरो अमरजीत भीतरे-भीतर ई सोची कें कि नाटक की रं होयवाला छै, रही-रही खिलखिलावें लागै छेलै।

जे रहें, रिहर्सल पूरा होय गेलें छेलै। सौंसे गाँव नाटक देखै लेली

बेमत्त, जना बौसी के संकराती में जाय लें सौंसे इलाकाहै उथल-पुथल। सत्ती के कड़ा पहरा छेलै कि अमर नाटक देखै लें नै जैतै, उतरवारी कोठरी में आवी कें झाँकलकै; नै, ऊ तें होन्है करवट मारी सुतलों छै, जेना सुतलों छेलै। अमरजीत कें मालूम छेलै कि एकरों बाद माय आवैवाली नै छै, से ऊ हौले-हौले उठलै आरो पूवारी दीवारी सें निकललौ बाँसों पर गोड़ राखी, परछत्ती पार करी गेलै; पीछू छौरों के ढेर छेलै, से कूदै सें कोय आवाजे नै होयवाला छेलै।

हों, कूदै में देह-हाथ राख में लपटाय गेलों छेलै, मतर ओकरों फिकिर करले बिना ऊ सीधे नद्दी दिस सोझियाय गेलै। सब तें निकली गेलों छेलै, चेतु मिसिर के बैलगाड़िये बची गेलों छेलै, जे हिन्नें लटकलौ होलौ छेलै। असल में बैलगाड़ी के एक बैल केन्हों कें बालू में गिरी पड़लौ छेलै, आरो गिरलै तें उठै के नामे नै लै छेलै। आबें चेतु के नजर अमरजीत पर पड़लै, तें आरो सब बात सोचवों छोड़ी कें सीधे बोली पड़लै, “अरे अमरू, तोहें यहाँ, तोरों माय तें नाटक में जाय लें मना करलें छेलौ। अच्छा, इच्छे छौ, तें चल एक काम करें, गाड़ी सें उतरी कें सब तें चल्लौ गेलै, बाकी बची ऐलौ छी हम्मै, आरो नाटक देखै लें हमरौ तें जान्है छै। एक काम करें, जबें ई बैलें धोखाहै दै देलकै, तें तोहीं जुआ उठाय ले। खींचवें तोहें थोड़े, खींचतै तें ई जुआ सें लागलौ बैलें, तोहें खाली साहलें रखियें, आरो तोहें निचिंत रहें, हम्मै ई बात तोरों माय सें कभियो नै कहभौ कि तोहें नाटक देखै लें भागी कें ऐलौ छें, जे तोरों धराने बताय रहलौ छौ।”

चेतु मिसिरें भले नै बतैलें रहें, मतरकि यहू सब बात दबैला सें दबैवाला छेलै? छिपलै, तें बस दुए दिन। तेसरे दिन तें बात खुली गेलै, जखनी नीनों में अमरजीतें कुहरवों शुरू करलें छेलै। सत्ती कें शुरू-शुरू में तें कुछ समझै में नै ऐलै, मतर वें अमर कें बिना जगैनें ओकरों देह-हाथ पर नजर दौड़ाना शुरू करलकै, कमीज उधारी कें छाती-गर्दन देखलकै, काहीं कोय चोट-घांट तें नै लागलौ छै। काँही कोय-चोट के निशानो नै छेलै, तें कुरहै छै केन्हें? वें फेनु सें कमीज उठाय कें पीठ देखलकै, तें ओकरों छाती फटी कें रही गेलै, पीठी पर बित्ता भरी के चमड़ी फूली कें कारों भै गेलों छेलै, जेना चमड़ी के भीतर कोय खरीस साँप के बच्चा घुसी गेलों रहें।

वें पासी पर सें गोड़ उतारलें छेलै आरो अँचरा कें दोनो तरत्थी सें

समेटी आपनों स्वामी के तस्वीर देखते एतन्हें भर बोललै, “आरो कते परीक्खा लैले चाहे छौ, स्वामी ! एतन्हौ तें सोचौ, जनानी जात छेकै, विपत्ति एक सीमाहै तक सहें पारें, जों परीक्खाहै लैले चाहे छौ, तें पुरखे नाँखी कोनो पत्थर के करी दा, आरो की कहियौं।” ऐतना कही ऊ झट सना हुड़का हटाय कें एंगनों आवी गेलै। एंगनों के टटिया हटैलकै, आरो भैंसुर के द्वारी पर आवी गेलै, माथा पर घूँघट लेलें। जौत के नाम लैकें पुकारलकै, “दुनु, बाहर निकलियो।”

रात के बारह बजते होतै, ओकरा सें कम नै, घोर भरी एक्के दाफी हड़बड़ाय कें उठी गेलै। सब बाहर निकललै, तें सत्ती सीधे आपनों ऐंगना चली पड़लै। सब बुझी गेलै, जरूर कोय बात होय गेलों छै। ऊ आपनों कोठरी पहुँचतियै, एकरों पहिले गोतनी, जयधि, जौत, सब ऊ कोठरी दिस दौड़ी पड़लें छेलै, कोय भारी अनिष्ट के आशंका सें धड़धड़ैलें। अमरजीत अभियो वहा रं खटिया पर कुर्रही रहलें छेलै, तब तांय आशु बाबुओ आवी गेलें छेलै। कोठरी में हुनकों दुकतें सब हटी गेलै, सत्ती तें बाहरे मोखा लगी खाड़ों रहलें, एकदम पत्थल बनलें। अमरजीत के पीठ होन्हे उघारों छेलै, जेना वें छोड़ी कें गेलें छेलै, से सबसे पहले आशु बाबू के वहीं ठां नजर पड़लै। अनुभवी आँख, जानै में कटियो टा देर नै लागलै, ई तें चाबुक के मार के चेन्हों छेकै—के मारलें होतै, कैन्हें मारलें होतै, ई सब सोचले बिना, हुनी बाहर निकललै आरो ऐंगना में रखलें लालटेन के रास उसकाय कें नद्दी दिस के झबरलें झाड़ी ओर चली देलकै, बिना एकरों खयाल करलहैं, कि रातकों पहलें पहर बीती चुकलें छै।

ऐलै, तें बायां हाथ में लालटेन आरो दायां में कुछ लौत-पतार लटकी रहलें छेलै, जेकरै सें हुनी घावों पर रस चुवैतें रहलै, आरो फेनु साफ कपड़ा के पट्टी बनाय घावों सें बान्ही देलें छेलै। बाहर निकलें लागलै, ते बोललै, “घबड़ाय के बात नै छै, नींद तें कुछुवे देरी में आवी जैतै आरो भोरे सें घावो चोखाबें लागतै।”

आशु बाबू ई बात ओतने टा तेज आवाज में बोललें छेलै कि बाहर मोखा सें सट्टी कें खाड़ी सत्ती सुनी लें, आरो हुनी कोठरी सें बाहर निकली, लालटेन ऐंगनै में राखलें छेलै; फेनु टटिया सटाय कें आपनों ऐंगनों आवी गेलै, अपनी कनियैनी कें वहीं रहै के इशारा करतें। आशु बाबू के बड़की

बेटी प्रातियो रुकी गेलों छेलै ।

कुहराम तें पहिलें नै होलों छेलै, नै आशु बाबू के निकलला के बादे होलै, अमरजीत के कुहरवों कुछ कम होलों छेलै, तें एकेक करी कें आरो-आरो भी कोठरी सें बाहर निकली ऐलों छेलै, बस बची गेलों छेलै, सत्ती, जे आपनों दोनों ठोरी कें एक दूसरा सें कसले खटिया के पासी पर बैठी गेलों छेलै, दोनों गोड़ कें धरतिये सें टिकैलें ।

अमरजीत कें कखनी नीन आवी गेलै, ई तें सत्तियो कें नै पता चललै, आरो नै पता चललै, तें एकरों कारण छेलै; ऊ एक बहुत बड़ों निर्णय लैमें डुबलों होलों छेलै, आपनों छाती पर चलतें जाँतों राखी कें । एक हेनों निर्णय, जे ओकरा अमर सें अलग करी देतियै, मतर कोय किसिम सें आपनों मनों कें डिगै दे लें ऊ तैयार नै छेलै ।

वै फेनु सें ऊ तस्वीर दिस देखलकै, जे ठीक पनरों साल पहिलें अमर कें सत्ती के गोदी में छोड़ी कें आपनों देह छोड़ी देलें छेलै । ओकरा लागलै, जेना शीशा के भीतर के फोटो ओकरा सें बात करतें रहें, “घबड़ाय छौ केन्हें, अमर के माय, ई बात तें तहूँ जानै छौ कि हमरों बीहा यही शरतों पर होलों छेलै कि ससुर जीं हमरो पढ़ाय गछलें छेलै, यानी जहाँ तक हमरों इच्छा होतै, हुनी वहाँ तक पढ़ैतें । मतुर होलै की? अनठियावों शुरू करी देलकै । वहाँ पढ़ाय लेली हमरा तीन दिन आमी गाछी पर बैठी कें हुनका सिनी कें परेशान करैलें पड़लै, जबें तोरों लालदां पढ़ाय गछलकौं, तें नीचू उतरलौं छेलियै । छोड़ों आबें ऊ सब बातों कें, की याद करवों । आबें तें तोरों तीनो भाय मास्टर छौं । अमरजीत कें कोय भाय के यहाँ छोड़ी आवों । हमरा नै पढ़ैलकौं, तें नै, भैगने कें पढ़ाय दौ, गछलौं बात पूरा समझवै ।”

सत्ती के दोनों ठोर हठासिये ढील पड़ी गेलों छेलै । वैं तस्वीर कें बड़ी निरियासी कें देखलें छेलै, आरो अंचरा दोनों तरथी बीच राखी कें मूड़ी नवाय लेलें छेलै । रात केना कें कबें कटी गेलों छेलै, ओकरा कुछ पतो नै चललै; पता चललै तबें, जबें आपनों ऐंगना में आशु बाबू के खकसवों सुनलकै । सत्ती लम्बा घोघों खिंचलकै, आरो सीधे बाहर निकली ऐलै ।

बाहर ऐलै, तें ओकरा लागलै; जना ओकरों मनों के सब भार बाहर आवी गेलों रहें, शायत आशु बाबू कें देखी कें । आरो जबें-जबें हुनका देखी कें सत्ती कें हेनों कुछ बुझावै, तें कखनू-नै-कखनू ऊ पूजाघरों में देर-देर तांय

कपसतें रहै, फूलमती के बाबू के याद करी। बस एक्के वहा बात घुरी-फिरी के बोलते चल्लो जाय, “फूल के बाबू आय तोहें होतियौ, तें ई पहाड़ नाँखि दुख हमरा उठाय लें लागतियै? गोदी में तीन-तीन बच्चा। तीनों हमरों रहत्यों टूर। जे बच्चा सिनी के माथों से बाबू के हाथ उठी जाय, तें फेनु बचवे करलै की ! तोहें देखै नैं छौ, कि दू शाम के कौर जुटाय लेली, हमरा की-की नै करै लें लागी रहलौ छै। स्वाति से सत्ती होय के मतलब नै समझै छौ की। बस केकरो दुआरी पर नौड़पनों नै करी रहलौ छियै, तोरों इज्जत, मान-प्रतिष्ठा के याद करी। कुटौनों-पिसोनों करन्है छेलै, नै तें तीन-तीन बच्चा के मुँहों में दाना कहाँ से राखतियै, हम्मों तें पानियो पीवी के उपास करी लेतियै, मतर फूल हेनो बुतरु सिनी के उपासे केना करैतियै। तोहीं बोलों, जो हबीब के बाबू से बीड़ी बनाय के हुनर नै सिखतियै, तें आय ई घरों में की कलरव सुनाय पड़तियै? दादाहौ आखिर मुँह केन्हें चाँपी के रही गेलै, हुनियो जानी रहलौ छेलै, एकरों सिवा आरो चाराहै की छै। टोलावाला के कत्तें मुँह सीलें फुरतियै। दस-पाँच रोज कुकआरों चलतै, फेनु अपने सब शांत होय जैतै, आरो वहा होलै। उरेफ बोलवैय्या हमरों पच्छों में बोलें लागलै, ‘कोनो मसूद्दी जी घोर दुकी के बीड़ी बनाय के हुनर थोड़े सिखाय छै; दुआरी पर बैठीके पत्ता काटे के, बीड़ी में पत्ती भरै के तरीका, सूतों लपेटे के हुनर, सब तें बाहरे-बाहरे से बताय छै, आरो अमरजीत के माय ऐंगनाहै से टटिया पीछू बैठी के देखतें रहै छै, यैमें दोषे की छै।’ सोचै छियै, जो हबीब के बाबू नै होतियै, तें सब बच्चा बिलटी जैतियै। घरों में बीड़ी बनाना शुरू करलियै, तें दू शाम के कौर के ठिकानों बनी गेलै। कहै छै नी, पैसा आवै छै, तें जीयै के हवो बढै छै। सोचलियै, घरों में आवी के बीड़ी कत्तें आदमी लै जैतै। टोला-परोस से तें हेन्है के लोग आवै आरो एक बीड़ी सुलगाय के चली दै। आबें एक बीड़ी के पैसो की मांगतियै लोगों से; मुँहे नै खुलै। ऊ तें हबीब के बाबुएं बतैलें छेलै, ‘बोदी हेना के होथों की? बलजीत आरो अमरजीत के हटियावाला रास्ता पर बिहनकी बेरा भेजी देलें करों, दुपहरियौ जैतै, तें कोय बात नै, नीमी गाछी के नीचे बोरा बिछाय के बैठी रहतै, आरो वहीं पर दस मुट्ठा बीड़ियो रहतै। देखियौ, जिनगी बितैवों कत्तें आसान हुएँ लागथों। आरो हम्मों वही करलें छेलियै। आय तें पैसा हाथों में छौं, फूल के बीहो के बात सोचै छियों, तें वही बल्लों पर। हबीब के बाबू के लम्बा औरदा हुएँ,

तोरोँ तीनों बच्चा के शादिये-बीहा नै, सब्भे के भरलौं-भरलौं गोदो देखी केँ जाय ।”

नै जानै कत्ते-कत्ते बात सोचतहैं चल्लौं गेलौं छेलै, सत्ती । ध्यान टुटलै तबे—जबे आशु बाबू के खकसै के आवाज बड़का ऐंगन में होलै । ऊ झट सना देह-हाथ संभालतें हुँ टाढ़ी भै गेलै । खड़ाऊँ के चट्-चट् के आवाजे साथे हुनी ऐंगना में, फेनु ऊ कोठरी में गेलौं छेलै, जैमें अमरजीत छेलै । देखलकै, अमर उठी केँ बैठी चुकलौं छेलै, फूलमती घाव पर जड़ी-बूटी सेँ बनैलौं लेप केँ धीरेँ-धीरेँ अमरजीत के पीठी पर ससारी रहलौं छेलै । सत्ती चाहतौं कुछ नै पूछलकै, कि ई सब केना होलै, जेना वै सब कुछ जानी लेलकै कोय अन्तरयामी रं । आशुओ बाबू केकरौ सेँ बेसी कुछ नै पूछलें छेलै, खाली एतनै कहलकै, “आबेँ दरद केन्हौं छौ बेटा?” आरो जबेँ अमर नेँ दरद नै होय के बात होले सेँ बतैलकै, तें सत्ती केँ लागलै; जेना ओकरोँ सबटा दरद हठासिये फुर होय गेलौं छेलै ।

(४)

ई घटना केँ लैकेँ सत्ती जत्तहै मौन होलौं गेलौं छेलै, ओतहैं टोला सिनी में कानाफूसी बढलौं गेलौं छेलै । आखिर के मारलें होतै, हेनौं क्रूर बनी केँ ? केकरोँ मौन हेनौं कसाय हुँ पारेँ ? आचरज तें ई छेलै कि आशु बाबुओ कुछ जानै के कोशिश नै करी रहलौं छेलै । वृजनारायण घोष के बाते तबेँ कहाँ उठै छै । हेनौं बात तें नहिये होतै कि वृज बाबू केँ एकरौ बारे में कुछ मालूमे नै होतै, एत्तेँ बड़ौं बात होय गेलै, कोय छोटौं-मोटौं बात छेकै की ? मतुर आशु दादा केन्हें चुप छै ! शायत हुनका विश्वास रहें कि एक-नै-एक दिन पाप आपनौं मुँह आपने खोली केँ बोलतै ।

आरो होवो करलै वही । चेतु मिसिर केँ आय केँ दिनों सेँ यही लागी रहलौं छेलै, कि आशु बाबू साथेँ बड़की बोदी केँ सब मालूम होय चुकलौं छै, खाली हमरा सेँ बोली नै रहलौं छै । वै मनेमन सोचलकै, “जबेँ जानिये लेलें

छै, तें छिपैलै सें की? हेना कें तें हम्में आरो घुटतें रहवों। एक दाफी बोली कें ई बोझों सें फारिगे होवों अच्छा, फेनु हम्में जानी कें थोड़े मारलें छियै। जुआ में बैल नै, अमरजीत छै, एकरों चेतै नै रहलै, बस एतन्है टा तें भूल होलों छै, हमरा सें।”

आरो एक दिन जखनी आशु बाबू पंचपुरा हटिया दिस जाय रहलें छेलै, चेतु पिछुएतें-पिछुएतें ऐलै आरो बाते-बाते में सब खोली कें बताय देलकै, ई कहतें कि, “आबें बड़की बोदी जे सजा दौ, सब स्वीकार।”

आशु बाबू सब सुनी लेलें छेलै, एकदम चुपचाप, मतर बोललों छेलै कुछुओ नै। हटिया आवै के पहले हुनी एक गल्ली दिस मुड़ी गेलों छेलै; चेतु कें वही ठां छोड़ी कें। चेतु कें लागलै, ओकरों अपराध कें माफी नै मिललै, अच्छा होतै कि सत्ती बोदी कें सब सुनाय दियै, आरो यही सोची कें ऊ झब-झब पुबारी टोला दिस बड़ें लागलै, मतर बीच में डेग कुछु हौल्कों करी लेलकै, ई सोची कें कि जबें घरों के मुखिया कें कहिये देलियै, तबें आबें आगू बात बड़ैला सें की फायदा। गड़ैया के पानी ज्यादा साफ करै के मतलबे छेकै, पानी कें आरो कदोड़ करबों। अच्छा होतै कि सत्ती बोदी वैद्यदा के मारफते जानी लै, फेनु जे कहना होतै, कहलै; गुम्मी साधी कें सुनी लेना छै, आरो की।

कि तखनिये चेतु के मनो में एकटा नया शंका भेड़ियाय उठलै, “हुएँ सकै छै, वैद्यदा सत्ती बोदी कें नहियो कहें। भीतरिया तें भेद-दुराव छेवै नी करै। भेद की चुल्हा-चौका कें लैकें थोड़े छै, ऊ तें एक घंटा में सलटी जायवाला छेकै। ई तें अलगे बात छेकै, जे हड़िया-पतलिये नै, एक्के ऐंगना में दू-दू घोर करी देलें छै, बस सवा बीघा जमीन के चलतें। वैद्यदां ऊ जमीनों पर आपनों दाँत गड़ैलें होलों छै, आरो हिन्ने सत्ती बोदियो। आबें सही-सही केकरों हक बनै छै, ई के बतावें पारें। मतर हक-हूक सें अलग हटी कें देखलों जाय, तें वैद्यदा कें की चाहियो ! अरे, आबें फूलदा तें नहिये छै, बची गेली बेचारी विधवा बोदी। मानी लेलियै, ई जमीन फूलदां आपनों छोटों भाय वैद्यदा के नामे सें खरीदलें रहें, तखनको बात अलग छेलै, आरो इखनको बात अलग छै। तखनी लालदा इस्कूली के मास्टर छेलै, जेहे टाका आवै छेलै, आवै तें छेलै, आबें तें नैकी बोदी के पास कुछुओ नै। एकटा ऐंगनों आरो दू कोठरी, यैमें पछियारी कोठरी तें जमीन्दारों के भुसखारी

बराबर। वहाँ में कोन-जमाना के बचलों खुचलों बांस-कोरों एत्तें ठूसलों कि एक खटिया बिछाय मान जग्घों मुश्किल से बने पारें। आबें जों सत्ती बोदी सवा बीघा जमीन पर दावा करवे करै छै, तें अनुचिते की छै। भला वैद्यदां दाँत कथी लें गड़लें होलों छै। मानलियै कि वैद्य केँ खाय-पीयै के कोय आरो जरिया नै छै, एक वैदगिरी छोड़ी केँ; मतुर आपनों परिवार पर छाया नाँखी तें छै नी, सत्ती बोदी पर तें कुछुयो नै; गाछी के तें की, लत्तियो के नै। हुनका तें देखिये केँ करैजों मूँ तक आवी जाय छै, मतुर तभियो देखों, ई जनानी के हियाव, भादो के बोहों के बीचों सेँ फाड़तें भांसलों जाय रहलों छै। नै, हमरा सेँ बड़का गलती भै गेलै कि अमर केँ जुआ सेँ लगाय देलियै। अकीलें काम नै करलकै। मतुर आबें जे होय गेलै, से होय गेलै। हुनकोँ गोड़ पकड़ी लेवै। हरजे की छै, अरे बोदियो तें मैय्ये दाखिल नी, फेनु बड़ी तें छेवे करै। माय कभी बेटा केँ शापित करै छै! सब बात बताय देवै, तें सब पाप साफ।” यही सोची केँ चेतु आपनों डेग फेनु तेज करैवाला ही छेलै कि ओकरोँ नजर ओकरे दिस ऐतें सत्ती पर पड़ी गेलै। अभी ऊ कुछ बोलतियै कि एकरों पहिलें सत्तिये टोकी देलकै, “की दियोर, गाँव सेँ बाहर छेलौ की? नजर नै आवै छेलौ। कोय कामों सेँ बाँका आकि भागलपुर गेलों होलों छेल्लौ की?”

चेतुँ एक दाफी ओकरोँ चेहरा केँ बड़ी गौर सेँ देखलकै, कहीं मनोँ में कोय भाव छुपाय केँ आरो बात तें नै करी रहलों छै, आरो ई देखी कि कहीं कोय दूसरोँ बात नै छेलै, निश्चिन्त होय बोललै, “नै, नै बोदी, घरे पर छेलियै। मॉन-मिजाज ठीक नै बुझावै छेलै, देह-हाथ छकछकैलों हेनोँ लागै, बस यही लें बाहर नै निकलै छेलियै।

“अरे, तें केकरोँ हाथ खबर करी देतियौ।”

“नै करलियै, तनी-मनी बातों वास्तें वैद्य केँ की परेशान करतियै।”

“तें, हिन्नें कन्नें? कोय काम छौँ की?”

“बस, तोरे सेँ मिलै वास्तें हिन्नें आवी गेलों छेलियै।”

“से की? बोलों।”

“बोदी, आबें अमर के पीठी परकोँ घाव? असल में...” अभी चेतु कुछ आगू आरो बोलतियै कि सत्तीं पाँचो अंगुली के इशारा सेँ मना करतें कहलकै, “आबें ई सब बातों केँ उठैवों कोय मतलबे नै राखै छै, दियोर। कोय केकरो बारे में बतैवो करतै, तें हम्में विश्वास नै करें पारों। जों हमरा

शांत करै वास्तें यहू कहतै, कि काम हम्मी करलें छियै, तहियो नै! हम्मैं जानै छियै, एतें बड़ों पाप गाँव-टोला के लोगें तें की, आरो गाँव भरी के लोगो नै करें पारें। कुछु हमरों भागे के दोख होतै। दोख नै होतियै, तें अमर के बाबू ई दुनियाँ में हमरा असकल्लें छोड़ी कें भगवानो लुग जाय पहुँचतियै, दियोर। जों तोहें केकरो नाम बतैय्ये दैलें ऐलों छै, तें एकरा सें की होतै, जिनगी भर वास्तें ऊ आदमी सें घृणा पालतें रहवै, आरो ई घृणा-वैर सें हासिले की होयवाला छै।” फेनु कटी टा मुस्कैतें वैं बातों कें बदलतें कहलें छेलै, “ठिक्के, जॉर होथौं, चेहरा कुम्हलैलौं हेनौं लागै छै...अच्छा चलियौं, दियोर; बलजीत अकेले बाँधों पर गेलों छै, जों बीड़ी ओराय गेलों रहै, यही लें पाँच-छों मुट्ठा आरो पहुँचाय दियै।”

“कैन्हें? अमरजीत?”

“ओकरा तें, कल्ले तगेपुर पहुँचाय ऐलियौं। यहाँ रहतियै, तें मार करतियै, मार खैतियै, आरो की। मंझला मामा कन रहतै, तें आरो कुछ हुएँ-नै-हुएँ, पढ़ी-लिखी तें लेतै जरुरे। से कल विहानिये कामेसर दियोर सें कहैलियै, बैलगाड़ी तैयार करों आरो हमरा जगदीशपुर लै चलौं। कटियो टा ना-नुकूर नै करलकै, दियोर। दुपहरिया तांय वहाँ पहुँचलियै, अमर कें फूल दा कन छोड़लियै, आरो बेरा डुबतें-डुबतें गाँव आवी गेलियौं। अच्छा, फुर्सत सें आरो बात करवौं, इखनी चलै छियौ, दियोर। बेर होलौं जाय रहलौं छै, वहू सोचतें होतै, माय केन्हें नी ऐली छै।” आरो सत्ती खेत के एकपैरिया रास्ता पकड़ी कें बाँधों पर चढ़ी ऐलों छेलै, फेनु झब-झब बौर गाछ तांय पहुँची बाँधों सें नीचे उतरी ऐलों छेलै।

चेतु के आँख सत्ती कें तब तांय पिछुऐतें रहतै, जब तांय कि ऊ आँख सें ओझल नै होय गेलों छेलै। ओकरो मॉन होय रहलौं छेलै, कि ऊ भागलौं-भागलौं ओकरो लुग पहुँचै आरो गोड़ पकड़ी, भोक्कार पारी कें कानी पड़ै।

जबें चेतु आपनों घोर दिस घुमलै, तें ठिक्के ओकरो देह-हाथ जॉर सें तपें लागलौं छेलै।

(५)

‘एकठो अमरजीत की गामों से निकललौं छै, सौंसे पाँच घरों के कैथटोलिये हवांख लागै छै।’ सिद्धीं बायां तरहत्थी के खैनी के चुटकी से चाँपते कहलकै, आरो निचलका ठोरों के आगू बढ़ैते ओकरो जड़ी में राखी लेलकै।

‘की बोललैं, कैथ-टोली।’ बदरी के ई बात अजीबे लगै छै, कि पाँच घरों से भला टोलों केना बनें पारें, मतर ई शंका के दबैते एतन्है बोललै, ‘घोर कहै नी, तीन गोतिया, पाँच घोर बनाय लै, तें टोलों केना बनी जैते। टोला के मतलब छेकै, कम-से-कम दस घोर।’

‘यहा नी बूझैं रे, बदरी, की रं चलती छेलै, अमर के परबाबा केरों। जखनी नदिया से आवी के यहाँ बसी गेलै, तहिये से ई कैथटोली कहावै छै, आदमी की, सौ-पचास? बस दस-पाँच ठो। वहू की यहाँ रहै हुनी? कभी बाँका, कभियो कहूँ, तें कभियो कहूँ। हमरों बाबा बोले छेलै कि हुनी बड़ी दबदबावाला छेलै। चम्पा नगर के महाशय ड्योढ़ी से सीधे संबंध छेलै, ई कहैं कि हुनिये हिनका यहाँ मालगुजारी उगाहै लें राखलें छेलै। ई सब महाशय जी के इलाकाहै में पड़े छेलै, जमीन-जायदाद अफरात छेलै। जे जहाँ बसी गेलों, तें बसी गेलों। के पूछे छेलै, जमीनों के। है नी कहैं कि पकड़ी-पकड़ी के बसाय छेलै। हिनी जबें यहाँ ऐलें छेलै, तें एक घोर नै छेलै। कोय यहाँ बसे लें नै चाहै छेलै, वहू में जहाँ विरिज काका हेनो आदमी बसें। कहै छै नी कि कैथों के मरलों हड्डी विसाय छै। कखनी कोन फेर में फाँसी दें।’ बदरी एक अंगुरी से निचलका ठोरी के दाबते जोरों से हाँसी पड़लै कि खैनी ठो बाहर नै छिलकी आवें।

‘आरो बसलै, तें हमरोंसिनी के पूर्वज के टोला में, जेकरो डरों से अच्छा-अच्छा ब्राह्मणों काँपै छै।’ बदरी ठोर बन्द करलें हाँसलै।

‘उल्टाहै सोचलैं, बदरी। एकरा में महापात्र के कोय रौब-दाव नै दिखै छै, एकरा से तें घोषे परिवार के महानता दिखै छै। जे महापात्र के बारे में केन्हों-केन्हों बात अभियो तांय प्रचलित छै, हुनी आपनों घरों के दक्खिन में नै, पश्चिम में जमीन दै के बसैलकै, आरो आपनों घरों के ऐंगन तांय हमरा सिनी वास्तें खोली देलें छेलै। बदरी, तोरे नी गोतिया छेकौ, विसुआ;

साकलदीपी ब्राह्मण बनी कें रही रहलौं छेलै, भागलपुर के छात्रावास में। आरो जबें पता चललै कि साकलदीपी नै, महापात्र छेकै, तें की-की नै दुर्दशा...।”

“अरे, ई तें तीस-चालीस बछर के बात भै गेलै। आय ई सब थोड़े होय छै?”

“अरे होय कें तें गामों में हिन्दु-मुसलमान के घोर सटले-सटले होय छै, तें की मनो ठो की? दूर के बात छोड़ी दें, सत्ती बोदी मसूद्दी काका के यहाँ जनानी होय कें जाय छेलै, तें की मसूद्दी का हिन्दू बनी गेलै कि बोदिये मियैन होय गेलै। होनै कें ब्राह्मण-ब्राह्मण में भेद बुझें। पकड़ी कें कोय राखलें छै की, मतुर है बात केन्हौं कें नै भूलें पारै छियै कि श्राद्धी के बाद जबें पूजा-पाठ कराय कें विसुनवां द्वारी सें उठलौं छेलियै, तें विसुनवां एकटा कनखौं उठाय कें हमरौं दिस करतें गिराय देलें छेलै। वैं की समझै छेलै, हम्मैं ई बात नै जानी रहलौं छेलियै। कोन्हराय कें तहीं सें तें देखी लेलें छेलियै।”

“धुर, छोड़ें ई सब बातों कें।”

“छुटले छै, कौने पकड़ी कें रखलें छै। मतर कनकटलौं धैलौं आगिन पर चढ़ले रहै के बात....।”

“माथों लें धरलें छै। ऊ सब बात कभी सोचलें छेलें कि सत्ती बोदी के घरों में बिना रोक-टोक घुसना छै आरो बदरी हुनके बिछौना पर टाँग पसारी कें सुती रहतै, आय छोटका ऐंगन के बिछौना पर की रं पहुनों नाँखी जमी जाय छैं। की रं भनसो घरों में ढुकी कें खाना परोसी लै छै। देख, आदमी बानर के विकास छेकै, तें की आदमी दोनो हाथों सें अभियो चूतड़ के नीचे आपनों नगेट्टी खोजलें फिरै छै। खोजवो करतै, तें मिलतै की? बुड़बक, ऊपर उठी गेलों छैं, तें सरंग के बात करें। की लै दै कें नगेठी पकड़ी लै छैं।

“अरे बुड़बक, हौ बुच्चों बाभन, है बुच्चों बाभन है सब कथी लें घोकरतें रहै छैं। की समझै छैं, कि है सब कहला सें नौकरी में आरक्षण मिली जैन्हौं की। आखिर तखनी बाभने घोषित होय जैवे, भले आरो बाभन तोरो बाभन बूझौ-नै-बूझौ। की बूझै छैं, सब कैथो की एक्के समान होय छै। वाहूँ सीढ़ी बनलौं छै। एक, दू, तीन, चार। बलजीत के बड़का बाबू अपना कें

भले सौकालीन कैथ बतैतें रहें, मतर देशला की बूझै छै, सब्भे कें मालूम छै। आरो जो देखें, तें देशला कोय्यो नै। कोय राजस्थान सें ऐलों, तें कोय मध्यप्रदेश सें, तें कोय बंगाल सें।” ई कही कें माधो दिल खोली कें हॉसी पड़लें छेलै—ही, ही, ही, हा, हा, हा, हा।

“हॉसै छैं माधो आरो तोरों हॉसी कैठां बैठी रहलें छै, हम्मू जानै छियै।” बदरी के आँख कुछ कड़ा होय गेलें छेलै, “अरे भाग मनावें भाग कि यहा सौकालीन कैथ छेकै, जेकरों कारण अइयो ठिठियाय रहलें छैं, नै तें पाँच घोर जेलों के पाँच कोठरी होतियै। बहू बेचारी तें आपने जात के नी छेलै, रे ! हाय, बेचारी के की दोख छेलै। कहिया बीहा होलै, कहिया सांय छोड़ी देलकै, ओकरा ठीक सें मालूमो नै होलै, जुवान होलै, तें के आपनों पाप ओकरी कोखी में छोड़ी देलकै, आरो कखनी कौनें ओकरा जीत्ते जी मारी देलकै, हेकरों पतो नै चललै। रातो-रात नद्दी में लकड़ी सुलगलै आरो दुर्गंध उठलै, तें गाँववाला के मारथों ठनकलें छेलै। पटवारी नदी दिस बढ़लै, तें अधजरले लाश छोड़ी कें सब भागी गेलै। के छेलै जरायवाला, पतो नै चललै, खाली लहाश के पता चललै, बेचारी पुनिया के लहाश, पचीस-तीस बछर सें बेसी के नै होती, बेचारी। तोरहौ याद होतौ, भिहाने बौंसी थाना के पुलिस की रं दनदनैलों पहुँची गेलें छेलै। हौ तें बुद्धिमानी समझें कि लहाश रातोरात खाक होय गेलें छेलै आरो विहाने केना कें लक्ष्मीदा कहाँ सें आवी गेलें छेलै। एक तें मास्टर, दूसरों जे रं अंग्रेजी में बोलें लागलें छेलै कि अंग्रेजी पुलिस के होशे उड़ी गेलै। पुलिस अफसर हाथ मिलैलें छेलै आरो बौंसी लौटी गेलें छेलै। नै तें आय तांय ई गाँव पुनिया के देही में लागलें आगिन में झुलसतें होतियै। आरो सौकालीन कैथों के नामों पर ठिठियाय रहलें छैं। ई संस्कारो रखवे आरो वाभनों कहैवे, भला ई कहीं होलें छै।” वही पर अब तांय चुपचाप बैठलें आरो टुकुर-टुकुर एक दूसरा कें देखतें बल्लो सें नै रहलें गेलै तें कुछ बुदबुदलै आरो फेनु इसपिरिंग लागलें पुतला नांखी झट सें ठाढ़ों होय गेलै, ई कहतें, “चललियौं, तोरा सिनी के जे पुराण पढ़ना छौ, पढ़ें।”

“रुकें, रुकें, बल्लो, ढोढ़वा के काटलें बिक्खे कर्तें? आरो एकरासिनी अमरजीत कुलों के मान-प्रतिष्ठा के बारे में जानवे करै छै कर्तें?” अब तांय चुप कल्लर बोललै, जे सुनी कें आपनों उस्सट आवाजों में माधो नें कल्लर

सें पुछलें छेलै, “कल्लर, एक बात पूछियौ?”

“पूछ, की पूछे लें चाहै छै?” कल्लरो लगले बोललें छेलै ।

“अच्छा कल्लर, देहों से भले तोहें कल्लर रहें, दिमागों से तें बरियो छेवे करै; ओकरहौ पर तोहें गनौरी गुरुजी रों फेटलों चटिया रहलों छै; की तोहें है बतावें पारें कि पुरानों जमाना में, राजा-रजवाड़ा के गुनगान करैवाला के कै किसिम होय छेलै, आरो ऊ सिनी कौन-कौन नामों से जानलों जाय छेलै?”

एक दाफी तें कल्लर कें लागलै कि इखनी है पूछे के की मतलब, तहियो वैं माधो मिसिर के सवाल के लगले जवाब देलकै, “है कौन बड़का सवाल छेकै, आपनों आश्रयदाता रों उच्चा कुलों में जन्मैवाला प्रशंसक सूत कहावै छेलै, जेनाकि राजा रों वंश रों प्रशंसा करैवाला मागध कहावै; प्रसंग के अनुकूल सुदर-सुंदर पंक्तिसिनी रची कें राजा के प्रशंसा करैवाला वंदीजन जानलों जाय, तें राजा के प्रशंसा करी हुनका भोरिया जगावैवाला वैतालिक नाम से जानलों जाय; जेनाकि हर प्रमुख कार्य, यहाँ तांय कि युद्धो में साथ रही कें राजा रों शौर्य के वर्णन करैवाला चारण कहावै। आखरी में भांट आवै छै—आपनों जजमानों के प्रशंसा करी कुछ पावैवाला प्रशंसक भांट कहावै छै।”

“एकदम ठीक बोललहैं, कल्लर”, माधो आपनों बायां हथेली से दायां हथेली पर घूसा मारतें कहलकै, “आबें ई बताव कि जे किसिम से तोहें अमरजीत के कुल-खनदानो के प्रशंसा करते रहै छै, तें तोहें ई सब के कौन कोटि में आवै छै—वंदी, की वैतालिक, की चारण, की भांट?”

अबकी है सवाल सुनतैं कल्लर एकदम से तिलमिलाय गेलों छेलै, मतर बोललै कुछवे नै, जेनाकि आरो सिनी दोस्तो ई बातों पर एकदम चुप्पी लगाय गेलों छेलै। माधो ई चुप्पी के मानी समझी गेलों छेलै, तें बात कें थोड़ों बदलै के कोशिश में बोललै, “बुरा तें नै मानी लेलैं, कल्लर? ठिक्के कहै छियौ, हम्में तें तोरों ज्ञान सबके सामना में राखे के खयाले से तोरा है पूछी लेलें छेलियौ। आखरी बात तें खाली हँसी-मजाके वास्ते कही देलें छेलियौ। बुरा नै मानियैं।”

मतर ई कहलौ के बादो माहौल नरमैलों कहाँ छेलै! कल्लर आपना कें रोके नै पारलें छेलै, तें कहिये बैठलै, ‘मसानी के पूजा करैतें-करैतें दिमागो मसान होय गेलों छै, बीहा के मंत्र नै नी सुहैतै।’ मतर माधो के चेहरा पर

है सुनला के बादो कोय फरक नै पड़लौं छेलै, जेना वै कल्लर के है बात सुनले नै रहें। कुछ गमिये के बोललें छेलै, “अच्छा, आयकों सभा यहीं खतम। आगू के बात आबें कल।”

(६)

आशुतोष बाबू यानी कि बलजीत के बड़का बाबू, हिनका गाँव भरी में आधों लोग तें वैद्यबाबा आकि वैद्यदादाहै कहै छै या तें फेनु बड़का बाबुए कही के काम चलाय छै, गाँव में हिनी वैद्यगिरी बीस-पचीस सालों से करी रहलौं छै।

पहिलें तें हिनी हिन्ने-हुन्ने के कामे करी आपनों घोर चलाय रहलौं छेलै, मतर केकरौ कन हिनका सरल आयुर्वेद चिकित्सा नाम के कोय पुरनकट्टी किताब की मिललै कि ओकरहै पढ़ी के गाँव-टोला के इलाज करे लागलौं छेलै। पहिले तें मंगनिये में जड़ी-बूटी दै दै, फेनु एक आना लिए लागलै आरो एक आनाहै अभियो तांय फीस छै। बीमारी कोय किसिम के रहै, गुरीच के काढ़ा हुनी पीयै लें जरूरे बतावै छै, आगू कहुआ के सेवन करै लें।

दवाखाना की हुनको दवाखाना छेलै, ओसरा के पाँच हाथ के टटिया से घेरी लेलें छेलै आरो वही में एकटा कुर्सी आरो टेबुल आपनों लेली राखी लेलें छेलै। टेबुले पर चार अंगुरी के लंबा-चौड़ावाला कागज के ढेर सिनी गोछियैलौं टुकड़ा, जे अखबार के काटलौं कतरन छेलै। रोगी के बैठे के स्थान ओसारै पर छेलै।

पहलें जे रं हिनी मुफ्ते में जड़ी-बूटी दै देलें छै, आयकल वही रं स्वस्थ रहै के विधियो भी बतैवों शुरू करी देलें छै। यै लेली हिनी अलग-अलग गत्ता पर स्याही से दू-दू, चार-चार पंक्ति के कविता लिखी के टांगी देलें छै। है बात कोय चार-पाँच रोज के नै, रातिये से हिनी है बदलाव करलें छै। से जखनी विसुनदेव महतो पेटचल्ली के शिकायत लैके हुनको पास ऐलै, तें रोग

की बोलतियै, टटिया पर टांगलों कविताहै पढ़ें लागलै। सबसें पहलें तें सामन्हैवाला दीवारी पर नजर गेलै, जै पर दू तखती टंगलों रहै, एक पर लिखलौ छेलै,

नमक महीन मिलाय कें वैमें करवों तेल
रोजे मलै, तें दर्द मिटै, छुटियो जाय सब मैल
आरो दोसरा में,

नीमी दतमन जे करै भुनलौं हर्रों चबाय
दूर वियारी नित करै ऊ घर वैद्य नै जाय।

अभी विसुनदेव महतो बायांवाला दीवारी दिस घुरवे करतियै कि आशुतोष बाबू आवी गेलै। कहलकै, “की पढ़ै छै, विसुनदेव? पढ़ी ला, पढ़ी ला ! बाद में जे पूछना-कहना होतौं, कहियौं। पहिले दायांवाला दीवारी पर लिखलौं देखें, की लिखलौं छै। तोरा सिनी वास्तें किताबे लिखी कें रखी देलें छियौ।

हुनी इशारा करलकै, तें विसुनदेव पाँच गत्ता कें जोड़ी कें बनैलौं तखती पर लिखलौं पढ़ना शुरू करलकै,

फागुन शक्कर जों कोय खाय
चैते औरा आरो चबाय,
बैशाखों में खाय करेला
जेठें दाख, आषाढ़ केला
सावन हर्रों, भादों चीत
आसिन मास गूड़ खाय मीत
कातिक मूली, अगहन तेल
पूसमास में दूध सें मेल
माघों में घी-खिचड़ी खाय
फागुन में जे भोरे नहाय
ओकरों घर पर वैद्य नै जाय।

आखरी पंक्ति पढ़ी कें मुस्कैतें हुएँ विसुनदेव नें वैद्य आशुतोष बाबू कें देखलकै, तें हुनी कुर्सी पर दोनों टांग चढ़ाय चुकुमुकु बैठतें पुछलकै, “तें आबें बतावों, कथी लें ऐलौं छों?”

“की कहियौ वैद्यबाबा, उदसिया के खुजली तें छुटवे नै करै छै,

कोय दवाय देतियो ।”

वैद्यबाबा कें मालूम छै कि दवाय तें लेतै, दाम दै के नाम पर महीनो भरी झुलैतै, सें हुनी कहलकै, “विसुनदेव, दवाय लेवा, तें एक टाका लागी जैतौं, हम्में तोरा दवाय बनाय के तरीके बताय दै छियौं, एक्को आना नै खरच होथौं, आरो दूसरो के इलाज करें पारौं ।”

‘ई तें आरो बढ़िया, बाबा ।’

“तें सुनों,

लटजीरा रों पात कें
टिकिया लिऐं बनाय
करूवो तेल में भूनी दें
बँधै कि खुजली जाय ।

या नै तें फेरू एक आरो तरीका छै,

अरहर दाल जलाय कें
दही में दिहैं मिलाय
पकलौं खाज पर लेपथैं
देथौं रोग भगाय ।

“ठीक छै, वैद्यबाबा । आजे ई सब करै छियै ।” ई कही कें विसुनदेव जेन्हें दायं हाथों के बल्लों पर उठै के कोशिश करलकै, कि आशुतोष बाबू बोललै, “बैठौं विसुनदेव, बैठौं । हड़बड़ाय के की जरूरत छै । जबें दवाय के किताबे बताय देलियौं तें जिनगी भर बनैतें नी रहियौ । ऐलौं छौं, तें थोड़े थिराय ला नी । जरा गाँवों के हाल-चाल सुनाय लें ।”

आरो विसुनदेव जबें दीवारी सें टिकी ठेहुना मोड़ी कें बैठी रहलै, तें आशु बाबू पुछलकै, “की विसुनदेव, तोरों तें अमरजीत कन खूब आना-जाना होय छौं । आयकल अमरा के माय के कोय खोज-खबर ठीक सें नै मिली रहलौं छै, तोरा तें मालूम होथौं । हेनों की बात छै, जे तोरा नै मालूम हुवें ।”

“से तें ठिक्के कहलौ, वैद्य दादा मतर हौ घटना के बाद हमरौ कुछ ढेर पता नै लागलौं छै कि नैकी बोदी कहाँ छै ।”

“आंय, कोन घटना?” आशु बाबू कुर्सी पर होने बैठलौं-बैठलौं विसुनदेव दिस थोड़ों आरो टा झुकी गेलौं छेलै ।

“तें, तोहें नै जानै छौ की? अरे बाप ।”

“कैन्हें, की भेले?” आशु बाबू अबकी आँखी पर सें गोल फ्रेमवाला चश्मा उतारी केँ टेबुलों पर राखी देलें छै, आरो जखनी हुनी चश्मा उतारी दे छै, तें आँख बड़ी छोटों दिखावें लागै छै, तखनी हुनी आँख फाड़िये-फाड़िये केँ सामना के चीज देखे के कोशिश करै छै। ई कोशिश में हुनकोँ कपारों पर रेखा सिनी के ढेरे धनुष बनी जाय छै।

बात केँ समझतें हुएँ विसुनदेव बिना आरो देर करलहै कहना शुरू करी देलकै, ‘वैद्यबाबा, नैकी यानी सत्ती बोदी के कोय आपनों भाय तगेपुर में रही छै की?’

“हों, रहै छै।”

“हुनी शायत वांही जगदीशपुर इस्कूल में गुरुओ जी छेकै।”

“हों छेकै।”

“तें, हुनकेँ कन नी अमरजीत केँ छोड़ी ऐलों छै, पढ़ै लें। सुनै छियै, हुनकोँ डांट-डपट आरो मरखन्नों स्वभाव के कारण एक दिन भोरे-भोर अमर यहाँ आवै लें मोटर गाड़ी पकड़ी लेलकै। टिकट के पैसा छेलै कि नै छेलै, के कहें पारें। जबें मामा के घरों सें भागलों छेलै, तें नहिये होतै, आरो की समझी गाड़ी के भीतर नै बैठी के ओकरोँ छत्तो पर बैठी रहलै। यहूँ सोचलें रहें कि इस्कूली बच्चा समझी केँ पैसा नै माँगतै।”

“आगू की होलै, से नी बतावों।”

“वही तें बताय रहलों छियौं, बाबा। ठिक्के टिकिटवालां बच्चा-बुतरु समझी केँ नै टोकलें छेलै, मतुर संयोग देखों। वही गाड़ी में हुनकोँ तगेपुर वाला मामाओ सवार छेलै। सवार छेलै, तें छेलै, मतुर देखों संयोग कि अमरजीत के नजर मामा पर पड़ी गेलै। केना पड़ी गेलै, है तें नै बतावें पारों। हुवें सकै छै, गाड़ी के भीतर में हुनी केकरौ सें बात करतें रहें, जे अमर सुनी लेलें रहें; सुनी लेलें रहें तें शंका मिटाय लें झाँकलें रहें। मामा खिड़किये लुग बैठलों रहै। जे भी हुएँ, अमर जेन्है जानलकै, कि गाड़ी में मामा बैठलों छै, ओकरोँ देहों में तें थरथरी घुसी गेलै। सोचलें होतै आबें करों की? शायत मामा के नजर ओकरा पर पड़िये गेलों होतै। है बात केँ ठियां के छेकै, ई बताय दियौं, बाबा?”

“कै ठियां के छेकै?”

“जगदीशपुर सें जेन्है टेकानी दिस बढै छौं नी। दसे कदम के बाद

जोरिया नै बहै छै । देखों नी ओकरो की नाम छेकै । हों याद ऐलौं....कोकरा नदी.
.सावन-भादो के दिन । भले चानन नदी के धार काटी कें लानलों गेलों रहै,
तखनी तें ऊ चानने रं खौली रहलौं छेलै । आरो गाड़ी वहें कोकरा नदी के
पुलों पर आवी कें खाड़ों छेलै, टिकिट के पैसा वसूली वास्तें । फेनु की छेलै,
अमरजीतें आव नै देखलकै ताव, मोटरगाड़ी के छत्तों सें सीधे कोकरा नद्दी
में धौंस दैये नी देलकै । सुनै छियै, जोरिया किनारी पर रहैवाला एक दू
आदमी तैरी कें ओकरा बचैय्यो के कोशिश करलकै, मतर हौ खलखलैतें
धारों में भला पकड़ें पारतियै !”

“अरे, ई नी बतावों, कि अमरजीत के की होलै?” आशु बाबू
एकदम बेचैन होय उठलौं छेलै आरो गोड़ नीचें करै के जल्दीबाजी में हुनी
खुद्दे कुर्सी समेत डोली गेलों छेलै ।

“देखियों बाबा, संभली कें ।” हुनका इस्थिर देखी कें विसुनदेवें
बिना देर करलहैं कहलें छेलै, “अमर कें की होना छेलै, बाबा । ऊ तें हेनहै के
तालापुल में है पारों सें हौ पार हेलैवाला लड़का छेकै । वहू कि सौनों-भादों
धारों में, जे ताला पुल के धार कोकरा सें तनिये-मनिये कम बूझों ।”

विसुनदेव के बात सुनी कें आशु बाबू के मुँह ऊपर दिस उठी गेलों
छेलै, आँख बंद होय गेलों छेलै, आरो दोनों हाथों के औंगुरी सिनी टेबुलों पर
अपने-आप जुड़ी गेलों छेलै; जेना भगवान के प्रति आपनों श्रद्धा निवेदित
करतें रहें । कुछ देर वास्तें हुनी वही अवस्था में रहलै, शायत बेसिये ।

किशुनदेव घोर जाय के हड़बड़ी में कहलें छेलै, “तें जैय्यों, दादा?”

“हों, जा ।” आशु बाबू सचेत होतें कहलें छेलै, आरो वहा रँ चेहरा
ऊपर दिस करी कें आँख मुनी लेलें छेलै । हुनको दोनों हाथ के अंगुरी होन्है
कें आपस में अपने आप फेनु जुड़ी गेलों छेलै ।

(७)

आशुतोष बाबू हफ्ता भरी तें जरूरे ई घटना कें छुपैलें राखलकै ।

घरों में केकरौ नै जानकारी देलकै, शायत ई सोची कें कि आरो कोय हुएँ-नै-हुएँ प्राती के माय जरूरे परेशान होय जैतै।

प्राती आशु बाबू के एकलौती बेटी छेकै; जेकरों शादी आशु बाबू किशोरेवस्था में करी देलें छेलै, ई सोची, कि माथों के भार जत्तें जल्दी हौल्कों हुएँ, ओत्ते अच्छा; एक बेटा छै, वहू कौन बेटी के भार सें कम छै, आरो ई भार तें हुनका जिनगिये भर ढोना छै, जेना हुएँ। यहा सोची कें आशु बाबू नें प्राती कें धान-पान दै कें खोचों भरी देलें छेलै।

बड़को बेटा घरों में रहवो कहाँ करै छै। दिन भर बाहरे-बाहर। हुनी जाय कें देखलें तें नै छै, मतर लोगों सें सुनलें छै, आरो जेकरा सें सुनलें छै, हौ झूठो केना हुएँ पारें। बेटा सुलेमान दरजी के यहाँ दरजीगिरी सीखी रहलें छै। पहिलों दाफी सुनलें छेलै, तें बात जी हदमदावैवाला लागलें छेलै, मतर जल्दिये आपना कें संभाली लेलें छेलै, मनेमन ई कही कें—जबें बोमाँये मसूद्दी मियां सें बीड़ी बनाय लें सीखें पारें, तें जों टुन्नू सुलेमान सें दरजीगिरी सीखी रहलें छै, तें कोन अपजसवाला बात ! टुन्नू तें आखिर लड़के छेकै। लड़का जात कहीं छुतावै छै की, छूत-छात तें जनानी वास्तें होय छै?

“सुनै छों, गाड़ी आवै के बेरा होय चललौं, गोड्डा नै जैवौ की?” प्राती के माय के आवाज ऐंगना सें ऐलै, तें आशु बाबू भी औसरा सें ऐंगना दिस बढी गेलै। ऐंगना के देहरी पर बैठतें हुएँ कहलकै, “नै, गोड्डा नै जैवै। पता नै अमरजीत के बात सोची कें मॉन केन्हों नी लागै छै, यहू तें पता नै, कि बोमाँ कहाँ छै, महीना भरी सें ऊपरे होय रहलें छै।”

प्राती माय गेहूम डोकवों छोड़ी कें आशु बाबू के नगीच आवी गेलै। मचिया खींचलकै आरो वहीं पर आपनों देह के भार राखी देलकै। कुछ आराम बुझैलै, तें कहना शुरू करलकै, “आखिर की करतै, बेचारी! दियोर के नुकसान होल्लैं, जे दुख ऊ भोगी रहलें छै, केकरो नजरी सें छुपलें छै की ! हमरौ सिनी की करें पारों। कहै छै, टुन्नू के बाबा महाशय जी के मुंशी छेलात। बस आपने वास्तें मुंशी। आपने जिनगी भर सुख-मौज भोगी कें चल्लों गेलात। पाँच बीघा जमीन बनाय कें भी राखी लेतियात, तें है दिन देखै लें नै मिलतियै। आबें मुँह खोललै सें की, हुनी जे करलकात—से करलकात, आबें हमरासिनी कें जे भोगना छै, भोगै छी। है भोगवे नी छेकै

कि छोटकी कें आपनों बेटा-बेटी लें भाय-भाय के दुआरी पर माथों टेकें लें लागे छै। फेनु सबकें तें आपनों-आपनों दुख छै। के केकरो दुख बेसी दिन तांय ढोवें पारें। हौ तें उपरामा वाला मास्टर भाय छै कि बेटा कें पढ़ाय वास्तें आपन्है कन राखी लेलें छै। हुनके माथों पर फूलमती के शादियो के भार बूझों। सुनै छियै, एक दिन हमरा बतैलें छेलै, कि उपरामाहै के लड़का छेकै, पढ़लौं-लिखलौं तें छेवे करै, सुनै छियै सरकारी नौकरियो में छै। जों है बात सही छै, तें आबें आरो की चाहियो, मतर बीहा होन्है कें तें नहिये नी होय जायवाला छै। मानी लें, गाँव भरी कें नहिये बोलाय छै, तहियो गोतिये-टोला भर ! यहू में तें पाँच हजार सें कम नहिये, बूझों। फेनु लड़कावाला सिनी की हेनै मानी लेतै? कम्मो-सें-कम पाँच हजार दहेजों में बूझों, जों लड़की कें खाली एक्के साड़ी पिन्हाय कें भेजी दे छौ, तें। फेनु एक्के साड़ी पिन्हाय कें केना भेजवौ ! खानदानो के इज्जतो तें देखना छै। सब पुराय वास्तें एक्के रास्ता बची जाय छै कि सम्पत्ति के नामों पर धरलौं आगू के जमीनों कें बेची देलौं जाय। भले ओकरा सें आधों साल के खाय-पीयै के कुछ निकली जैतें रहें।” टुन्नू-माय नें ई सब बात एक्के सांस में कही देलें छेलै।

“है तोहें बोली रहलौं छौ, टुन्नू के माय कि...?”

“बोलौं कि नै बोलौं, आबें तोंही बोलौं कि पेटों लेली की बेटी कें कुमारिये घरों में राखलौं जैतै, आरो फेनु यही लें कल आपने लोग, जे-जे रं बोलतौं नी कि लागथौं कानों में गलैलौं शीशा कोय ढारतें रहें। बस मौका पावै के देर बुझों, रोइयां तांय भालों नाँखी गड़ें लागथौं।”

“से तें ठिक्के बोलै छों, प्राती के माय। मतर मानी लें, ई बीहा होय्ये गेलै, खेत-पतार बिकियो गेलै, तें बाद में की होतै। अमर के बड़का मामा ओकरा जिनगी भर नहिये नी राखी लेतै। तबें बोमाँ के पास खाय-पीयै के साधन की रही जैतै? बीड़ी बनैला सें कहीं जिनगी कटैवाला छै? एखनी ई जमीन छै, तें कुछ आशाहौ छै, कुछ ओर-फेर करी कें काम चलैय्ये लै छै।”

आशु बाबू के बात सुनी कें टुन्नू-माय एकदम चुप होय गेलै। कुछ देर सोचतहै रहला के बाद हौले सें बोललै, “आबें की होतहै, एकरों बारे में अभिये सें की सोचना छै। भगवाने एक मुँह देलें छै, तें दू हाथो देलें छै। फेनु ई दुनियाँ में के भुखलौं रहलौं छै। चिड़ियौ अपना लें दाना खोजी लै छै, वहुं घोसला के बच्चा पाली-पोसी लै छै। आदमी तें आदमिये छेकै। पहिले

फूलमती के बीहा तें तै होय जाय। की बूझै छौ, बेटी रों रिश्ता कादों में बीहन फेकवों छेकै कि हिन्नें सें बीया डालों आरो हुन्नें सें पत्ता लेलें गाछ बाहर निकली जाय। ई बीहा छेकै, आरो गरीबों के बेटी के बीहा; सौ तितम्बा, सौ झमेला; माय-बाप कें नांगटों करी कें छोड़ै छै, बेटी के बीहा। कोनो ड्योढ़ी परिवार के बेटी के तें बीहा छेकै नै।”

“तोरा है बात के बोललकौं, कि अमर के मामा फूलमती के बीहा उपरामा में लगाय रहलौं छै?”

“बोमाँए एक दिन बोली रहलौं छेलै।”

“तोरा बोलै के मतलब?”

“आबें है बात जनानी जनानी कें नै बोलतै, तें की तोरा सें बोलतौं। होना कें ई बात तोरहौ सें बोलें पारें छेलै, आबें नै बोललकै, तें कुछ सोचल्लै होतै।” कि तखनिये दुन्नू-माय के नजर पछियारी दिवारी पर पड़लौं छेलै, हड़बड़ैतें ऊ बोली उठलै, “अगे माय, बेरा डूबै पर छै, एकरों तें पतो नै लगलै। फटकी कें पीसनौ छै। घरों में चुटकियो भर चिकसों नै छै। खाना की बनतै।” आरो ऊ पहिलके जग्घा पर बैठी कें अन्न जल्दी-जल्दी डोकें लागलौं छेलै, पटर, पटर, पटर, फट, पटर...

आशु बाबू चुपचाप औसारा पर लौटी ऐलौं छेलै।

(८)

सकीचन कें आदमी रों मॉन के बड़्डी पकड़ छै। के आदमी कत्तें दुखी छै कि नै छै, दुखी छै, तें कत्तें दुखी छै; खुशी छै, तें कत्तें भीतरिया छै, कत्तें बनावटी; सब बात वें कोय्यो आदमी के चेहरा देखल्लें भाँपी लै छै। तें आशु बाबू कें ओसारा पर गुमसुम बैठलौं देखल्लें, जैतें-जैतें रुकी गेलै, आरो आपनों गोड़ हुनके दुआर दिस बढ़ाय देलकै।

बरण्डा के नगीच ऐल्लें रुकतें कहलकै, “की बड़का दा, मनझमान देखै छियौं?”

“नै, मनझमान कथी वास्तें। कोय काम नै छै, तें हेन्है कें चुपचाप बैठलौ छियै, आरो की।”

“नै दादा। होन्है कें बैठवों आरो कुछ चिंता में बैठवों, दोनों के तरीका अलग-अलग होय छै। खैर, कुछ पता लागलौं कि सत्ती बोदी कहाँ छै, कहै के मतलब कौन भाय कन छै? भाइयो में बड़के भाय कन की? बेसी तें एकरे उम्मीद रहै छै। घरों में बताय कें तें नहिये गेलौं होथौं।” सकीचन कल्ले-कल्ले बरण्डा के एक कोना में पड़लौं मचिया कें खीची कें वैपर बैठी रहलौं छेलै, आरो आपनों बातों के राग कसतें आगू कहलें छेलै, “दादा, तोहें तें ढोलक-ऊलक बजावै नहिये छौ, तें ढोलक बारहौ में कुछ नहियें जानतें होभहौ। देखौं दादा, ढोलक के दू मूँ होय छै, जे मुँहों सें संगीत फुटै छै नी, दिन-दिन धिन-धिन, ताक-ताक धिन्ना, ऊ मुँह नर कहाय छै। जानै छौ बड़का दा, नर एत्तें सुन्दर आरो साफ कैन्हें बोलें पारै छै, कैन्हें कि ओकरो मन तें ऊ मसालावाला मुँह नाँखी होय छै, जे खाल के भीतरी सें लगैलौं जाय छै। नर के मन कें दूरे सें पहचानलौं जावें सकै छै आरो मेदी के मॉन के पहचाननै मुश्किल, ढोलक के जे मुँह मेदी कहावै छै नी, वहाँ मसालावाला भीतरी मॉन नै, तें आवाजो होने गोल-मटोल। ओना कें सब्भे जनानी के मॉन आरो ढोलक के मेदीवाला मुँहों में कोय अंतर नै, मतर सत्ती बोदी तें ढोलक के मेदिये वाला मुँह ही बूझौं। की आवाज निकलै छै, की अरथ भेलै, समझनै मुश्किल। की कहतौं, कहाँ जैथौ, ई तें समझवों आरो मुश्किल। की है बात झूठ छेकै, बड़का दा?” सकीचन नें आँख कें एकोसी करते हुए आशु बाबू कें देखलें छेलै।

“ढोलक के तें बात नै कहें पारौं, मतर बलजीत-माय के सोभावों के बारे में कुछ पता लगाना बड़ा मुश्किल।” ई कहतें हुए आशु बाबू आपनों दोनों टांग काठवाला कुर्सी पर चढ़ाय कें चुकुमुकू बैठी रहलौं छेलै।

हेना बैठै के मतलबे छै कि हुनी सामनावाला के बातों पर गौर करलें छै। ई बातों कें सकीचन भी खूब बूझी रहलौं छेलै, से बातों कें आगू बढ़ाय में वै कटियो टा कसर नै करलें छेलै, “खैर, ई बात तोहें कहौं कि नै कहौं, मतर है तें जानले बात छेकै कि बोदी घरों में केकरो कुछ नै बतलें होलें होथौं, मतर गाँवों में खिरनी धनुकायन छै नी, ओकरा सब मालूम छै। टाड्ढीवाली कें, वही कही रहलौं छेलै कि....।”

“के टाड्ढीवाली?”

“हमरी कनियैन टाड्ढिये के नी छेकै, आबे तोहें भुलावे लागलौं, बड़का दा। खैर छोड़ो, तें हम्मं कही रहलौं छेलियौं कि खिरनी धनुकायन नें टाड्ढीवाली कें बतैलें छै, कि फूल के बीहो ओकरो बड़के मामा ठीक करलें होलें छै उपरामा के कोय लड़का सें।”

“सकीचन के बात सुनी कें आशु बाबू आपनों दोनों गोड़ कुर्सी सें उतारी, टेबुल के नीचे लगलौं तखती पर राखी लेलकै, आरो सकीचन दिस कुछ झुकते हुए बोललै, “आरो की बोललौं छै?”

“बाकी तें आरो नै बतावे पारभौं, बड़का दा। हों एतना जरूरे जानै छियै कि लड़का कोनो कैथ संस्कारों के नै छै, सेहे पता लगावे लें सत्ती बोदी भागलपुर पहुँची गेलौं छै। फूलमती कें साथे लै जाय के मतलब बूझै पारै छै। हुए पारें, देखा-सुनियो पक्की करल्लै आवें।”

सकीचन के बात सुनी कें आशु बाबू एक बार कुर्सी पर एकदम सीधा होय गेलै, जेना हुनको दिमाग में बात एकदम ठीक-ठीक बैठी गेलौं रहें। आशु बाबू के ऊ स्थिति देखी सकीचनो नै रुकलौं छेलै आरो आपनों बात में आखरी बात ठोकते हुए कहलकै, “आरो जों ई बात सहिये छेकै, तें है बूझौं कि सामना के बारीवाला जमीन अबकी बिकन्है छै। कुशवाहा काका के नजर ऊ जमीनों पर लागले होलौं छै। यही बूझौं कि जखनी बोदी जे माँगतै, जेना माँगतै, जॉन वक्ती माँगतै, ऊ सब कुशवाहा काका कें मंजूर। खैर, चलै छियौं, बड़का दा।”

“से हेनों की हड़बड़ी छौं?” आशु बाबू चाहै छेलै कि सकीचन कुछ देर लेली आरो बैठें, शायत आरो कुछ हुनी जानै लें चाहै छेलै, मतुर तखनिये कमर सीधा करते सकीचनं कहलकै, “छै नी हड़बड़ी, बड़का दा, ऊ पछियारी टोला में केशो दां लाल दा सें जे गाय खरीदलें छेलै नी, तें बेचै वक्तीं यही कही कें बेचलें छेलै कि गाय एकदम देशला छेकै, पिठाली रं दूध करथौं आरो दोनों शाम मिलाय कें दस सेर सें कम नै। तें बड़ी हुलासों सें केशो दां गाय खरीदी तें लेलकै, मतुर निकली गेलै जरसी। आबें जे गाय के टाँगे में दम नै हुए, ओकरो दूधों में की दम होतै, बड़का दा। पहिलें तें लाल दा सें केशो दा के खूब कहा-सुनी होलै, केन्हों के बात थमैलै, तें बूधो दा सें केशो दा के होय गेलै, बस यहा सोचौं कि लाठी नै चललै, नै तें उटका-पैची में कोय्यौं

कसर बाकी नै रहलै। बात होलै कि पनछेछरों दूध के लैके बूधो दां केशो दा के दुआरिये पर पहुंची के जोरों-जोरों से कहे लागलै, “दूध दे रहलौ छै, कि पानी? एक गिलास दूध में दू गिलास पानी। एकदम छुर पानी।” बस की छेलै, बमकिये नी गेलै केशोदा। बोलते-बोलते यहू कही देलकै, कि, देह केन्हों कि देशला गाय के पिठाली रं दूध पचाय ले ऐलौ छौ। एक दिन पीवे, ते दोनों कोठा चले लागतौ। ऊ ते तोरों नसीबों से ई जरसी गाय निकली गेलौ, नै ते देसला के दूध से अब तांय घाट पहुँची गेलौ होतिये। बस यहें सब बात के लैके जे हूल-हुज्जत शुरू होलौ छै, ते परसू से नै रुकलौ छै। चलिये, सलटाय दिये। ते, चलै छियौ बड़का दा। प्रणाम।” ई कही के सकीचन उठलौ छेलै आरो सीधे सिधयाय गेलौ छेलै।

ई बात हेनौ छेलै कि केकरौ हँसी आवी जैतिये, मतर आशु बाबू साथे हेनौ नै होलौ छेलै। हुनी आपनौ आँखी पर से गोल चश्मा हटैले छेलै आरो दोनों गोड़ कुर्सी पर चढ़ाय के वहा रं चुकुमुकू बैठी रहलौ छेलै, आपनौ माथा छपरी दिस करते हुए।

(६)

“हे बोदी, ऊ लड़का से फूलमती के बीहा....नै जानौ केन्हें मनो के विचलित करै छै।” सत्ती चूलो रो लट्टो आपनो कपाड़ो से हटाय के पीछू करते कहलकै।

“केन्हें, की होलै? लड़का में कोन ऐव सुनी ऐलौ की, आरो केकरा से?” अनुकंपा रो चेहरा के चमक हठसिये फीका पड़ी गेलौ छेलै।

“हम्में उपराम्हे के एकटा सवासिन-मुँहो से सुनले छिये कि लड़का चोरी-चपाटी ले के समाजो में कोय भला नजरी से नै देखलो जाय छै।”

सत्ती सामना के बातों के बिना कुछ खयाल करले कहले छेलै, जेकरा सुनलें अनुकंपा मुँहो पर अंचरा राखी के खिलखिलाय उठलौ छेलै, “तहूँ, ननद, कहाँकरो और कहैकरो बात उठाय के ले आनले छौ। अरे, ई

बात की आयकों छेकै, आठ-दस बरिस पहिलकों बात कहों। हमरौ मालूम छै। यही नी कि लड़का गाँमे के एक हलवाय के सूनो घरों में पाँच छों छौड़ा के साथ दुकी गेलों छेलै। तें होयवाला जमाय की असकल्ले छेलै, पाँच-पाँच ठो आरो वैमें तीन तें अपने घरों के निकलतौं। सुनवौ कथा ! सब जानवे करै छेलै कि साव जी हटिया गेलों छै, तें बेरा डुबला के बादे लौटेवाला छै, मतुर है के जानै छेलै कि कोय काम लैकें सांझ होय सें पहिले लौटी जैतै। आरो आरो छौड़ा सिनी तें दीवार फानी कें भागी गेलै, मतुर ई जवान मिठखौकों होय के चक्कर में घरे में रही गेलै। केवड़ा रों ताला-झिंझरी खोलै के आवाज सुनलकै, तें भागै के कोय रास्ता नै देखी कें नंगधड़ंग होलें, चूल्हा के सबटा राख देहों पर ढारी लेलकै...” कहतें कहतें अनुकंपा आकाश दिस मूँ करी कें खूब जोरों सें खिलखिलैलौं छेलै, आरो फेनु बचलों बात कें जल्दी-जल्दी पूरा करलें छेलै, “जबे देह, हाथ, मुँहों में करखी-राख पोती लेलकै, तें द्वारी पर आबी कें खाड़ों होय गेलै। साव जी के द्वार खोलना छेलै कि सामना के दृश्य देखी कें सोचलकै; प्रेते आबी के खाड़ों होय गेलों छै, से हुनी चिचियैलौं लगें छड़पनिया भागलै। की घोर-द्वार देखतियै....हिन्नं मौका मिलतहैं, लड़कां कमीज-पैंट चढ़ैलें छेलै आरो फुर पार।” ई बात कहतें-कहतें ओकरो हँसी फेनु फुटी पड़लौं छेलै, अबकी तें सत्तियो आपनों हंसी नै रोके पारलें छेलै।

“आबें गाँव में एतें बड़ों बात होय गेलों छेलै, तें छुपलों केना रहतियै” अनुकंपा आपनों हँसी कें जबरदस्ती रोकतें हुएँ कहलें छेलै, “जानै के तें सावो जी कें सब बात मालूम होय्ये गेलै, मतुर है सोची कें कि पटवारी जी के लड़का छेकै, नै कुछ बोललै। आबें यही बात लैकें जों तोहें माथों भारी करी रहलौं छों, तें बूड़बकियेवाला बात नी।”

“देखों बोदी, हमरा की कुछ कहना छै। जहाँ लालदां आरो तोहें छौ, हममें तें एकदम निश्चिन्त छी। जों कुछ चिन्ता छै, तें बस यही बात लैकें कि बीहा-शादी छेकै, मानी लें लड़कावाला कुछ नहिये लेतै, तभियो घड़ी-साइकिल मांगवे नी करतै। साइकिलो में रेले। दोनों में दू हजार तें बुझवे करों। फेनु बारात दुआर ऐतै, तें की भुखलौं लौटतै। वहू में हजार, दू हजार राखवे करों, जो लुलुवा डुबौन भोज नहियो करै छियै, तें मरजाद राखे के बात केना हटावें पारों। एक बात तें दोनो में सें करहैलें पड़ें।” सत्ती के चेहरा हठासिये

मनझमान पड़ी गेलों छेलै ।

“सुनों ननद, मॉन नै गिरावों । दादा पीठी पर छों नी । सब ठीक होय जैतै ।”

“जों घरो के सामनावाला बारी बिकी जाय, तें सब समस्या के निदान छै । मतुर वहू की हेनै बिकी जैतै? सबके मालूम छै कि ऊ जमीनों में कुछ पेंच छै, जेकरा सलटैलें बिना, कोय खरीददार तैयारो तें नै हुएँ पारें । एक कुशवाहा दियोर छोंत, मतुर हुनियो टाका के आठे आना दै लें तैयार । कहै छोंत, “भैयारीवाला दाव-पेंच में हम्मैं एकरा सें बेसी टाका नै फँसावें पारों । ई जमीनों पर केसा-केसी तें धरले छै, वहू में तें हमरै खरच करना छै । आबें तोंही बोलों बोदी, ऊ जमीनों सें टाका आवै के भरोसे कहाँ बचै छै ।” सत्ती आपनों लट्टों कें फेनु सें कोकड़ी दिस करतें हुएँ कहलें छेलै ।

“कहै छियों नी, तोरों पीठी पर दादा छों तें । जों कुशवाहा जी नै देतों, तें कोय पाठक जी देतों, नै पाठक जी, तें कोय यादव जी, मतर ऊ जमीनो बिकतै, आरो ठीक समय पर बिकतै, बाकी खर्च लें भाय सिनी कोन दिनों वास्तें छै ।” एतना कहीं कें अनुकंपा चुप होय गेलों छेलै । सत्ती तें चुप छेवे करलै ।

“की कुछ मनो में आरो भाव छों, कुछ छों, तें खखसी कें वहू बोलों । कोय भांगटों बुझावै छों, तें ओकरो निदान हुएँ पारें । कहीं तोरा है तें नै लागै छै कि दौलतपुरों में शादी करना ठीक नै होतै, कहीं ठीक बीहे वक्ती कोई भांगटों नै लागी जाय । तें, सुनों ननद, फूलवती के बीहा भागलपुरे सें होतै । वहू लें हम्मैं तोरों दादा कें तैयार करी लेवों?”

“है की बोलै छै, बोदी !” हठासिये सत्ती के बंद मुँह खुली पड़लें छेलै । हुनको मनो के साध कें हम्मैं चोट केना पहुँचावें पारें । हुनी जबें फूल कें गोदी में लै, तें एक्के बात बोलै, धूम-धाम सें हम्मैं आपनों बेटी के डोली विदा करवै, सौंसे गाँव के सवासिन कें जमा करी कें, सब सुहागिन के बीच । आबें तोंही कहों, बोदी, हुनी नै रहलै, तें की, हुनको किंछा तें जीतों छै, भले हमरों मनो में बसी कें ।” कहतें-कहतें ओकरो आँख लोराय गेलों छेलै, जेकरा वैं आपनों अंचरा सें पोछी लेलें छेलै ।

अनुकंपा कें की मालूम छेलै कि ओकरो बात संझलकी ननद कें हेना विचलित करी देतै । बात के गंभीरता कें समझतें हुएँ वैं फेनु सें कहलें

छेलै, “ननद, ऊ तें हम्में हेन्है कही देलें छेलियौं, तोरों दादाहौ यही चाहै छै कि फूल के शादी तोरों ससुरारिये घरों सें होतै आरो काँही सें नै। जे गाँवों में फूल खेललै, कूदलै, तें ओकरो बिया आन जग्घों सें भला केना हुएँ पारें। चलौ उठौं, तोरों दादा के लौटै के बेरो होय चललौं छौं। गोड़-हाथ, कपड़ा बदली ला ! आय तोंही तुलसीचौरा पर साँझ दिखाय दौ। हम्में घरों में जरा झाड़ू लगाय दै छियौं।”

ई कही अनुकंपा जेन्है उठलौं छेलै कि सत्तियो चटाय के गोल करी एक कोना सें खाड़ों करी देलें छेलै आरो ऐंगना केँ उत्तरी कोना पर बनलौं कुइयां दिस बढी गेलै।

(१०)

बीस रोजों के बाद सत्ती आपनों गाँव लौटै वाली छै। कत्तें हुलास मनौं में लेलें, ई बताना मुश्किल। ओकरो खुशी के कारण खाली यही नै छेलै कि फूल के बिया एक किसिम सें पक्की होय गेलौं छेलै, पक्किये नै, बिया के महीना-तारीखो तक होय गेलौं छेलै। आबें टाकाहै दै में जों देर-सबेर होला के कारण बिया के दिन आगू बढी जाय, तें ई अलग बात छै, नै तें बैशाख में जे दिन तारीख पड़लौं छै, ओकरो टरै के कोय बाते नै छै।

ई तें खुशी के एक बात छेलै; दूसरो खुशी यैलें छेलै कि अमरजीत मैट्रिक पास करी गेलौं छेलै। पासो की हेन्हों-तेन्हों, एकदम फस्ट क्लास सें। ऊ यही रिजल्ट जानै लें लाल दा के कहला पर वहाँ पाँच दिन बेसिये ठहरी गेलौं छेलै, आरो जखनी अमरजीत के ई रं पास करै के बात ओकरा लाल दां सुनैलें छेलै, तें ओकरो आँखों सें लोर ढरकी ऐलौं छेलै।

लाल दां कुछुवो नै कहलें छेलै। बस चुपचाप वहाँ सें हटी गेलौं छेलै। लोर निकली आवै के कारण तें वें अपनी लाल बोदी केँ बतैनें छेलै कि आय अमरजीत के बाबू होतियै, तें कत्तें खुश होतियै। यहेँ पढ़े के इच्छा लेली तें हुनी केँ दिन गाछी पर चढ़ी केँ बैठी रहलौं छेलै। आय हुनी देखतियै

कि हुनकों बेटा फूट करलें छै, तें केन्हों गदगदाय जैतियै...है देखैलें हुनी नै रहलै...नै, हेनों केन्हें हम्मं बोली रहलौ छियै, हुनी जीतौ छै, जीते रहतै, भले हमरों मने में रही कें। हुनी सब गमी रहलौ छै, सब देखी रहलौ छै।”

अनुकंपा कें लागलै, सत्ती कांही कानी नै भरें; से वैं कहलकै, “अमर के पास करला पर तोरों भाय मिठाय लानलें छौं, उपरामै सें किनी कें। सब बच्चां तें आपनों-आपनों हिस्सा लैकें निगलियो चुकलकै। बची गेलौ छी हमरा दोनो; ननद-भौजाय। चलौ हमरो दोनों पूजी लौं।” ई कही कें ऊ हाँसी पड़लौ छेलै, तें सत्तियो के ठोरों पर मुस्कान उभरी ऐलौ छेलै।

“बोदी,” ऊ बिना वहाँ सें हिल्ले-हुल्ले कहलें छेलै, “बीस रोज बीती रहलौ छै; गाँव जाना जरूरी छै। बलजीत अकेले छै, हेना कें ओकरो बड़का बू के रहतें, चिंताहै कथी के छै। तहियो बच्चा तें बच्चे होय छै। माय बिना बस टुअरे बूझौं। से आबें हम्मं रुकें नै पारौं। सब बात मनो लायक होय गेलै। फूल के बीहो पक्की होय गेलै, अमर पास करिये गेलै, आबें घोर कें हवांक छोड़वौं ठीक नै। कल भोरे-भोर मनारवाली टरैन पकड़ी लेवै, तें भगवान के उगतें-उगतें पंजवारा मोड़ पहुँची जेवै।”

“है की बोलै छौं, ननद ! कल वृहस्पति छेकै आरो वृहस्पति के शेष में दक्खिन दिस यात्रा करवौं एकदम ठीक नै। जानाहै छौ तें सोमवार कें निकली जय्यौ। एकदम नै रोकवौं। दादाहौ जानथौं, तें नै जावै लें देखौं।”

“नै बोदी, जाय लें पड़वे करतै। एतें दिन यहाँ रुकी गेलियै, यही बहुत छै, दादां कही देलकै कि अमर के रिजल्ट सुनी ले, तबें जय्यै, तें रुकी गेलियै, आबें यहाँ रुकै के कोय मतलबे नै छै। परसुवे सें मॉन करी रहलौ छै, घोर लौटी जाय कें।”

“मतर वृहस्पति के शेषों में जैवौ ?

“की होतै बोदी ! हम्मं आपनों सामान आधों रात के पहिले घरों सें बाहर द्वारी पर राखी ऐवै, तबें तें जतरा के दोष कटी जैतै नी। आरो दोष सुहागिन, अयभाती वास्तें होय छै; विधवा वास्तें की !”

अभी सत्ती आरो कुछ बोलतियै कि अनुकंपा नें ओकरो मुँहों पर आपनों दायां हाथ राखी देलें छेलै, ई कहतें हुए, “सब शुभ-शुभ होय रहलौ छै, हेनों अशुभ केन्हें बोलै छौं। आबें जबें रुकहै लें नै चाहै छौं, तें कोय बात नै; चलौ सबटा सामान समेटी ला। हम्मू मदद करी दै छियौं।”

“सामाने की छै, बोदी। सब समेटवै, तें बस सुदामा जी के पोटरी। हममें समेटी लै छियै, तोहें यहीं बैठों। भोर सें घुरनी रं घरों के कामों पीछू घुरतें रहें छौ, आराम करों।” आरो ऊ लाल बोदी के वाँही खटिया पर बैठैतें कोठरी दिस बढ़ी गेलों छेलै।

सत्ती कोठरी में गेलै, तें अनुकंपा आपनों दायां हाथों के बीचलका अंगुरी सें दोनों आँखी के कोर पोछी लेलकै।

(११)

ई तें आशु बाबु के पता नै चललों छेलै कि सोगारथें कखनी आरो कहिया, देह के सब्भे रोगों के इलाज लेली ‘आरोग्य-आसन-आश्रम’ खोली देलें छै। कहीं हेनों तें नै कि आसन-वासन के आड़ों में वैद्यगिरी शुरू करी देलें छै। जों हेने बात छै, तें जेहो दू पैसा आवै छै, ओकरों में बखरा। पता तें लगैना चाही कि आखिर बात कहाँ तांय पहुंची चुकलों छै, मतर एकरों पता केना चलतै? के ई कामों लें एकदम फिट हुएँ पारें? हों, एक तें छै। अभी हुनी जॉन आदमी के बारे में सोचवे करतियै कि देखै छै, वही आदमी हुनकों दुआरी दिस आवी रहलों छै।

“हेभें देखौ, जे अजनासी रों बारे में सोचिये रहलों छेलियै, वही हिन्नै आवी रहलों छै। ई तें चमत्कारे बूझों” आशु बाबू मनेमन सोचलें छेलै, “लागै छै, काम होन्है छै, यही लें तें ई सब होय रहलों छै।”

आरो हुनी एकदम सें इस्थिर होय के बैठी रहलै। इस्थिर सें यै लेली कि आशुबाबुए के नै, है बात सब्भे के मालूम छै कि बाँस भरी चलै में अजनसिया के पाँच मिनिट सें कम नै लगै छै, आरो अभी ऊ पाँच बांस के दूरी पर होतै, तें एकरों मतलब छेलै कि आशु बाबू के दुआरी तांय आवै में ओकरा कम-से-कम बीस-बाइस मिनिट तें लगन्है लगना छेलै।

बात ई छेलै कि एक दाफी साँझे साँझ ऊ मॉर मैदान लेली परसवन्नी खेतों दिस निकली गेलों छेलै। रास्ता घासों सें भरलों रहै, से

सीधे खरीस से आमना-सामना होय गेलै। हौ पाँच-छों हाथों के खरीस देखतै ओकरो जी तालू से सट्टी के रही गेलै। दू-चार गोड़ पीछू हटी के हेनो छलांग मारतें घरो दिस भागलौ छेलै, जेना लेरुआ के बाव लगलौ रहें। आबे वही दिनों से ऊ, भले ही साफ-सुथरा रास्ता से निकलै, दू-तीन कदम आगू बढ़ी के रुकी जाय छै, आरो फेनु आगू बढ़ै से पहिले दू-चार बार चुटकी जरूरे बजावै छै, ताकि कोय आखरी-पिपनी हिन्ने-हुन्ने छिपलौ रहें, तें भागी जाय।

आशु बाबू के ध्यान तभिये टूटलौ छेलै, जबे अजनसिया देहरी के नीचे से आवाज देलें छेलै, “गोड़ लागै छियौं, बड़का दा।”
“अरे अजनासी, आव, आव ! देहरी के नीचे में कैन्हें छैं, ऊपर आवी जो, हौ चटाय छै, बिछाय के बैठी जो। तोरेसिनी वास्तें तें ई चटाय बनवैलें छियै, तीन हाथों के। मॉन हुए तें कोय गोड़ो पसारें पारें।”

अजनसिया देहरी पर बिना चटाय बिछैले बैठी रहलौ छेलै, ई कहतें हुए, “चटाय के की जरूरत छै, बड़का दा। गोबरों से नीपलौ-पोतलौ जमीन, पक्का मकानों से की कम छै, जे चटाय बिछाय के कष्ट करौं।”

“खैर, कोय बात नै। बोलें, कुछ खास बात की?”

“की हेन्है के तोरा से भेंट-मुलाकात करै वास्तें नै आवें पारौं, खाली कामे लैके?”

“अरे नै-नै, कैन्हें नी आवें पारें। हमरों घोर हेकरा लेली कबे बंद रहलौ छै, आरो गाँव वाला वास्तें तें रातो भर खुल्ला।”

“से बात तें छेवे करै, बड़का दा। यही कारण छै कि सौंसे गाँववाला के दिलो तोरहो वास्तें खुल्ले रहै छौं, तनी-मनी केकरो बंद रहै छै, तें सोगारथ दा के।” ई कही अजनसिया आशु बाबू के कनखियाय के देखलें छेलै, कि आखिर ई बातों के हुनको ऊपर की असर होय छै। अजनसियो के ई बात मालूम छै कि आयकल आशु बाबू दखनाहा टोलों नहिये के बराबर जाय छै, कैन्हें कि सोगारथ वही टोलों में आपनों ‘आरोग्य-आसन-आश्रम’ खोललें होलौ छै।

आबे आशु बाबू के मनो में भले जे कुछ रहें, मतुर हुनी है भाव के कभियो केकरो सामना में परगट नै हुए देलकै। जबे अजनसिया के मुँहे से ई बात सुनलकै, तें पहलें यही पुछलकै, “अच्छा अजनासी, ई तें बोल, वैं

भला हमरा से कथी ले कटियो टा दुराव राखतै। ओकरो बाबू हमरो पकिया दोस्त छेलै, दोस्त होला के बावजूदो हेनो कभियो नै होलै कि कविराज से कम हमरा आदर देले रहे, आबे ओकरो बेटा आसन से रोगी के इलाज करै छै, ते बढ़िये बात नी, कोय जड़ी-बूटी से ते नहिये नी करै छै, कि हमरा से दुकानदारी दुराव राखे।” आशु बाबू जानी के निचलका बात जोड़ले छेलै, ताकि जो सोगारथ जड़ी-बूटी से इलाज करतै होतै, ते अजनासी वहु कहवे करतै।

“हे ते नै कहे पारो बड़का दा, कि आसन साथे, जड़ी-बूटियो से इलाज करै छै कि नै, बोलै ते छेलै कि जड़ी-बूटी के साथ जो आसन करलो जाय, ते मकरध्वज रं आसन काम करै छै। आबे हुनी जड़ी-बूटी के प्रयोग करै छै कि नै करै छै, ई जानना कोनो बड़का बात थोड़े छेके, गेलियो आरो पता लगैले ऐलियो। जो पता लगाय ऐलियो, ते मोदक के गुल्ली देवो नी।”

“ऊ ते तोहे नहियो लगैवे, तहियो तोरो वास्ते एक गुल्ली बचैये के राखे छियै। कभियो नै बेचे पारो।”

आशु बाबू के मालूम छै कि मोदक पावे ले अजनसिया लंका तक पार करे पारै, ओकरा जारै पारै। बस एक मोदक पर ओकरा से कोयो काम करैलो जावे सके छै। ये लेली बात दूसरो दिस नै हुए, हुनी तुरत कहलके “ते लौटी के आव अजनासी, हम्मे तोरो वास्ते गोली निकाली के राखवो।”

“ठीक छै बड़का दा। देरो लगो, ते बाहर नै निकलियो। ऐबो ते पता लगैने।” ई कही के अजनसिया दुआरी से नीचे उतरथे चुटकी बजैले छेलै आरो कोनियासी होले दखिन टोलो दिस निकली गेलै।

अजनसिया के जैथे, आशु बाबू के मनो मे ई बात उठलो छेलै “ओकरा भेजी के शायत हम्मे ठीक नै करलियै, जो कजायत सोगारथ के केन्ही ई मालूम होय गेलै...मतुर अजनसिया के हम्मे कहाँ भेजले छियै, ऊ ते आपन्है लबर-लबर बोली रहलो छेलै, आरो गेल्लै, ते आपन्है मनो से।”

कि तभिये मनो मे यहु उठलै, “हम्मे अजनसिया के बोलियो कि नै बोलियो, मनो मे ते ई बात छेवे करलै। बस होय गेलै। मनो मे जे रहै छै, ऊ केन्ही-नै-केन्ही घटिये जाय छै, आबे हम्मे बोलियो आकि नै बोलियो, मनो मे ई ते छेवे करै कि फूल के बीहा-शादी के बात अमर के बड़काहै मामा सोचै छै, ते अच्छा। हम्मे कहाँ-कहाँ जैबे आरो करो की पारो...आरो आबे

जबें फूलमती के बड़काहै मामा फूलमती के बीहा लें तै-तमन्ना करी रहलौं छै, तें हमरा कैन्हें ई लागी रहलौं छै कि बोमाँ फूल के शादी-बीहा लें हमराहै सें बातचीत करतियै। ई हमरों घरों के मामला छेकै, हम्में सोचतियै, जाँ फूल के मामा कें सहयोग करना छेलै, तें ऊपरों सें करतियै....मतुर बोमाँ कें हमरा पर नै, अपनों लालदा पर बेसी भरोसों छै, यही लें... रहौ, मतुर कोय हेन्है कें एत्तें झंझट माथा पर उठाय लै छै की? कोय-नै-कोय लाभों के बात तें होवे करतै। नै आरो कुछु, तें एतना तें जरूरे कि अमर मैट्रिक पास करिये गेलै, एक-दू क्लास आगू पढ़ें-नै-पढ़ें, कोय-नै-कोय सरकारी नौकरी धरले छै. ..आरो फेनु ओकरों गार्जन तें हुनिये नी, हमरा कन कोय उतरवे नै करतै; जे भी संबंध लें उतरतै, तें अमर के मामाहै कन। तखनी बोमाँओ के कुछ नै चलतै, केना चलतै। आखिर अमर कें सब किसिम सें लायक बनैलें छै, तें ओकरों बड़के मामा नी। तखनी लक्ष्मीकांत के वचन कहाँ सें रहतै, जे आपनों समाज में हाथ उठाय कें कहलें छेलै....”

आशु बाबू कें लागलै, हुनकों सिर कुछु भारी हेनों लागें लागलौं छै। हुनी अजनसिया के आरो प्रतीक्षा नै करी कें चुपचाप बड़का औसारा सें नीचें उतरलै आरो पछियारी टोलों दिस निकली गेलै, मणि बाबू के घोर दिस।

(१२)

बेरा डूबै-डूबै पर होतै, जखनी आशु बाबू आपनों दुआरी पर लौटलौं छेलै। देखै छै, अजनसिया बरांडा पर बैठलौं अकेले में हाँसी रहलौं छै। ओकरों गुदगुदी के तें एकराहै सें पता चली रहलौं छेलै कि हाँसे वक्ती ओकरों ठोर तें कुछुवे फैलै, मतुर रही-रही कें पेट ऊपर-नीचें खूब हुएँ लागै।

“की बात छै, अजनासी? कथी वास्तें ई हाँसी छेकै?” आशु बाबू के आवाज सुनलकै, तें सीधा होतें कहलकै, “आबें बैठवों, बड़ों दा, तबें नी सुनैभौं। ऊ रोगी-आसरम करों लीला।”

आशु बाबुओ के मनौं में वहाँकरों बात सुनै के उत्सुकता तें छेवे

करलै, से ऐंगना नै जाय कें सीधे आपनों कुर्सी पर जमी गेलै आरो बोललै, “तें पहिले सुनैये लें, की लीला सुनाय लें चाहे छैं।”

अजनसिया कुछ सुनैतियै, एकरों पहलें ऊ एक दाफी फेनु जोरों सें हाँसलों छेलै, तबें आपना पर नियंत्रण पावी कें कहना शुरू करलकै, “की कहियौं बड़ों दा, हम्मों सीधे नै जाय कें पिछुवाड़ी दिसों सें गेलियौं, कि सोगारथ दा देखी नै लै। डमोलों के चटाय सें घेरी कें बनैलों आश्रम, जैमें छेदे-छेद। से एक छेद सें हम्मों भीतर देखना शुरू करलियै। देखै छियै कि सोगारथ दा चेथरी सें बोली रहलौं छै—रीढ़ सीधा रखी कें साँस खींचना छै। पहिलें नाँकी सें, हों; आरो खूब तेजी सें।”

चेथरी साँस खींचै आरो सोगारथ दा हर दाफी बोलै—आरो जोरों सें। आबें की कहियौं दादा, चेथरी के मुँ में भरलौं हवा भड़ाक सें बाहर आवी गेलै, जेना भरलौं बैलून के मुँह खुली गेलों रहें आरो सूँऽऽ करी कें हवा बाहर। हवा निकलतियै तें निकलतियै, ओकरों साथें चेथरी के थूक के फुहारों बाहर निकलें लागलौं छेलै। सोगारथ दा पर थूक पड़ले होतै, तभिये नी हुनी गनगनाय उठलौं छेलै—कहै छेलियौ, आसन-वासन करवों तोरों बूता के बात नै छौ, दारू-ताड़ी पीवी कें देह गलाय लेलें छैं, साँस भला फेफड़ा में कौन कोण्टा में ठहरतौ—है सुनी कें चेथरियो के मुँ गरमैय्ये तें गेलों छेलै—है नै बोलों सोगारथ भाय, टीन भरी साँस के गैस की हमरों फेफड़ा में आवें पारें। आबें हम्मों की करियौं, जखनी तोहें बार-बार साँस खींची कें छाती फुलाय लें कहीं रहलौं छेलों तें हमरा ऊ बेंगवा के बात याद आवी गेलै, जे हाथी के आकार बनावै लेली आपनों देह फुलैलें जाय रहलौं छै, आरो आखिर में बेलुन नाँखी फटाक सें फुटी गेलै—सुनी कें हमरों हँसी फूटैवालाहै छेलै, मतर समय-स्थान कें देखतें हुएँ सीधे सरपट बान्ही पर आवी कें खूब हाँसलियै। बस यहीं सें आवै में लेट होय गेलै।”

“ऊ तें हम्मू जानै छेलियै, कि आसन सें वहाँ इलाज नै होय छै, तोहें बेकारे परेशान होले।” आशु बाबू अपना कें ऊ सब बातों सें अलग करते कहलें छेलै, “तहियो चल्लों गेलै, तें एतना तें जानवे करले नी कि आसन सें रोग केना भगैलौं जाय छै।” हुनी आपनों ठोरों पर दायां हाथ के अंगुली सिनी फिरतें मुस्कैतें हुएँ कहलकै।

“एतनै नै जानलियै, बड़ों दा। आरो कुछ जानलियै।”

“ऊ की?”

“सत्ती बोदी, एक दिन पहले गाँव ऐलों छेलै। चतुरानन काकी से मिली गेलों छै।”

“की बोलै छै, अजनासी?” आशुतोष बाबू हठासिये चौकस होय उठलों छेलै, जेना हुनकों सामन्है में बिजली रों तार गिरी गेलों रहें।

“ तें, झूठ बोली रहलों छियों की, बड़ों दा? विश्वास नै होय छै, तें धनुकायन चाची से पूछी ला। हुनकों बातों पर तें पतियैवौ। हम्मों आपनों दिसों से थोड़े लगाय के बोली रहलों छियों। धनुकायन चाची, विरनी दादी साथे बान्हों दैके जाय रहलों छेलै, बतियैतै। ऊ दोनों के देखी हमरों हँस्सी सटकी गेलहैं। जानवे करै छै, जों हमरों हँस्सी पर ओकरो सिनी के नजर पड़ी जैतियै, तें हमरों कोय करम बाकी नै रहतियै। हम्मों सच्चे बात कैन्हें नी बतैतियै, मानैवाली छेलै की—बस यही कहतियै? निपुतरा, हमरा तोंहे पढ़ावै छै, हमरों नंगचाय के बुलै पर हँसै छै...।

अजनसिया ऊ सब बोललों चल्लों गेलों छेलै, जे ओकरा बिरनी के दादी के बारे में बोलना छेलै, आरो आशु बाबू...हुनी तें कुछुवो नै सुनी रहलों छेलै, जेटा हुनी सुनी लेलें छेलै, वही हुनकों चित्त के बेकल करै लेली काफी छेलै।

हुनका है रं चुप होलों देखी के अजनसियां देहरी से दोनों गोड़ नीचें ससारतें कहलकै, “तें दादा, हम्मों चलियों?”

चलियों कहै के मतलब आशु बाबू के समझै में देर नै लागलों छेलै आरो हुनी आपनों बरामदे के दिवालिये में बनैलों आलमारी के चाभी से खोललें छेलै आरो एक बड़ों रं शीशी में राखलों मोदक के एक गोली निकाली, ओकरो हाथों में राखतें कहलें छेलै, “अजनासी, खिरनी धनुकायन से तोंही मिलियें, हम्मों नै मिलवै आरो पता लगावें कि आखिर चतुरानन मिसिर से की बात होलै? बेसी कुछ पूछे के जरूरत नै छै। बुझलें? कल संझकी वक्ती अय्यें ! कल, विरकोदर बाबू के मुंशी के खास मोदक बनैवै, तें एक गोली तोरो वास्तें तैयार रखवौ। हमरा यैमें कोय खर्चो नै पड़तै। ऐभें तें?”

“की बोलै छै, बड़ों दा। कहीं, तें विहानिये से आवी के बैठी रहियों। मतुर नै, हमरा धनुकायन चाचियो से तें एक-एक भीतरिया बात

जानी कें आना छै” ई कहीं वें दू दाफी चुटकी बजैलें छेलै आरो आगू बढ़ी गेलों छेलै।

आशु बाबू के आँख परछत्ती दिस उठी गेलों छेलै। मतुर हुनी परछत्ती नै देखी रहलें छेलै, देखी रहलें छेलै—चतुरानन मिसिर आरो अमरजीत के माय कें बबुआन टोला के शिवाला वाला चबूतरा पर बतियैतें।

(१३)

“प्राती के माय, तोहें कुछ सुनलौ? बोमाँ गाँव ऐलों छेलै। चतुरानन मिसिर सें मिली कें लौटी गेलै। घरो आवै के जरूरत नै बुझलकै, जेना गाँव-घरों सें कोय रिस्ते नै रही गेलों रहें। जों है सहिये बात छेकै, तें एकरा के अच्छा कहतै?”

“सुनलें तें हम्मू छियै, मतुर कुछ सोचिये कें हम्में तोरा नै कहलियों। हेन्है कें तोरों तबीअत कोन अच्छा रहै छों, ऊपर सें बोमाँ के हेनों सब बातों सें दुक्खे मिलैवाला छै, कोन खुशखबरी छेकै, जे तोरा कहतियों। पता नै, हेनों कैन्हें होलों जाय रहली छै, दिन प्रतिदिन?”

“तबीअत तें ठिक्के में अच्छा नै रहै छै। हमरे दवाय हमराहै धोखा दै रहलें छै। मतुर ठीक होय जैवै, देर-सवेर लागें भले। एक गिलास पानी दीयों तें, गोली निगली लियै।” ई कही आशु बाबू ऐंगनाहै के देहरी पर बैठी रहलै।

प्राती-माय उठी कें घैलसरो तांय गेलों छेलै आरो एक गिलास पानी लानी कें हुनकों हाथों में थमाय कें नगीचे देहरी पर बैठी रहलें छेलै।

आशु बाबू आपनों छोटों रं झोली सें, जे हुनको बायां कान्हा सें लै कें दायां डाँड़ों तांय नीचें लटकले रहै छेलै, सें गोली के शीशी निकाललें छेलै आरो एक गोली कें मुँह में राखी, मुँह कें कुछ ऊपर करलें छेलै, फेनु गिलास कें बिना मुँह सें लगैनें पानी मुँहों में हौले-हौले गिरैतें गेलों छेलै, गोली निगलला के बादो। प्राती-माय रों आँख आशु बाबू के कंठों पर तब तांय

लगले रहलै, तब तांय पानी घोटै के कारण ऊ ऊपर-नीचे होतें रहलै।

“आऽऽऽह” आशु बाबू एक संतोष के साँस लेलें छेलै, आरो गिलास कें देहरी के नीचे राखी देलें छेलै।

“मतुर तोरा है बात के कहलकौं?” प्राती-माय गिलास कें आपनों हाथों में उठैतें पूछलें छेलै।

“अजनासी। वै खिरनी धनुकायन सेँ—जे विरनी-माय सेँ बोली रहलौ छेलै।”

“हमरा तें पूर्णमासी मिसिर के कनियैनी बतैलें छै।”

“तबे तें झूठ नै हुए पारें। चतुरानन आरो पूर्णमासी के बीच मनमुटाव नहियो होला के बादो मनमुटावे समझौ। आबे तोंही समझौ, प्राती-माय, हम्में तें बोमाँ के मने मुताबिक करी रहलौ छियै। के नै जानै छै, कि लक्ष्मी ऊ जमीन हमरों नामों सेँ खरीदलें छेलै, तखनी एत्तें कागज-पत्तर के बात होय छेलै की? मुँह सेँ बोली देलकों, तें—प्राण जाई पर वचन न जाई। यही नी होतें रहलौ छै। आबे बोमाँ एकरा नै मानै छै, तें नै मानौ; लैलौक सबटा जमीन, मतुर जमीनों के कारण रिस्ता मिघाड़वों तें ठीक नै। हम्में तें लक्ष्मी कें तभियो कैहलें छेलियै कि तोहें आपनों पैसा सेँ जमीन खरीदी रहलौ छें, तें बोमाँ के नामे सेँ कीनें; हमरा दै के जरूरत की। के जानै छै कि यही जमीन कल खना खानदानों लेली बारह मूँ वाला बरौ बनी जाय आरो वही होलै। घाव चोखावै लेलियै तें हम्में जमीन तुरत बोमाँ कें दै देलियै।”

“शायत हमरा सिनी देर करी देलियै।”

“नै, कुछुयो देर नै करलें छियै। अमरजीत के बड़का मामां जेन्हें चिल्लर के हाथों सेँ खबर करलकै कि फूल के शादी पक्की होय गेलौ छै, बस दहेज के टाका केन्हों कें होय जाय, तें बोर-बराती के इन्तजाम हमरासिनी करी लेवै, तें की एक्को दिन विलम्ब करलियै? बोमाँ कें बुलाय कें कही देलियै, बारीवाला जमीन तोरे छेकौं। दहेज के रकम चुकाय दौ। आबे बात रहलै, केकरो हाथें बेचतै; तें, हम्में यही नी कहलें छेलियै कि पूर्णमासी मिसिर कें जमीन बेची दौ, यही में भला छै। आबे तोहीं सोचौ, प्राती-माय, पूर्णमासी ओत्ते टाका दै रहलौ छेलै, जत्तें दहेजों लेली जरूरत छै, यानी कि पन्द्रह सौ टाका। पूर्णमासी कें एत्तें टाका दैके जरूरते की छेलै, यही लें नी कि हुनको

जमीन सुखनिया नदी के किनारी में छै, आरो हर दाफी फसल दही जाय छै। से ऊ जमीन बेची के बारीवाला जमीन खरीदी लैले चाहे छेलै, नै तें पूर्णमासी के बौंसी छोड़ी के यहाँकरो खेत खरीदे के की जरूरत छेलै, मतुर यहुमें बोमाँ के लागलै कि हम्मों कोय चाल चली रहलौ छियै। यहू सोचें पारें कि जबे हम्मों खुद सक्षम छी, तें हम्मों ई परिवारों के केकरहौ से कोय मदद कैन्हें लौं। पूर्णमासी मिसिर के पक्षों में हम्मों छियै, है बात तें बोमाँओ के मालूमे छेलै, हमरा घुमाय-फिराय के कहियो देलें छेलै, कि हुनी चतुरानन मिसिर के वचन देलें छै, तें आबें है सोची के कि वचन में भांगटों नै पड़ें, बोमाँ नें चतुरानन मिसिर के दौलतपुर बोलैलें रहें आरो वांही से मिसिर के साथें बांका कचहरी चललौ गेलै।”

“मानी लें, ई बात सच्चे रहें, ई बात होय्ये गेलों रहें, तें यैमें हमरा सिनी के की सोचना छै, जमीन हुनको, कीमत हुनी लेतै, हमरा सिनी के की लेना-देना?” प्राती-मांय गिलास के देहरी से सटाय के नीचे राखलें हुए कहलें छेलै।

“लेना-देना तें नहिये छै। मतर यही सोचौ, पूर्णमासी तें पक्का ओतनौ टाका दे रहलौ छेलै, जत्तें दहेजों में दे लें लागतियै, आरो चतुरानन दू सौ कम्मों दे रहलौ छेलै, बाकी टाका वास्तें तें आबें हाथ केकरो-नै-केकरो सामना फैलावें लें नी लागतै। हम्मी नै, अमरजीत के बड़को मामा, बोमाँ के समझलें छेलै कि जे हम्मों कही रहलौ छियै, ठिक्के कही रहलौ छियै, मतुर बोमाँ मानैवाली छेलै। आपनों लाल बोदी के माध्यम से लालदा के कहवाय देलकै, हम्मों चतुरानन मिसिर के वचन देलें छियै। प्राती-माय, आबें तोहीं सोचों, हेनों वचन के की, जे हुनके लें कसाय बनी जाय।”

“कुछुवे तें सोची के राखले होतै नी। इखनी से कथी लें एतना चिंतित होवों। हों, बोमाँ के एतना जरूरे सोचना चाही कि बीहा होला के बाद जनानी के नया जन्म होय छै, आपनों ससुरारी परिवारों के साथ। आरो जे संबंध मरण तांय जुड़लौ रहै छै। ससुराल परिवारों के सुख-दुख ओकरो सुख-दुख। नैहर तें खाली कहै के। जिनगी तें नहिये नी कटें पारें, नैहरा में। कटवो करतें, तें भौजाय, भाय के नौड़िये बनी के। यही से बीहा के बाद, लौटी के ससुराल में बास करी के, आपनों भाग्य के बनाना चाही। आय दियोर जीत्तों होतियै, तें एतें ई सब नै होतियै।” प्राती-माय आपनों लोराय

ऐलों आँखी कें अँचरा सें पोछी लेलें छेलै ।

“अच्छा, छोड़ो ई सब बातों कें” आशु बाबू अपनी जनानी के ऊ स्थिति देखी कें कहलकै, “हम्मू कहाँकरो-कहाँकरो बात लैकें तोरो लुग बैठी जाय छियै । मतुर एतना तें छेवे नी करै कि बोमाँ के है सब कामों सें कुल-खानदान के माथों झुकवे नी करै छै । कोय कामों सें जों ससुराल आकि नैहरो परिवार के कान-नाक कटें, तें हौ काम की करना चाही?”

“एकरा सें बेसी चिंता के बात छै कि इखनी अमर के माय छै कहाँ । भागलपुरों में, की बीसी के कोय धर्मशाला में? कथू सें बेसी यहा बातों के खयाल करना जरूरी छै ।”

“ओकरे चिंता में गाँव निकली रहलौ छियै । नै होलै तें चतुरानन सें भी मिलवै । नहियो सबटा सच बतैतै, एतना तें बतैतै नी कि बोमाँ आखिर छै कहाँ?”

“बहुत जरूरी छै । जा ! हम्मू हिन्नै-हुन्नै सें टोह लैके कोशिश करै छियै । नै होलै तें सीधे खिरनी धनुकायन सें पूछवै । हमरा सें तें कुछ नहिये नी छिपावें पारें ।”

“बड़्डी बढ़ियाँ । तें, हम्मै निकलै छियौं । कुछ बेरो होय जाय, तें अंदेशा नै करियो आरो हों, जों यही बीचों में अजनासी आवी जाय, तें बैठाय कें राखियौ!” एतना कही आशु बाबू एंगना सें निकली, केवड़ा भिड़काय देलें छेलै, आरो प्राती-माय नै जानौं कतें देर कौन बातों के सोचों में डुबलौं, वहीं, होन्है कें बैठले रही गेलौं छेलै ।

(१४)

“केकरो हँकारों लैकें ऐलों छों, तोहें तें कोय-नै-कोय केकरो हँकारे लैकें आवै छों ।” खिरनी धनुकायनं खटिया पर बैठले-बैठले अजनसिया सें कहलें छेलै ।

“बस, हँकारे समझों, चाची । होना कें जाना छेलै पहिलें विन्देसर

माय कन, आबें रास्ता में तोरे घरों पर पहिलें नजर पड़ी गेलै, वहू में द्वारी पर ताला नै, तें समझी गेलियै, तोहें घरों पर होवे करवौ।”

“आबें बात की छै, वहू बतावों नी।”

खिरनी धनुकायन नें खटिया पर बैठै के इशारा करतें हुएँ कहलकै, तें अजनसिया आपनों गोड़ खटिया पर नीचें लटकैलें बैठी रहलै आरो कहना शुरू करलकै, “तोरा तें मालूमे होथौं कि रूपसावाली सत्ती बोदी गाँव ऐलों छेलै, गाँव ऐलै, मतुर दू चार दिन पहिलें घोर नै ऐलै। ई बात के गाँव वालाहौ कें मालूम छै, मतुर पेटों में पचाय लें चाहै छै, से विरिज काकां चिरियारी चौर खिलाय कें फ़ैसला लेलें छै। तें, एकरों मतलबे छेकै कि, बात तें सबटा खुली कें आन्है छै।” अजनसियां ई बात हेनों मुँह बनाय कें कहलें छेलै, जेना विरिज नारायण घोष के फ़ैसला बहुत गलत छै, आरो अजनसिया ओकरों पक्ष में नै रहें।

“तें, ई चिरियारी चौर केकरा-केकरा खिलाय के बात छै? कुछु तें तोरहौ मालूमे होथौं?” धनुकायन चाची नें दायां हाथ के तर्जनी आपनों गालों में धंसैतें पूछलें छेलै।

“जे-जे, रूपसापुरवाली बोदी कें देखलें छै, आरो बात कें छुपाय रहलौ छै...। बुरा नै मानियो, चाची; पहिलौ शंका तें तोरे पर बिरिज काका रों छौं।” एतना कही कें अजनसिया एकदम चुप होय गेलौ छेलै।

चिरियारी चौर के बात सुनहैं खिरनी धनुकायन एकदम चुप होय गेलै। ओकरा खूब मालूम छै कि चिरियारी चौर कें वही चबावें पारें, जे निर्दोष छै, नै तें निगलै के सिवा कोय चारा नै, आरो निगलै के मतलबे छै—अलगट्टे चोरी धरैवों। वैं मनेमन सोचलकै—यहू बात नै कि चिरियारी चौर खाय सें इन्कार करी लौ। इन्कार करै के मतलब तें सीधे-सीधे दोष स्वीकारवों छेकै।

“मतर जे कहों चाची, है चिरियारी बोरियारीवाला खेल अच्छा नै। खा-म-खा एकरा में निर्दोषो चक्कर में आवी जाय छै। तोरा याद होथौं, धौलिया के बात। जे रं बेचारां मुंशी काका सें धौल खेलकै कि ओकरों नामे बटेसरा सें बदली कें धौलिया पड़ी गेलै। हाँसियो आवै छै, बेचारा पर.....मुंशी जी चाँदीवाला माला टूटै के डरों सें इनारा के पाटों पर राखी कें नहावें लागलै कि हुन्नै मालाहै गायब होय गेलै। आबें के लेलकै, नै लेलकै, के कहें

पारों। इनाराहै छेकै, पाँच टोला के पचास किसिम के लोग। सबके जेबी सें लैकें इनारा के भीतरी तांय खोजलौं गेलै, चिरियारी चौर खिलाय के नौबत आवी गेलै, आरो बटेसरां खाय सें इनकार करी देलकै, तें मतलबे छेलै कि माला वहीं चौरैलें छै। के नै कहलें होतै कि जों माला नै लेलें छै, तें चौर चिबाय सें मुकरै छें केन्हें? मतर बटेसर खाय लें तैयार नै। बस की छेलै, मुंशी जी के गोस्सा जानवे करै छौ, वहू में जमींदार बाबू के मुंशी। दियै नी लागलै, ओकरा। आखिर कानतें-कानतें सबके बोललकै, “केना खैतियै, चौर; हमरा दाँत छै कि चबाबौं। मसूड़ा में चौर गड़तियै नै?” आरो हा करी कें मुँह खोली देलें छेलै। हाय रे बाप, एक्को ठो दाँत नै छेलै। बेलुन रं मुँहों में खाली हवा भरलौं छेलै। सबके हँसी आवी गेलै, मुंशियो जी कें, मतुर मार तें खैय्ये लेलकै नी बटेसरां—भले ओकरा छोड़ी देलौं गेलै। यही लें कहै छियौ, धनुकायन चाची, कि चिरियारी-बिरियारीवाला खेल ठीक नै—वहू में विरिज काका के गोस्सा तें जगजाहिर छै। हेना कें तें हुनी गोस्सावै नै छै, आरो जों हुनका गोस्सा ऐलौं, तें जम्मो थरथरावै। यही सें देखै छौ नी, खाली हुनिये गाँव भरी सें अलग-थलग नै रहै छै, गाँवो भरी होने। गोतियै परहेज करै छै, आरो चिरियारी चौरवाला बात हुनिये कहलें छै।” अजनसियां जानी कें विरिज बाबू के नाम कहलें छेलै कि हुनका सें कोय कुछ पूछै के साहस करो नै पारें।

शायत ई कहानी सुनी कें खिरनी धनुकैनो खूब हँसतियै, मतुर ओकरों ध्यान तें काँही आरो ठियां चललौं गेलौं छेलै। वें मने मन सोचलें छेलै, “हमरा की लेना-देना छै कि सत्ती बोदी के बात छिपावौं आरो फेनु बोदीं हमरा केकरो कहै सें थोड़े मना करलें छै, कि नहिये कहियौं। जों लौटला पर पूछतै, तें कही देवै, कि तोहें है कहाँ कहलें छेलौ—है बात केकरो सें नै कहना छै, फेनु बिरनी काकी कें तें हम्मं कहिये चुकलौं छियै, आबें बड़की बोदी सें कहिये दै छियै, तें की होय जाय छै, आरो है बात छिपैलो सें ठीक नै, कहीं कोय आरो बात होय जाय, तें बदनामी हमरे माथों पर ऐतै।”

“की सोचें लागलौ चाची? जे भी कहों, चाची, ई रूपसावाली, बड़ों दा कें नाको दम करी देलें छै। आरो हुनका कुछ बोलथै नै बनै छै, छोटका भाय के विधवा कनियैन लें बोलवो करतै तें की? नै निगलत्हैं बनै छै, नै उगलत्हैं। हम्मं तें कहै छियै बड़ों दा कें, पंचायत बिठाय कें झंझटे पार करी

ला। हदमदैला सें तें ओछरवे अच्छा। ई डेढ़ बीघा जमीन की होलों छै, पोखरी में बोचों आवी गेलों छै, कखनी के जबड़ा में फँसी जाय, कोय्यो नै जानै छै।”

“नै बेटा, हमरा जबड़ा में नै फँसना छै। हमरा की लेना, जॉर-जमीन सें। ऊ समस्या हुनकासिनी के गोतियारी झमेला छेकै, हम्में कथी लें फँसै लें जैवों। जानें जों आरो जानें जाँतों। हम्में इखनिये जाय कें बड़की बोदी कें बताय दै छियै कि सत्ती बोदी ऐली छेलै, आरो दू दिन बौंसी में रहलें छेलै, कैथटोली में हिनका सिनी के कोय लॉर-जॉर छै, हुनकै कन। वाहीं सें चतुरानन जी कें लैकें बाँका चल्लों गेलों छेलै, हमरा बौंसिये में छोड़ी कें, मसूदन मंदिर के बाहरे हम्में गोधूली बेरा तांय बैठलें रही गेलों छेलियै। जबें बोदी लौटलै, तें हुनकों चेहरा पर चमक छेलै, एतना तें हम्में गमिये लेलें छेलियै, एकरों मतलब साफ छेलै कि जे काम वास्तें हुनी बाँका गेलों छेलै, ऊ काम होय गेलों छेलै, आकि अड़चन दूर होय गेलों होतै। एकरों बाद बोदीं हमरा चतुरानन जी के साथ गाँव लौटी जाय के बात कहलें छेलै, ई कही कें कि हम्में भागलपुरवाली टरेन पकड़ी लेवै। एकरों बाद हम्में कुछुवे नै जानै छियै, कैन्हें कि हम्में तें चतुरानन मिसिर जी साथें लौटी ऐलों छेलियै, बस, बीस कदम आगू-पीछू।”

“जों, है बात तोहें बड़ों दा आकि बड़की बोदी सें बोली दौ, तें चिरियारी-बरियारी वाला बाते न हुऐ, आरो कोय बटेसरा हेनों आदमी मारो खाय लें बची जाय।” अजनसियां आपनों बात तरत्थी पर तरत्थी रगड़तें हुऐ कहलें छेलै।

“कल नै, हम्में इखनिये जाय कें बड़की बोदी सें बताय दै छियै। तोहें निकल्लों, हम्में घोर समेटी कें आवै छियों।”

जखनी अजनसिया खिरनी धनुकायन के यहाँ सें निकललें छेलै, तखनी सूरज तीन बाँस ऊपर चढ़ी ऐलों होतै।

(१५)

गोधूली बेरा डूबै पर छेलै, जखनी अजनसिया, आशु बाबू के दुआरी पर पहुँचलै। दुआरी पर कोय नै छेलै, एकदम सून-सपाटो। हों, ऐंगना से टुनटुनी के साथें प्राती-माय के एकलौता भजन रुकी-रुकी कें उठी रहलौ छेलै,

निभिया के डाली मैया लागल हिंडोलवा
कि झूली-झूली
मैया गावें लागलै गीत कि झूली झूली
झूलतें-झूलतें माय कें लागलै पियास कि चली गेलै
मलहारिन के पास कि चली गेलै
सुतलौ छें किणें गे जागें आबें तें मालिन बेटी गे
चुरु एक पनिया पिलावें नी गे चुरु एक

अजनसिया समझें नै पारै छै कि आय, बड़की बोदी भजन गैतें-गैतें रुकी कैन्हें जाय छै, टुनटुनी रुकी-रुकी कैन्हें बाजै छै? ऊ जबें भी हेनौ वक्त ऐलौ छै, नै तें भजन टुटलौ छै, नै घंटी के टुनटुनी; एक सुरौ में दोनौ चलतें रहै छै।

“हुएँ सकें छै, बीचों-बीचों में तुलसीचौरा पर राखलौ दीया के रास उकसैतें रहें।...मतर ई केना हुएँ पारें, बड़की बोदी के दीया में तेल के कभियो कमी नै रहै छै।” वें मनेमन सोचलें छेलै, आरो बिना कोय आवाज देलें बाहरी औसरा पर बैठी रहलै, जैठां आशु बाबू के बैठकखानाहौ छेलै।

कि तखनिये आशु बाबू छोटका घरों के ऐंगना से निकललौ छेलै। केबड़ा के झिंझिर बाहर से चढ़ाय कें आपनौ दुआरी दिस आवी गेलौ छेलै।

“के अजनासी?”

“हों, बड़ों दा, हम्मी छेकियै।”

आशु बाबू कें आबें कम दिखावें लागलौ छै, यै लेली गोधूली बेरा होथें, होथें, हुनी घोर लौटी आवै छै।

“बैठ, बैठ ! तोरे इन्तजार करी रहलौ छेलियौ” ई कहीकें हुनी आपनौ काठवाला कुर्सी पर जमी गेलौ छेलै, आरो बैठला के साथे हुनी कहलें छेलै, “आखिर की कही देलें तोहें आपनौ धनुकायन काकी कें, बिना कोय

बात पूछलहैं....”

“कुछ तें दिमाग लडैय्ये लें नी लागै छै, बड़का दा। कही देलियै, कि विरिज काका चोरियारी चौर खिलायवाला छै, पंचायत बुलाय कें। की मरद आरो की जनानी, जेकरा-जेकरा पर शंका छै, ओकरै-ओकरै खिलैतै। बस ई सुनहैं, सब उगलै लें तैयारे नी होय गेलै। कहलकै—चोरियारी चौर खिलाय के की जरूरत छै, जाय कें बड़की बोदी कें सब हम्मी कही दै छियै।”

“तें ई बात छेलै, बेरा डूबै में दू बाँस बचले होतै कि हम्में घोर लौटलौं छेलियै, आरो यहाँ बड़की बोदी सें मालूम होलौ कि खिरनी धनुकायन सब बात बोली कें अभिये-अभी घोर गेलौं छै। ई सब बात सुनी कें प्राती-माय तें बड़ी दुखित छै। बड़ी समझैला-बुझैला पर शांत होलौं छै।

“मतर बड़की बोदी के शांत होलै सें की होय छै, बड़का दा। जे आग सुलगी गेलौं छै नी, ऊ तें, भूसाहै तरौं के आगिन बूझौं, हों। हमरा नै लागै छौं, ई बुझैवाला, कत्तो पानी ढारो, सब ऊपर-ऊपर टघरी जैथौं।” अजनसियां आपनों दायां हथेली कें हवा में एक दिसों सें दूसरों दिस ससारतें कहलें छेलै।

“तोरों बात नै बुझलियौं।”

“बात तें साफे छै, बड़ौं दा, कैन्हें नी बूझें पारी रहलौं छै। हों, ये वास्तें नै बूझें पारी रहलौं छौं कि धनुकायन चाची तें ओतनै टा बतैलें होथौं, जतना टा जानै छै, बेसी तें नहिये नी।” अजनसिया नें फेनु दायां हाथों से बायां हाथों के एकेक अंगुरी कें पुटकैतें हुएँ बोललौं छेलै।

“बाकी बात की?”

“अहो बड़ौं दा, यही तें बताय वास्तें हम्में आवी गेलियै, नै तें ई बेरा जानवे करै छौं, हम्में कम्मे निकलै छियै” पालथी मारी कें बैठतें हुएँ अजनसियां कहना शुरू करलें छेलै, “हमरा कंकड़िया के दोसरी कनियैनी सें नी मालूम होलै। घोर लौटी रहलौं छेलियै, तें लखपुरा के कालीथानों में मिली गेलै; हमरा देखलकै, तें बोले लागलै, ‘रुकों-रुकों दियोर’ आरो हम्में रुकलियै, तें नगीच आवी बोललै—‘है पूछै छियौं, जबें सत्ती बोदीं आपनों जमीन बेचियै देलकै, आरो तोरों दोस्त, कहै के मतलब हमरों मालिक सें, है तीन सौ टाका पैचों कथी लें मांगी रहलौं छेलै, वहू ई कही कें कि फसल पकहैं तोरों रिन उतारी देवौं, या तें टाका लै लियों, आकि टाका के बदला

फसल ।”

“की बोललकै कंकड़िया के कनियैनी, जरा दोहरावें तें !”

अजनसिया के समझ में देर नै लागलौ छेलै कि फसलवाला बात सुनहैं आशु बाबू के हेनो लागलौ छेलै, जेना हुनका कोय बिरनी काटी लेलें रहें । मतुर वैं कुछ आरो नै पूछी के कंकड़िया-कैनयैनी के बात दोहराय देलें छेलै, आरो एक क्षण चुप रहला के बाद आशु बाबू से पूछलें छेलै, “है पैचों लेवों-लौटैवोंवाला बात हम्में नै समझें पारलियै, दादा, आबें जबें कि सत्ती बोदी चतुरानन चाचा के हाथ आपनों खेत बेचिये देलें छै, जेन्हों कि धनुकायन चाची के बातों से बूझें पारलियै, तें हुनी कोन खेत के कौन फसल दै के बात करी रहलौ छेलै?”

आशु बाबू, अजनसिया के एक-एक बात के बड़ी धियानों से सुनलें छेलै, मतुर बोललौ छेलै कुछवे नै । सबकुछ सुनला के बाद कुछ देरी ले एकदम सीधा होय के बैठी गेलौ छेलै, आँख मूंदी के । ई देखी के अजनसियों हुनका नै टोकलें छेलै । कि तखनिये वैं देखलकै कि आशु बाबू झोली के—जे अभी तांय हुनको कंधे से लटकी रहलौ छेलै—उतारी के टेबुल पर राखी देलकै, आरो वैसे एक पुड़िया में लपटैलौ, एक अंगुरी के बराबर कोय चीज अजनसिया के थमाय देलकै, जेकरा पैथें, वैं कहलें छेलै, “तें चलियों, बड़ों दा, बेरा डुबला से हमरो परेशानी बुझवे करै छौ ।” आरो ई कही ऊ सीधे देहरी से नीचे ससरी गेलौ छेलै ।

मतुर आशु बाबू उत्तर में कुछवों नै कहलें छेलै, जेकरा पर अजनसिया ध्यानो नै देलें छेलै, जेना ओकरा आशु बाबू के उत्तर के कोय जरूरतों नै रहें । देहरी से उतरला के बाद ऊ दू-तीन दाफी चुटकी बजैतें हुएँ पछियारी टोलों दिस बढ़ी गेलौ छेलै ।

(१६)

“सुनें स्वाति, आबें सब कुछ तै तमन्ना होय गेलौ छै । दुआर पर

बराती लागथैं, बचलों टाका लड़कावाला कें देन्है छै, व्यवस्था छौ नी?" पंचामृत बाबू कहलें छेलै।

“हों, दादा, सब वेवस्था करी रहलें छियै।” सत्तियों लगले उत्तर देलें छेलै।

“तें, तोरा बाकी के चिन्ता नै करना छै। हौ हम्मं देखी लेवै। आरो बौआवें के समय्यो कहाँ रहलै, बस महीना भरी तोरों हाथों में रही गेलों छौ। घरों में आरो सब इंतजामो तें करना छौ; से आबें तोहें गाँव लौटी जो ! साथों में अमर कें भी राखी लें ! वहाँ गामों में असकल्ले सब इन्तजाम करवों तें मुश्किले छौ। फेनु अमर यहाँ रहिये कें की करतै। नामो लिखैतै, तें वैमें महीना भरी देर तें बुझवे करें। आरो हों, फूल यहीं रहलै, ऊ तोरों बोदिये साथें, पाँच रोज पहलें गाँव पहुँचतौ। बुझलैं? बोदी लुग जिद नै करियें। सुनै छियै, तोहें लाल बोदी सें कही रहलें छेलैं—फूलों कें साथ ले जाय के बात। ई बात दिमागों सें हटाय दें, आरो अमर कें लैकें तोहें दौलतपुर लौटी जो।”

सत्ती कुछुओ जवाब नै देलें छेलै। लालदा के हर बात जेना देवता के आदेश रहें, जे कुछ, केन्हों कें टारलों नै जावें सकै छेलै। ऊ होन्हौ कें कुछ नै बोलें पारै छै, जखनी वैं बड़ों दा सें आपनों लेली स्वाति नाम सुनै छै। एक लाल दा ही कभियो ओकरा सत्ती कहीकें नै पुकारलें छै, बाबुए नाँखी स्वाति कहलें ऐलों छै, नै तें नैहर के सब्भै तें बस वहा सत्तिये, जे नाम ओकरो ससुराल वालाहीं जानी लेलें छै।

सत्ती कें मालूम छै कि पंचामृत बाबू कौन सोभाव के आदमी छै। आपनों तें आपने छेकें, दोसरो लें हुनको मॉन होने छलछलैतें रहै छै। हौ दिन नै जानौ कौन बातों कें लैकें सत्ती के आँख, हुनको सम्मुख लोराय गेलै, तें पंचामृत बाबू कहलें छेलै, “स्वाति, जबें घोर दुक्खों के दिन छेलौ, तखनी तें आँख आरो मॉन कें बांधलें राखलैं, आरो आबें, जबें सुख तोरों दुआरी पर खाड़ों होय कें झिंझरी ढकढकाय रहलें छौ, तें हौ आवाज नै सुनी, आँखी के दुआर खोलै लें बैठी गेले। इखनी तें कुछ निश्चिन्त होय कें नै बोलें पारों, मतुर खुशखबरी जल्दिये सुनें पारें कि अमरजीत कें सरकारी नौकरी मिली गेलों छै—रेल के नौकरी, वहू में एकरा कोय हेन्हों-तेन्हों पद नै मिलै वाला छै। परीक्षा में लिखवो करलें छै बढिया, बोलवो करलें छै बढिया। तबें, जब

तांय नियुक्ति के पत्र नै मिली जाय, तें इखनी की कहें पारों।”

पंचामृत बाबू के बात सुनी कें सत्ती के आँखी के लोर, मनो में उठलें खुशी के झोकों सें तखनिये सूखी गेलों रहें। जिनगी में पहिले दाफी वें शायत लाल दा कें आँख उठाय कें देखलें छेलै, जेना पूछतें रहें, “की ठिक्के कहै छों, लाल दा?” जे पंचामृत बाबू कें समझै में देर नै लागलें छेलै। कहलकै, “तोरा विश्वास नै नी होलौ। जबें नियुक्ति-पत्र ऐतै, तबें तें विश्वास होतौ। इखनी जो, सुती रहें। जो विहनकी गाड़ी पकड़ै लें चाहें, तें हमरे साथ निकली चलियें, नै तें खाय-पीवी कें सुस्ता सें निकलियें, बरबज्जी गाड़ी सें। आरो सुनें, गाड़ी सें उतरी कें सीधे घोर जैवे। मसूदन मंदिर आरो मनार पहाड़ देखलें नै जैयें। फूल के बीहा-शादी बिना कोय भांगटों, दिक्कत के होय जाय, तबें जोन देवता-देवी के जौल चढ़ाना होतौ, चढ़ैतें रहियें, तेल-सिनूर करना होतौ, करतें रहियें।”

सत्ती नें लाल दा के बात चुपचाप सुनी लेनें छेलै। ओकरों चेहरा पर जे खुशी उपटी ऐलें छेलै, ऊ नीचें उतरें लागलें छेलै, जेना आँच पर उबलतें दूध के नीचें सें सुलगतें लकड़ी हटाय लेलें गेलों रहें। बिछौना तक पहुँचला के बादो ओकरों चित्त शांत नै हुए पारलै। हालाँकि लाल दां जौल चढ़ावै आकि तेल-सिनूर के बात कोय पुरानों बात के आड़ लैकें नै कहलें छेलै, मतुर सत्ती के मोन वही घटना सें जाय कें बंधी गेलों छेलै। खटिया पर चित्त लेटली वें देखलकै, एकदम घुप्प अन्हरिया छै, ऐंगना दिस लालटेन लैकें जानाहौ मुश्किल। चिमनी चनकै के भय छेलै। अन्दाज तें छेवे करलै कि ऐंगना के बाद कौन ठियां कुइयां छै, से ओकरों मना करला के बादो, विनय ऐंगना दिस बढ़ी गेलों छेलै, जेना अन्हरिया में ओकरा सबकुछ दिखैतें रहें। कुइयां में बालटी उलटावै-पलटावै के आवाज सें वें जानलें छेलै कि विनय कुइयाँ तांय पहुंची गेलों छै, फेनु कुइयां के पाटों पर बालटी राखै के आवाजो होलें छेलै। ऊ निश्चिन्त होवे करतियै, कि विनय के मुँहों सें बेकल करी दैवाला—माय गे, माय गे—के चीख निकलें लागलें छेलै। दोनों ऐंगना से लोग दौड़ी पड़लें छेलै, आशु बाबू सें पहिलें हुनको पत्निये हफसली-धपसली पहुँचली छेलै।—की होलै, की होलै?—कुहराम मची गेलै। गाँव-टोला के कै लोगो आवी गेलों छेलै, आपनों-आपनों टार्च लेनें। सत्ती तें विनय कें संभालै में छेलै आरो विनय तें सत्ती के गोदी में जना छटपट-छटपट।’

आँखी आरो ओकरो कानों में एक-एक दृश्य, एक-एक आवाज उतरें लागलें छेलै...

“देखों, देखों, आस-पास झाड़ी में कुछ छै तें नै?” कोय बोललें छेलै। कि तखनिये आशु बाबू के नजर बालटी के पानी पर पड़लें छेलै। छरविन्न रं कोय करिया जमीठ कीड़ा पानी पर तैरवों करी रहलें छेलै। हुनको चेहरा पर केन्हों भय आरो परेशानी हठासिये उभरी गेलै। की हुनी हौ कीड़ा कें देखथें सब बात बूझी लेलें छेलै आरो आपनों तीन बैटरीवाला टार्च लेलें बँसबिट्टी दिस झब-झब निकली गेलें छेलै। लौटलै, तें कुछ लौत-पात लैकें। जल्दी-जल्दी पीसी-घसी कें वहीं तरहथी पर लगाय देलें छेलै, जेकरा विनय होने डोलाय रहलें छेलै; जेना गुलेल सें घायल कबूतर आपनों पखना फड़फड़ैतें रहें। लहर तें उतरी गेलें छेलै, मतुर विनय के चेहरा तें दिन-प्रतिदिन करियैले जाय रहलें छेलै, आरो ओकरो जिनगी लें सत्ती रोज मसूदन मंदिर में माथा टेकी आवै, तें कभियो मनारो के विष्णु मंदिर में माथा टेकी आवै, मतुर होलै की? कुछुवो तें नै। विनय बचें नै पारलै। मतुर यैमें भगवानों के की दोष? दोष भैसुरो कें कैन्हें देवै। हुनी तें विनय के देहों के विख दूर करै लें की-की नै कोशिश करलकै। ढेकी-माय के बोलै के की? ऊ तें कभियो कुछ बोली दिऐं पारें—मतुर हेन्है कथी लें बोलतै। जे हुऐं, ढेकी-माय जों ई कहै छै कि समय रहतै जों दादा ई बोली देतियै कि विनय कें भागलपुर लै जाना जरूरी छै, तें कातो बाबू सें दिखाय देतियै। मतुर हुनी तें यही जिद पर रहलै—यहीं ठीक होय जैतै। कातो बाबू आरो अमूलो बाबू की करतै? मानलियै, कि हुनका दुनु कुछ नै करें पारतियै, मतुर दादाहै की करें पारलकै? अकारथ में विनय के प्राण चल्लों गेलै, घास-फूस के लेप लगाय-लगाय कें की होलै ! ढेकी-माय जबें ई कहलें छेलै कि यैमें हमरा तें कुछ आरो बात लागै छै, बड़का खर्च—आरो बड़का खर्चा; के मतलब छै, खेत-बारी बेचै के नौबत। शायत यही लें हुनी भागलपुर में इलाज के बात टारी देलें रहें।... तखनी ढेकी-माय के बात टारी तें देलें छेलियै, मतुर हौ बात हमरों सीना सें निकलें कहाँ पारलै, पोकोही रं मनो के कोना-कोना में फैलते रहलै। ऊ आबें छूटी तें गेलें छै, मतुर एकदममें चोखाय गेलें रहें, यहू कहाँ छै। महीना भरी हमरों आंखी के लोर नै सुखलें छेलै, आरो एक दिन हेनों सुखलै, कि देहों के लहुओ तांय जेना सूखी गेलें रहें...

एतें-एतें बात याद करथें, सत्ती के भरमैलों आँख एकदम्मे खुली गेलै, आँख खुली गेलै, तें कंठ सें सिसकियो निकली ऐलै। सिसकियो हेनों कि ओकरो कानो कें पता नै चललौ होतै, मतुर अनुकंपा के कानों सें ऊ सिसकी छुपें नै पारलें छेलै। वैं आपनों सब ध्यान खींची कें सिसकी पर लगाय देलें छेलै। सोचलकै, ई भ्रम नै हुएँ पारें, पर ऊ नै तें उठलै, नै कुछ बोलवे करलै। ओकरा मालूम छै, कि रात-बेरात कोय किसिम के सिसकी आवे कि हँसी, नै टोकना चाही। हवा-बतास के रूप में प्रेतो उड़तें रहै छै।

सिसकी थमी गेलों छेलै, तहियो अनुकंपा नै उठलै, चुपचाप करवट लैकें सुतै के कोशिश करतें रहलै। एक दाफी तें ओकरो मनो में होलों छेलै कि काहीं सत्तिये तें कोय बातों कें याद करी कपसी नै पड़लौ छै, कैन्हेंकि सिसकी के आवाज वहा दिसों सें ऐलों छेलै।

विहानै सत्ती के जाय वक्तियो तांय वैं ओकरा सें कुछवे नै पुछलें छेलै, नै सत्तियें अनुकंपा सें कुछ कहलें छेलै। बस लालदा आरो बोदी के गोड़ छूवी कें दरवाजा दिस बढी गेलों छेलै। ई पहलों दाफी हेनों होलों छेलै कि माय साथें फूलो नीचें उतरलौ छेलै, आरो पहिलें दाफी एक दूसरें देखलें छेलै कि लोर दोनों आँखी के कोरी में काजल नाँखी ई छोरों सें ऊ छोरों तांय फैली गेलों छै।

(१७)

गाड़ी एक जोरदार ब्रेक के साथ रुकलै, तें गाड़ी सें बैठलों सवारी सिनी समझी गेलै कि तालापुल आवी गेलों छै। हेना कें जखनी जसपुरा सें गाड़ी खुलै छै, तखनिये सें गाड़ी में बैठलों लोग ओंघना छोड़ी दै छै, नै तें समझों तालापुल पर गाड़ी जे रं रुकै छै, ओकरा सें ओंधैवाला के माथों अगला सीटों सें टकरानाहै छै, आरो काहीं बेसी नीनों में रहें, तें टेटनों फुलनै छेलै। यैसैं बचै लेली गाड़ी पर ओंधैवाला सवारी अगला सीटों कें हाथों सें पकड़लें आकि सीटों पर हेने बैठै कि ठेहुनों ठो आगूवाला सीटों सें जाय कें

सट्टी रहें—ताकि कत्तो झटका सें गाड़ी कैन्हें नी रुकें, माथा में चोट नै लागें। रस्तो में कोय हेनो जग्घों के निशानियो तें नै छेलै कि लोगें ऊ देखी कें समझी जाय कि तालापुल नगीच आवी गेलों छै।

हों, सावधानी लें ड्रायवर आपनों सीटों सें लागलों हार्न कें जरूरे कस्सी-कस्सी दबाबें लागै आरो ई काम तें ड्रायवर जसपुराहै सें शुरू करी दै, ताकि तालापुल पर हिन्ने-हुन्ने बैठलों पसैंजर एक ठियां आवी जाय। मतुर सत्ती तें जानी कें खिड़की लुग बैठलों छेलै कि दूरहै सें तालापुल कें देखें पारें। आरो तालापुल के नगीच ऐन्हें, ऊ सावधान होय गेलों छेलै। गाड़ी रुकलै, तें आपनों पोटरीनुमा झोली थामलें गाड़ी सें नीचें उतरी ऐलै।

उतरलै, तें सीधे काली मंदिर दिस बढी गेलै। थान के कुइयाँ पर जाय कें बालटी-उधैन लेलें छेलै, गोड़-हाथ धोलें छेलै आरो थानों पर राखलों धुपौड़ी के राख चुटकी सें उठाय के गेठी में बांधी लेलें छेलै। घुमलै, तें देखै छै, देवदासी ओकरे इन्तजारी में कनेली गाछी के नीचे ठाढ़ी छै।

“अरे तोहें, देवदासी? यही गाड़ी सें उतरला की?”

“नै बोदी, सिंहेसर मालिके के खेत जोगी रहलें छियै, तोरा देखलियोँ, तें हिन्ने आवी गेलियै। बड़्डी दिनों पर देखलियोँ। कहीं बाहर छेलौ की? गाड़ी सें उतरलें छौ।”

“हों, लाल दा के यहाँ छेलियै।”

देवदासी कुछ बोलतियै कि तखनिये आपनों कानों पर हथेली राखी लेलकै। असल में जोर के आवाज ओकरा बर्दास्त नै होय छै। वें देखलें छेलै कि खलासी स्वास्तिक नाँखी छड़ निकाली कें इंजिन में लगाय कें घुमैवाला छेलै, आरो पाँच-छों बार अमैठतियै कि गाड़ी गों-गों करी कें गरजी उठतियै, आरो यहा शोर ओकरा बर्दास्त नै होय छै। गाड़ी गरजी कें आगू बढी गेलै, तें देवदासीं पुछलकै, “एत्तें दिन तें तोहें काहीं नै रुकै छौ, बोदी की फूल के बीहा-शादी लैकें तें....?”

सत्तीं देवदासी के चेहरा देखतें कहलकै, “साँझे घोर अय्यों, सब बात बतैभौं, हों फूल के शादियो-बीहा लै कें बाहर छेलियै।”

“साँझे कथी लें बोदी, इखनिये कैन्हें नी? हम्मू साथें चलै छियोँ, आबें जोगबारें खेत जोगतै, खाय-पीयै के समय तें होय्ये चललें छै। हो वें, मालिक के नौकरवों तें आविये रहलें छै।” देवदासी नें नौकर दिस ऊँच्चों

सुर करी कें कहलें छेलै, “आबें खेत जोगियें टुनटुन, हम्में घोर चलै छियौं।”
आरो ऊ सत्ती के झोली आपनों हाथों में लै लेलें छेलै।

“चलों बोदी; कत्तें दिन होय गेलै, तोरा सें बातचीत करलें।”

आरो दोनों कच्ची रास्ता पार करी कें दौलतपुरवाला बाँध पकड़ी लेलें छेलै। दोनो में सें कोय्यो अकेली होतियै, तें एत्तें हौले-हौले नै चलतियै, मलकिये मलकी कें चलतियै, मतुर इखनी दोनों के कदम एकदम रुकी-रुकी कें बढ़ी रहलौं छेलै। देवदासी एक्के साथ कत्तें-कत्तें बात पूछी लेलें छेलै आरो सत्ती एक्के करी कें सब सियारतें कहलें जाय रहलौं छेलै, “हम्में की, फूल के शादी करे पारतियै देवी, वहू में नौकरीवाला; सब लालदा के करलौं-धरलौं छेकौं। हों, दहेज के टाका तें हमरै जुटाना छेलै, लाल दा कहाँ सें दिऐ पारतै। जहाज रं परिवार कें एक मास्टरी पर चलाय रहलौं छै, वहू भागलपुरों हेनों शहरों में—किराया के मकान लैकें। आपनों बच्चा-बुतरू के पढ़ाय-लिखाय साथें अमर के पढ़ाय तक हुनके बल्लों पर नी। तबें, देवी, तोरों दादाहौ तें सरंग सें हमरों सुख-दुख देखिये रहलौं छौं नी। हुनियो तें हमरा हर विपत्ति सें उबारतें रहलौं छै, आगुओ उबारतैं रहलात।” आरो एतना बोली कें ऊ भसमवाला गेठी आपनों माथा सें लगाय कें फेनु कान्हा सें लटकाय लेलें छेलै।

“बोदी, दहेज के बाद, आरो खर्चा तें होवे करतै। बीहा-शादी तें पहाड़ रं भारी होय छै, असकरे के उठावै पारें ! किसिन भगवान आदमी थोड़े होय छै।”

देवदासी सें सत्ती-घर के हालत छुपलौं नै छेलै, यै लेली वैं ई पूछी बैठलौं छेलै, जेकरा वैं बुराहौ नै मानलें छेलै, आरो वहा रं सुस्तैलौं आवाज में कहलें छेलै, “गाँव में हेनों कोन टोला होतै, जेकरों लें अमर रों बाबूं आपनों जिनगी रहतै कुछ-कुछ करलें नै होतै। आय हमरों घरों में यज्ञ होतै, तें की देहो-समाँगों सें कुछ नै करतै। टाका-पैसा, अनाज थोड़े माँगवै, ननद; ऊ तें जेना होतै, बारात; सिनी के हाथ धुलैवे करवै नी।”

ई बात कहतें-कहतें सत्ती के गल्लों कुछ भारी होय गेलौं छेलै, तें देवदासीं तुरत बातों कें लोकतें कहलें छेलै, “है की बोले छौ, बोदी, तोरों घोर लेली तें सीसे गाँव ठाढ़ों छै। भूलें पारै छै कि गुलाब दा के बाबां, बावाहें नै, परबाबाहों, जब तांय टोला के दस घरों कें पूछी नै आवै कि खाना बनलौं

छों की नै, तब तांय आपनों घरों में अन्न नै ग्रहण करै, है बात की सौ-पचास बरसों के थोड़े छेकै, बोदी, बस बीस-पच्चीस बरसों के तें बात छेकै। आरो तोही केकरो लें की नै करलें छौ, बोदी। जेहनों आपनों छोटों-छोटों दोनों भाय कें लानी कें सेवा-सुसुरसा करलें छौ, के करै छै हेनों। तोहें तें सिद्ध करी देलें छौ कि बड़ी बहन छोटों भाय लें दूसरी माय होय छै। ई वक्ती आखिर दोनों भाइयो तें मदद करवे नी करतौं। बाप रे बाप, हम्मों आपनों आँखी से देखलें छियै, तोरों मंझला भाय के देह-हाथ रोगों सें केन्हों होय गेलों छेलै। धन्य कहौ बड़ों दा के, कहाँ-कहाँ सें जड़ी-बूटी लानै और धन्य तोरों रं बहिन—की रं घाव कें धोय-धोय कें जड़ी-बुटी लगाय छेलौ। तें, दोनों छोटों भाय की हौ सब भूली गेलों होतौं? जों भूलिये गेलों होतौं, तें की, दौलतपुर छै की नै ! टाकाहै की धोंन-दौलत होय छै, बोदी? दिलो दौलत होय छै, आरो जों दिल छै, तें सब कुछ हासिल, जों यहा नै छों, तें सब रहतौं कुछ नै।...की खाली भाइये के? टोला के हेनों कौन घोर होतै जेकरा दुक्खों में तांय समांगों सें साथ नै देलें छौ, टोलाहै के? गाँव भरी के कहों नी। है बात गाँव-टोला भूललों नै छै, बोदी। जरूरत पड़तै, तें गाँव भरी ऐंगना में ठाढ़ों मिलथौं, जेकरो शायत जरूरते नै पड़तै....मतुर है हम्मों कहाँकरो बात कहाँ उठाय कें लै आनलियै। तबें तें एकरों मतलब यही न होलै बोदी, कि ई महीना के खतम होतै-होतै गीत-नाद शुरू ! फेनु महीना खतम हुवै में कत्तें दिन आरो छेवे करै? दस दिन, जे देखतहैं-देखतहैं फुर होय जैतै, दिन तें चील के उड़ान बूझों। होनै कें गोसांय-देवता के गीत तें कल्हें-परसू सें शुरू होय जैतै; नै बोदी? ई अलग बात छै कि गोसांय-देवता के गीत गावै वक्ती शबरी-माय के ऐंगना में अभाव जरुरे खलतै।”

“केन्हें, की भेलै शबरी-माय कें?” सत्ती हठासिये चौकी पड़लों छेलै।

“होलों तें कोय खास नहियें छेलै, बस विहान होथें गाँव छोड़ी देलकै।”

“तहियो?”

“घरों में कचकचों तें करिये नी रहलों छेलै, पुतुहें। कभी हड़िया अलग करी लै, कभियो भाय साथें नैहरा भागी जाय, आरो कभियो रात भरी शबरी सें कचकचों करतें रहै, एक दिन सुनलियै कि पुतुहें एत्तें शबरी-माय

कें सुनैलकै कि वैं घरे छोड़ी देलकै। रास्ता में जे भी मिललै, ओकरा यही कहतें गेलै कि आपने पेट भरना छै नी, ऊ तें कोय गाँव में केकरो दुआरी पर रही कें होय जैते। नौड़पने करना छै तें केकरौ कन जग्घों मिली जैतै। खाना बनाय के हुनर छै, तें मुँहों में दू दाना चल्ले जैतै, आरो ठिक्के में वैं गाँव छोड़ी देलकै, लौटलै नै। लोगों तें यही बुझलें छेलै कि दू, तीन दिन बाद घोर लौटी ऐतै, लेकिन शबरी-माय फेनु घोर नै ऐली। बुढ़ापा रों देह, जानें केकरो दुआरी पर केना खटतें होती।” कही कें देवदासी एकदम सें चुप होय गेलों छेलै आरो सत्तियो। बस चलतें रहलै, चुपचाप। यहाँ तक कि सत्ती के घोर के नगीच आवी गेलों छेलै।

देवदासी रुकलै आरो आपनों अंचरा दोनों हाथों के बीचों में लैकें सत्ती के सामना गर्दन झुकाय लेलें छेलै, तें सत्तियों आपनों हाथ आशीर्वाद के मुद्रा में ऊपर उठाय देलें छेलै।

(१८)

सत्ती के गाँव लौटवों भर छेलै, कि टोला-टोला में अनुमान रों कथा-खिस्सा रंगें लागलै। जत्तें लोग, ओतहै बात, “चिंता फिकिर सें केन्हों करियाय गेलों छेलै बेचारी। बोदी, आबें निष्फिकर होलै, तें मनो हलफलैलों लागै छै। कोय मिलै छै, तें केन्हों हुलासों सें मिलै छै, चाहे कोय रहें कि। यहा बोदी, आठ-दस महीना सें केन्हों झाड़-झंखाड़ होय रहलें छेलै।”

“से तें ठिक्के कहै छैं, वासमती; भगवाने सब्भे के दिन घुरावै छै। तोहें आठ-दस महीना के बात करै छैं, हम्में तें सत्ती बोदी कें जिनगी में वहा दिनों सें डेव मारतें देखलें छियै, जोंन दिन गुरुदादा के ठठरी उठलें छेलै; गोदी में चार-चार ठो बुतरु। अन्तरे की होतै चारो भाय-बहिन में? बेसी-से-बेसी दू सालों के अन्तर। यही नी। मतरकि हियाव देखों बोदी के। बच्चा-बुतरु के दुख देखलकै, तें यहू भूली गेलै कि हुनको माथा पर नै आबें सिन्दूर छै, नै हाथों में चूड़ी। खुरपी-कुदाल उठाय लेलकै आरो आपनों बारी सें लैकें

घरों के दीवारी पर लोंत-पात उगाना शुरू करी देलकै। की पूसों के ठंड आरो की बैशाखों रों घाम। बोदी के रंग सिनुरिया आम नाँखी छेलै, वही धूप आरो ठंडा सें कारों लागें लागलों छेलै। खेती-बारी में हुनकों है मेहनत देखी कें कोयरी टोला के सवासिनो सिनी दंग रहै।”

“ठिकके बोलै छों। बीड़ियो तांय बनाय के काम करलकै; केकरों वास्तें? बुतरुवे सिनी लें नी। ओकरहौ पर देखों, एक बेटा जुआन होय सें पहलें मुँह मोड़ी गेलै। करेजों कूटी कें रही गेलों छेलै, बोदी। शायत एत्तें नै टुटतियै, जत्तें मंझला बेटा के नुकसान सें टूटी गेलों रहै। जे भी कहों, भैसूर आरो बड़ी गोतनी लागले रहलै, बोदी के पीछू-पीछू, वहू दू-चार महीना नै, सालो-भर, जब तांय, सत्ती बोदी अपना कें ठीक सें संभाली नै लेलकै।

“बड़ों घरों के यहा तें पहचान होय छै, बासमती। बड़ों घोर, की जात आरो धोन सें बनै छै, शील सें बनै छै, जे वैद्य बाबां पैलें छै, आरो वहा रं हुनका बोमाँओ मिललें छै। कटियो टा कोय कम-वेस नै। जो हेनों नै रहतियै, तें की समझै छैं, सत्ती बोदी है जहाज संभालें पारतियै? कत्तों हियाववाली कैन्हें नी रहें। जनानी तें जनानिये छेकै, विपत्ति में मरदाना के मदद नै मिलें, तें समझों बीच गंगा में नाव के पेंदा में छेद। नाव कें भाँसन्है छै, डूबन्है छै।”

“देखलौ नै, जॉन दिन बोदी काँखी में पोटरी समेटलें आपनों दुआरी पर उतरलें छेलै, केना हुलसी कें बड़ी बोदी ऐलें छेलै, द्वार खोलै लें, तखनी तें हम्मों वाँही छेलियै, विसु के बाबू के दवाय लानै लें गेलें छेलियै। शायत बराण्डे सें बड़ों दां बोदी कें एकपैरिया रास्ता सें ऐत्तें देखी लेलें छेलै, से हमरा कहलें छेलै—देखै छियै, बलजीत-माय आवी रहलें छै, तोहें एक दवाय लै जा, दू दवाय सँझकी वक्ती आवी कें लै जैय्यो—आरो हुनी बड़की बोदी कें बोलाय कें सत्ती बोदी के आवै के बात बतलें छेलै। घंटा भरी तें हम्मों वहाँ रुकले होवै। ओत्ते दिनों के बाद छोटी बोदी आवी रहलें छेलै, विना सामना सें देखला घोर केना निकली जैतियै।” टिकुलियां हाथ चमकाय-चमकाय कें कहलें छेलै।

“नै पूछों दीदी, कौन टोला के दू-एक जनानी एकेक करी कें नै ऐलें छेलै आरो सत्ती बोदी हुलसी-हुलसी सबकें बैठै लें कही रहलें छेलै। भला ओत्तें-ओत्तें जनानी कें कहाँ बैठैतियै। एकटा बड़ों रं खटिया निकाली

कें ऐंगनाहै में बोदीं बिछाय देलें छेलै, वै पर वहो सुगनियो बैठली छेलै, जेकरा ऊ घरों में कभियो पुरानों होतें नै देखलें छियै। ठीक कहै छियौं दीदी, आरो गाँव के तें नै कहें पारियौं, मतुर आपनों गाँव अभियो वहा रं—वही गाँव छेकै। कहै के सत्ती बोदी सबकें खटिये पर बैठै लें कही रहलौं छेलै, मतुर जे भी जनानी आवै, बस देहरी पर जमी कें बैठी रहै, आरो देहरियो की भरैवाला छेलै, उत्तर, दक्खिन, पच्छिम तीनो दिस देहरिये-देहरी। गनगनाय रहलौं छेलै बोदी के ऐंगनों। हेनों दिरिश शायते हम्मं ऊ घरों में कभियो देखलें होभै, पूजा-पाठ के बात अलग छै। आरो पहिलौं दाफी यहू देखलियै कि बड़की बोदी सें हुनी हर पांचे मिनटों में की रही-रही बात करै, जेना कहीं कोय भेदे नै रहें, दीदी।”

“भगवान करे, यही बात हुएँ, मतर बासमती, आबें समैय्ये बतैतै कि ई असमय के बारिश कलें नमी दिएँ पारतै; दिएँ पारतै कि छिमिहन के बबादि करी कें छोड़तै।”

“तोरो शंका बेकारो नै कहलौं जावें सकें। है तें हम्मू जानै छियै कि सत्ती बोदी के मॉन आय तांय कोय नै जानें पारलें छै। है नै कि हुनी काँही सें केकरोँ प्रति दुराव भाव राखै छै, है तें कभियो नै, भगवान करे सब जनानी के सोभाव हेने हुएँ, मतुर कोय बात बोदी के मनोँ में जोँ कुछ के गल्थी जाय, तें ई बात हुनी कभियो भूले नै पारै, आरो यही हुनका जेठेँबैशाखों के हवा-बतास बनाय दै छै। आरो तखनी केकरोँ नै देह-हाथ झुलसी जाय।”

“आबें एतें बात कथी लें सोचना छै। सत्ती बोदी कें अगहनी धान रं लहलहावें, आरो की। घोर-परिवार लें बोदी भले कुछ रहें, गाँव-टोला लेली ई बोदी तें मरला धानों पर झमझम बरखा।”

“से तें सहिये में। आरो एक बात जानलौ कि नै?”

“की?”

“चमत्कारे कहों। हिन्नें ई बोदी गाँव लौटलै आरो दोसरे दिन शबरियो-माय। छेकै नी चमत्कार ! कहै छै, सत्ती बोदी आपन्है सें बोलाय लें गेलौं छेलै, भला बोदी आपन्है सें जाय, तें रुसै-गोस्सावै के समैये कहाँ बचे छै। ऊ तें हम्मं कल्हे जानें पारलौं कि फूल के बीहा पक्की होय गेलौं छै आरो है वक्ती शबरी-माय के गीत नै गूँजे, तें वहा भेलौं कि बिना गोटा फुलैलै, अमराई के बिना मंजरलै आरो कोयली के बिना बोललै, चैत में

पाहुनगिरी ।”

बासमती के ई बोलना छेलै कि सब्भे एक्के साथ आपनों-आपनों मुँहों पर अँचरा राखी, ठठाय केँ हाँसी पड़लै ।

(१६)

आय थुबड़ों छेकै, कल्हे बीहा के दिन । दू दिन सेँ सत्ती के आँखी में पुरनका एक-एक दृश्य घूमी रहलौ छै—अठारों साल पहिलकों आपने बीहा के दृश्य...केना लालदा काँशों रों जामों में डंडीवाला पाँच-पाँच पान, पाँच सुपाड़ी, छोहारा, काजू, किसमिस, नारियल, कागजी बादाम, चाँदी रों पान, चाँदिये रों सुपाड़ी आरो जैमें पाँच सिक्का राखलें, एकरों साथे लड़का के पाटवस्त्र, लाल करधनी, दुल्हा-माय के साड़ी, धान-दुबड़ी साथें पिसलों हरदी, घी, पाँच प्रकार के मिठाय, पाँच प्रकार के फॉल लेलें नाऊ-पुरहैत साथें यहाँ गाँव निकली गेलों छेलै; यही ऐंगना में केना छड़ौला लिखलौ गेलों छेलै, जेकरा पर सिन्दूर के टिक्का, वही पर पिठाली सेँ पोतलौ कलश राखलौ गेलों छेलै, कलश पर आमों के पल्लव, धूप-दीप । सत्ती आपनों होयवाला दुल्हा केँ देखलें छेलै, जे पाटवस्त्र पिन्ही केँ वहीँ पर आवी केँ बैठी गेलों छेलै आरो पंडी जी स्वास्ति पाठ करै में निमग्न ।

वहा सब तेँ अभियो होय रहलौ छै—आरो वहा रं फूलमती के बाहर निकलवों बंद होय गेलों छै ।

आय तेँ थुबड़ों छेकै । वर पक्षों के ओरी सेँ जे पाँच चित्ती कौड़ी आरो गिरहों लागलौ हरदी ऐलौ छै, ऊ हरदी के उपयोग आय उबटन लेली होतै । मतर ऐंगन भरी जनानी के नजर जों कहीं पर रही-रही टिकी जाय छै, तेँ वैद्य आशु बाबू के पत्नी पर, यानी गाँव भरी लेँ बड़की काकी, बड़की माय, बड़की बोदी आरो सत्ती के गोतनी यानी प्राती-माय—लाल पाड़ के हरदियानों साड़ी में एतेँ फवी रहलौ छै कि मत पूछों । टोला भरी के अलग-अलग घरों के पाँचो ऐभाती में प्रातीये माय सबसे ज्यादा शोभी रहलौ

छै, सत्तर बरस के होय गेलों छै, तें की। की माँगों में सुरका सिनूर आरो गोड़ों में लाल टेस रंग। खाली शर्बते पीवी के सबटा विद पुराय में लागलों छै, मजकि जरिये टा की मुँहों पर शिकन दिखी जाय। प्रातीये माय, माँटी के चुल्हा पर माँटी के बर्तन राखलें छेलै, फिरु पाँचो ऐभाती मिली कें कड़ाही में उबटन के मसालो कुटलें छेलै।

सत्ती ऐंगना में बिछलों खटिया पर बैठलों-बैठलों सबकुछ देखी रहलों छै, रही-रही कें कुछ-कुछ बतैवो करी रहलों छै।

वें देखै छै—उबटन के मसल्ला सिलपाटी सें पीसलों जाय रहलों छै, तें एकदम सें विभोर होय जाय छै।

सरसों तेल में उबटन मिलाय कें ऊ पीतलिया थाली पर राखी देलों गेलों छै आरो वही थाली में पाँच-पाँच सुपाड़ी, पान, मिठाय, साथें सिनूर, फूल, बेलपत्तर साथें, शिव-पार्वती रों मोर-पटवासी।

सत्ती के नजर चारो दिस टुकनी रं उड़ी रहलों छै। कभी नया चुल्हों पर लब्बों बर्तन में पुरहैत के खीर बनैवों, तें कुलदेवता कें भोग लगैवों आरो जल्दिये ओकरो नजर मड़वा पर बैठली फूलमती पर जाय कें ठहरी जाय छै, जेकरो आँखी कें पाँच ऐभातिन पान पत्ता सें मुनलें होलै छेलै। कमली माय, साथें अझोला फूल के हाथों पर उबटन फेरी रहलों छेलै, आरो जेठानी शंख फूकै में बेहाल।

सत्ती के कानों में अठारों साल पहिलकों उलू उलू के ध्वनि गूंजी उठलै, तें ओकरो आँख आपने आप बंद होय जाय छै। बीतलों बात घुरी-घुरी आवै छै—लाल पाड़ के साड़ी में ऊ लजौनी बनलें दौलतपुर उतरली छेलै। ससुराली के आपनों घोर के आपनों ऐंगन ! जेठानिये विदकरनी बनली छेलै—ऐलता सें गोड़ रंगलों, सुरका सिनूर आरो लाल-पीरों साड़ी में दगदग गोरी-लारों केन्हों शोभी रहलों छेलै।

सत्तीं एक-दू दाफी आपनों आँख झपकैलकै, जेना नींद कें तोड़ै के कोशिश करतें रहें। नजर घुमाय देखैलकै, की रं अमूल, अजय, अमरजीत, मडवा बनावै में संझकिये बेरा सें लगी गेलों छै, मडवा के बीच में धान बिछैलों गेलों छै, जै पर जल सें भरलों कलश, फेनु कलशों पर आमों के पल्लव, ...

देर रात तांय जेठानी साथें गोतिया भरी के ऐभातिन गीत-नाद सें

रात कें जगैतें रहलौं छेलै ।

नै चाहतौं, सत्ती कें आपनों बीहा के याद रही-रही कें आवी जाय छै; लालदा के दोनों छोटकी बेटी सुशीला आरो उमा हैय्यो जोड़ी बनलौं छेलै । जबें पीठाली आरो सिनूर सें रंगलौं ढकनी में चौर, हल्दी, चित्ती कौड़ी राखी कें दोसरों ठकनी सें ओकरा हरदियानों कपड़ा सें बंद करी हैय्यो जोड़ी के कमरों में बांधलौं गेलौं छेलै, साथे साथ पटवासी पहनैलौं गेलौं छेलै, तें केना दोनों खिलखिलाय पड़लौं छेलै...चचेरी मंझली बोदी नाक के ओरी सें लैकें माँग तांय सुरका सिनूर लगाय कें बिलोकी बुललौं छेलै, चचेरिये छोटकी बोदी सूप के चारो किनारी कें लाल रंगों सें रंगलें छेलै, हुनिये सूपों में पान, सुपाड़ी, मिठाय, उबटन, आरतो पत्ता, धान, दुबड़ी, शिव-पार्वती के मोर-पटवासी, सिनूर, राखी कें हौ सब पाटवस्त्र सें ढकलें छेलै...जखनी पाँच ऐभातिन साथें हैयो जोड़ी शिव-मंदिर दिस निकललौं छेलै, ओकरों फोटू तें अभियो आँखी में साफ-साफ छै ।

सत्ती कें ऊ सब कुछ याद ऐलै कि केना कोहवर में पीठाली सें ओकरों तरहथी आरो पाँचो आँगरी के छाप, पाँच जग्घों पर उतरवैलौं गेलौं छेलै; केना ओकरा सें ऐभातिन सिनी के खोयछा चूड़ा-बुनिया सें भरवैलौं गेलौं छेलै; केना खाली मड़वा कें गोबर सें निपलें छेलै; केना छड़ौलौं लिखलें छेलै आरो फेरु याद ऐलै कि केना लाल दा, भुखले रही कें नान्दीमुख पर बैठलौं छेलै, हुनकों सिवा पाँच पुश्त के नाम आरो के जानतै होतै ।

सत्ती, नै ऊ घरभरी भूललौं छै, नै हस्तक बटाय, नै बसोरों भात के रसम, जेकरा लाल बोदी पूरा करलें छेलै, नया चूल्हा पर मिट्टी के नया बर्तन आरो वही बर्तन में विलोकी में मिललौं चौर-दाल पकैलौं गेलौं छेलै, बसोरों साड़ी में लाल बोदी के हौ हुलास केना भूलें पारें, ऊ द्वार पर बारात लागलौं छेलै आरो मूरीवाली दादी के कंठ सें गीत झरें लागलें छेलै,

कौनी नगरिया सें ऐलै बरयतिया हे, रस भीजी-माँती

अवध नगरिया से ऐलै बरयतिया हे, रस भीजी माँती

कि तखनिये शबरी-माय के गीत एंगनों में लहराय गेलै, गोंसाय गीत शुरू होय गेलौं छेलै,

संझाहै बड़की हे मैया

संझवैये घर जाय कें हे

कथी केरो दियरा हे मैया
कथी केरों बाती हे
कथी केरों तेल हे मैया
जरै सौंसे रात हे
सोना केरों दियरा हे मैया
रेशम सूत-बाती है
सरसों के तेल हे मैया
जरै सौंसे रात हे
जरै जे लागलै दियरा
झलकै छै वाती हे
खेलें लागलै सातो बहिनो
चार पहर रात हे ।

सत्तीं ऐंगना के चारो दिस आपनों आँख घुमैलकै । सँझकी बेरा
बीती गेलों छेलै, आरो मड़वा लुग बैठली ऐभाति सिनी शबरी-माय के सुरों
में सुर मिलाय रहलें छेलै । कम-से-कम पाँच गोसांय गीत तें गैले जैतै । ऊ
वहीं पर बैठली-बैठली गीत के पंक्ति दोहरैलें छेलै,
खेलें लागलै सातो बहिनो
चारो पहर रात हे ।

(२०)

फूलमती टोला भरी के कनाय आपनों ससुराल चल्लों गेली, मतुर
ओकरो गेला पर गाँव भरी में जे हँसी-ठट्ठा के फुलझड़ी-पटाखा छुटी रहलें
छै, ऊ रुकै के नामे नै लै छै ।

हे बात नै छै, कि ऐकरो जानकारी सत्ती, आशु बाबू आकि आशु
बाबू के कनियैनी के नै छै । छै आरो खूब छै, मतुर ई बातों पर नाराज होय
के बदला हिनकौ सिनी के हँसी आवी जाय छै, तें मुँहों पर हाथ रखी के
भीतरे-भीतर हँसी लै छै ।

बात ई छेलै कि बारात जौन गाँव सँ ऐलों छेलै, वहीं गाँव के हाई इस्कूली में फूलमती के पंचामृत मामा यानी कि सत्ती के लाल दादा, मास्टर छेलै, बड़ा रौववाला मास्टर आरो ऊ गाँव के हेनों कोय छवारिक नै छेलै, जे हुनको चटिया नै होतै।

“जबे बारात दुआरी पर पहुँचलै, तें बाराती के संख्या देखिये कें आशु बाबू के माथों चकराय गेलै। करार होलों छेलै कि बाराती में पच्चीस ठो सँ बेसी आदमी नै ऐतै आरो आवी गेलों छेलै पचास सँ बेसिये। वहू में बूढ़ों-बुजुर्ग तें आठ-दस सँ बेसी नहिये होतै, बाकी सबठो एकदम छोर-छवारिक। आबे ई छोर-छवारिक कें की मालूम कि ऊ सब जोन दुआरी पर बाराती बनी कें उतरलों छै, ऊ घोर माट साहब पंचामृत बाबू के मंझलकी बहिने के घोर छेकै, आरो फूलचंती माट साहबे के भैगनी। बाप रे, बाप, जखनी दुआरी पर बारात लागलै, तखनी ऊ सब के नखरा देखतियें, ई लान, हौ लान, ई नै छै, हौ नै छै! हेने लागी रहलों छेलै; जेना घरों के दीवार छप्परे तोड़ी-ताड़ी कें राखी देतै।

ई बात के खबर पंचामृत बाबू कें लगना छेलै कि आशु बाबू के दुआर छोड़ी, जनवासा दिस लपकी कें चल्लिए तें देलकै। अरे की कहियौ, हौ दिरिश के बारे में। टीन बजैला पर बानर कें छप्पर-सँ-छप्पर आकि गाछी-सँ-गाछी पर उछलतें तें देखले होभें, ओन्है कें छोड़ा बाराती सिनी उछल-कूद करी कें हिन्ने-हुन्ने भागना शुरू करलकै; मत पूछें, कोय, विसविट्टी दिस भागलै, कोय नद्दी दिस, जेना बानर केकरो हाथों में गुलेल देखी लेलें रहें।” कहतें-कहतें सिद्धी एकदम ठठाय कें हँसी पड़लै। तें साधुओ कें नै रहलों गेलै। गुलेलवाला बातों सँ जेना ओकरो पेटों में बाघी पड़ी गेलों रहें।

“अरे तोरा सिनी तें एतन्है नी जानै छै, आगू के आबे हमरा सँ सुन” माधो मिसिर नें आपनों दोनों आँख नचैतें हुएँ कहलें छेलै, “बाराती के खाय के टैम होय गेलों छेलै, मतर बाराती के छोड़ा सिनी कथी लें घुरी कें ऐतै। कुछ जे पंचामृत बाबू के चेला नै छेलै, ऊ तें घुरलों छेलै आरो जतना पूड़ी, कचौड़ी, बुनिया लै जावें सकै छेलै, लेलें छेलै, मिट्टी के गिलासों में तरकारी लेलें नदी पहुँचलों छेलै। भागलों बाराती सब वही सब खाय-पीवी नदिये के रेतों पर आपनों-आपनों गमछी-चादर बिछाय कें सुती रहलै, आबे जरूरत छेलै तकिया के” कहतें-कहतें माधो मिसिर ठठाय कें हँसी पड़लै।

“अरे यैमें हाँसे के तें होनों बात नै छै।” सिद्धि कहलकै, तें माधो बोललै, “हाँसे के की बात छै? जानै छें, हौ छौड़ासिनी तकिया बनाय लेली जे लकड़ी बिछी-बिछी आनलें छेलै, ऊ सारा परकों बचलों-खुचलों जरलों लकड़ी छेलै। बिहानै पता लगथै, तें सब नद्दी के धारा में बतख नाँखी मूड़ी गोती-गोती कें नहाय रहलें छेलै। मत पूछें, ऊ दिरिश।” आरो ई कथा पर माधो साथें सिद्धि, मंगलिया, चेथरी आरो सकीचन खूब ठठाय पड़लें छेलै।

“वहीं सें नी, जे खाना बाराती वास्तें बनलें छेलै, ऊ टोला-पड़ोसों के लोग थरिया भरी-भरी लै गेलें छेलै, सत्ती बोदी कें कत्तें दुख तें होलें छेलै।”

“मतुर बोदी सें बेसी तें हुनकों लालदा दुखित होय कें गेलें छै।”

“से बात तें तोहें ठिक्के कही रहलें छें।”

“लड़की विदाय के ठीक दोसरो दिन के बात छेकै। सब कें आचरज होय रहलें छेलै कि अमर के पंचामृत बाबू आखिर अभी तांय रुकलें होलें कैन्हें छै? जो सरसतियां है बात विदेसर कें नै बतैतियै कि छोटकी बोदी अमर कें कमल मिसिर के यहां छिपाय ऐलें छै, तें बातो खुलतियै की?”

“एकरो भनक कुछ हमरो लागलें छेलै, बात की छेकै?” मंगलिया गोड़ पसारतें बोललै।

“बात ई छेलै कि पंचामृत बाबू अमर के बीहा के बात चलाय देलें छेलै, ओकरो दहेजों सें जे रकम मिलतियै वही सें फूलमती के बीहा में होलें खर्च आरो दहेज के बकाया टाका कें चुकाय के बात छेलै। हुनी यहू नै चाहै छेलै कि वैद्य दादा के जमीन में बंटवारा हुएँ, जे पुस्तैनी, खेतिहर जमीन छेकै, हौ, वैद्य दादाहै के पास रहें, मतुर सत्ती बोदी है सब एक्को बात लें तैयारे कहाँ छेलै। बोदी कुछ बोललै तें नै, बस अमर कें कमल मिसिर कन दू दिनों वास्तें बिठाय ऐलै। पंचामृत बाबू कें बात समझें में देर नै लागलें छेलै आरो हुनी हौ दिन बिना खैले-पीले दुआर छोड़ी देलकै, एकदम भोरे-भोर। जानैवालां तें जानिये लेलकै। जानतियै केना नै, आखिर अमर के दू दिन कमल पाठक के यहाँ नुकाय कें रहै के राज कै दिन छुपतियै?” अब तांय पालथी मारी बैठलें माधो मिसिर नें गोड़ सीधा करतें कहलें छेलै।

“आरो वहा दिन से बड़ी बोदी के ई घरों में आन-जान भी कम होय गेलों छै, दिखावै के कत्तो बड़की बोदी आरो लपकी बोदी एक दूसरा के घोर ऐतें-जैतें रहें।” मंगलियां आपनों माथों पर हाथ फेरतें कहलें छेलै।

“होना के जे कहें, मंगलिया; अमर आरो बलजीत के मनो में जरियो टा भेद नै ऐलों छै, बड़का बाबू से दोनों के पहिलके नाँखी व्यवहार छै, बलुक कुछ बढ़िये के। आखिर एतें पढ़लें-लिखलें छै कथी लें, आबें तें अमरजीत के सरकारी नौकरियो लागैवाला छै, गाँव भरी में यही बात महीना भरी से घुमी रहलें छै; आखिर केन्हें नी होतै, ई तें गाँव भरी में पहिले दाफी होतै कि कोय छवारिक सरकारी नौकरी में जैतै, वहाँ में बिहारों के नै, दिल्लीवाला सरकारों के नौकरी में। सुनै छियै, रेल चलैतै। बड़का बात तें छेवे नी करे, मंगलिया। यहाँ तें मोटर हाँकैवाला ड्रायवर के मिजाज देखवे करै छें, की रं गनगन करै छै, तबे रेल चलावैवाला के मॉन केन्हों होतें-होतै, सोच्है पारै छै।”

“माधो, जों अमरजीत बाँसी, भागलपुरवाला रेल चलावै, तें मजा आवी जाय। की मजाल, कि कोय टीटी सी, बी टी सी हमरा सिनी से टिकिट माँगी लौ। मजे आवी जाय। रोज फिलिम देखी के कचकचिया लौटियै।”

“कचकचिया नै, दौलतपुर बोलें, बेवकूफ।” माधो झिड़कतें कहलकै, “सुनै छियै, दहेजों में ढेरे टाका मिलैवाला छेलै, बड़काहै मामा ठीक करलें छेलै। सब बात पक्कियो होय गेलों छेलै।”

चेथरी कोय बातों पर कटियो टा ध्यान देले बिना कहलें छेलै, “तें सत्ती बोदी हेना केन्हें बगदी गेलै?”

“अरे, के दाफी तोरा बतलैवौ कि लछमी दां भरलों सभा में हाथ उठाय के कहलें छेलै, कि हुनी आपनों कोय बेटा के दहेज नै लेतै।”

“अरे, तें ई बात गोस्साय के बोलै के की जरूरत छै, आरो कौन ई बात जेनरल कॉलेज के छेकै, जेकरा याद रखला से सरकारी नौकरी मिलिये जैतै।”

चेथरी के उखड़लों मिजाज देखी के मंगली नरमैतें हुएँ कहलकै, “से तें नहिये छै, मुदा गाँव, टोला में पहिलों दाफी हेनों प्रतिज्ञा कोय करलकै, तें ओकरा भुलैलों केना जावें पारें।

“से तें नहिये, मतर हमरा लागै छै, है जे कुछ होलों छै, आरो

ओकरों जे नतीजा निकलतै, ओकरहौ लोगें याद राखतै।” अजनसियां आपनों मूड़ी तनी-तनी दायां-बायां हिलैतें हुएँ कहलें छेलै।

“आबें हमरा सिनी कें ये बातों सें की लेना-देना छै, आरो जों कुछ मतलबो छै, तें सत्ती बोदी सें, हिनकों लाल दा आकि हरा दा सें की लेना-देना। देखलें, हमरा सिनी कें मॉन देखिये कें बोदी ऐंगना में मछली परोसै सें मनाहियो नै करलकै, की रं टूटी पड़लौं छेलै खवैय्या—बीस सेर के एक रोहू आरो खवैयो बीसे। परोसै भर के देर छेलै आरो जेना मछली-अंडा कें पंचोल कीड़ा चट करी जाय, होन्है झोर सहित कुटिया—सब मिली कें चट करी ऐलौं छेलियै। अरे, बाप रे बाप, पहिलों दाफी तोरों घटोत्कच नाँखी गलफरों खुलतें-बंद होतें देखलें छेलियौ।” कही कें सिद्धि हँसलै, तें मंगलियां लगले कहलकै, “आरो तोरों मुँह तें सीपी रं सिटलौं छेलहौ, की? आँख बंद करी मुँहों में हेनो डाललें जाय रहलौं छेलहै, जेना हवनकुंड में आपनों गणेशी, मंतर पढ़ी-पढ़ी हविश डालै छै। मछली आरो सिद्धी; जेना विलाय आगूं सुंघठी।”

अबकी सिद्धी कुछ नै बोलें पारलें छेलै, बस एतन्है टा हौले-हौले बोललौं छेलै, “घोर जो। मौगी, खटिया बिछाय कें बैठली होतौ” आरो नद्दी दिस सिधयैले कि मंगलियां ओकरा रोकतें कहलकै, “एतना तें बतैतें जो, सिद्धि कि है मछलीवाला सहयोग केकरों दिसों सें छेलै?”

“अरे, केकरों दिसों होतै, वैद्य दा छोड़ी कें आरो के है इंतजाम करलें होतै। तोहें की समझै छै, विरिज नारायण बाबां करलें होतै। अरे, ठनका सें खाली जंगल-खलिहान जरें पारें, ओकरा सें चूल्हों नै जरै छै।” ओकरों उत्तर सुनी कें माधो तक कें हंसी आवी गेलौं छेलै।

(२१)

ई बाँही के कोय फुसरी नै छेलै, कि अंगा सें छिपाय जैतियै, ई तें

कपारों परकों टेटनों छेलै, जे पचकै के बदला दिन-दिन बढ़ले जाय रहलौं छेलै ।

महीना भरी सत्ती गाँमे में रहलौं छेलै, केकरो ऐंगन-दुआर ऐवों-जैवों लगभग छुटिये गेलौं छेलै । घरे के काम में मॉन लगैलें राखै । नै हुऐ तें बारी सें मिट्टी कोड़ी लै आनै आरो ओकरामें भूसौं आरनी मिलाय के देर तांय पिटना सें पिटतें रहै, नहाय में भले जत्तें देर होय जाय । फेनु जगह-जगह सें फाटलौं भीत भरिये कें नहाय लें जाय । पुरानों घोर; कै साल सें तें हिन्ने-हुन्ने सें ढनमनैलौं-भसकलौं दीवारी पर माँटी के लेपो नै चढ़ैलौं गेलौं छेलै ।

सत्ती सोचलें छेलै, फूलमती के बीहा सें पहिलें वैं जरूरे भीत आरनी भरवाय लेतै, होलै तें माँटी सें ढोरवैय्यो लेतै, मतर आरो सब सरंजामों में ऊ हेने उलझलौं रहलै कि एकरों दिस ध्यानो नै गेलै । आबें जबें आरो कोय काम नै दिखावै छै, तें पाँच-छौं रोजों के बाद दू-चार बाल्टी माँटी कोड़ी लै आनै छै; एक दिन गूथै छै आरो दोसरो दिन दीवार के दरार, छेद कें मूंदना शुरू करी दै छै । असल तें बड़के कोठली के चिंता छेलै, जेकरों चारो कोना के चारो दीवार, जे साल, दू साल पहलें एकदम सटलौं-सटलौं रहै, ऊ वर्षा-पानी के कारण ऊपर-ऊपर सें अलग-अलग दिखावें लागलौं छेलै । पहिले तें ओकरूहै भरना जरूरी छेलै, से ओकरों दिन आसानी सें कटी जाय ।

अकेली होतियै, तें आपनों लें खानाओ नै बनैतियै, मतर घरों में दू-दू बेटा छेलै, भला चूल्हा-निवारण केना होतियै ।

सोमवारी, मंगलवारी के उपास तें ओकरों जगजाहिर छेलै, मतर है कोय्यो नै जानै छेलै, कभियो-कभियो तीन-तीन दिन तांय वै मुँहों में कुछ नै दै, खाली थोड़ों-सा गुड़ आरो लोटा भर पानी । तभियो चेहरा के चमक होन्हे, कि कोय्यो कुछ पकड़ै नै पारै ।

तखनी उपास में रही जाय के कारण छेलै, आबें तें बड़ों बेटा एत्तें पढ़ी-लिखी लेलें छेलै कि ऊच्चों इस्कूलो के लड़को कें पढ़ावें पारें ।

भोरे आरो साँझ दू बेरा सत्ती के ऐंगन में छोटों रं इस्कूले लागै छै । दू-तीन टोलों के चार-पाँच घरों के बुतरु आवी जाय छै, आरो मूड़ी हिलाय-हिलाय कें घंटा भरी अक्षर घोक्तें रहै छै । विहनकी वक्ती अक्षर-ज्ञान करैलौं जाय छै,

क करमैता,
ख खरखांही,
ग गलसेदी
घ घटाही,
ङ पुकारी,
च चरवाहा,
छ छटपहिया,
ज जतकुट्टा,
झ झपलेलौं,
ञ इनरासन आसन-वासन
सें लैकेँ, आगू के अक्षर-ज्ञान चलतै रहै,
य यजमानी, र रसगुल्ला,
ल सेँ लकड़ी, व वसूल्ला
स सरकंडा, ह हरमुनियम
चार नचनियां दू-दू कनियां,
एक बराती गाव पराती ।

आरो सँझकी वक्ती एक सुर में मूड़ी हिलाय-हिलाय केँ बुतरू
पहाड़ा रटे—

एक एका कोठी रोजन्नी,
दू दूतिया चाँद,
तीन तिकौनी,
चार बेल
पांच पंडा,
छेँ सेँ रस,
सात समुन्दर,
आठ कुनीला,
नों विग्रह,
दस मासे,
ग्यारह चनरमा,
बारह आदि

तेरह भुवन,
चौदह हजार,
पन्द्रह तिरीश,
सोलह सिंगार,
सत्रह संत,
अठारह पुरैत,
उन्नीस काया,
बीस बोर,

जाहीं मन होलों वाहीं घोर ।

घरों के ई माहौल देखी कें सत्ती कें आरो कुछ दिस ध्याने नै जाय, जाय तें बस कुछवे देर लेली । यहू बात छेलै कि भोरे-साँझ के ई पढ़ाय सें ओतना टा टोला-पड़ोस सें चौर-दाल, तरकारी आरनी आविये जाय कि ओकरा खाली आँचे भर के चिंता करै लें लागै । एंगनों तें साँझकिये सें झकझक करै लागै, जे आवै—लालटेन लइये कें आवै ।

मतर आयकल सत्ती के जे चिंता बेसी बड़ी गेलों छै, ऊ अमरजीत के बीहा के बात लैकें । ओकरे बड़की बहिन के छोटका बेटा हीरू ऐलों छेलै । कही गेलों छै, “मौसी, ई घोर छुटी गेलौ, तें यही बूझिहै, कि हेनों घोर आरो हेनों लड़की फेनु दोसरो नै मिलतौ । की सोचै छैं, ऊ परिवार ई घरों में बेटी देवो करतियै की; ऊ तें बिना दहेज के बीहा के बात छै, ये लेली मॉन बनैलें छौ । होना कें दहेजो दैकें होनों लड़की मिली जाव, तें भागे बूझें, मौसी । जल्दिये बतैय्यें, जे सोचवे । लड़कीवाला रुकै लें तैयार नै छै, तीन जगह लड़का देखलें छै, सब कमियां, दू तें रेलवे में कामे करी रहलें छै, अमरजीत कें तें लागतौ—दिल्ली दूरे बूझों । कै किसिम के जाँच होना बाकिये छौ; तब्बैं नी । आरो हों, मौसी, हम्मों रुकवौ नै । जानवे करै छैं, सरकारी नौकरी में एक्को दिन के छुट्टी मुश्किल ।”

सत्ती कें आपनों फैसला यही रविवार कें सुनाना छै, बस आरो दू-तीन दिन बचलें छै । एक दाफी तें ओकरो मॉन करलै कि वै, भैसूर सें ई संबंध में सलाह-मशविरा करी लै ।

एक दाफी तें मिलै लें घरों सें ऊ निकलवो करलै, मतरु डेढ़िया तांय ऐतें-ऐतें रुकी गेलों छेलै । मने-मन सोचलें छेलै, “जों इखनी हुनका सें

ई मामला में सलाह-मशविरा करै छियै, तें सवा बीघा जमीन के फैसला वक्ती हमरहै बात उठावै में झिझक होतै, आरो जेठ तें कभियो भी नै चाहतै कि ओकरो बारे में कोय बातो उठावें, जबकि ऊ जमीनो कें लैकें फैसला रुकें केना पारें ! एतना भर सोचना छेलै कि तखनिये वैं डेढ़िया पर राखलौ आपनों गोड़ ऐंगनों दिस खीची लेलकै, ई बुदबुदैतें, “बीहा-शादी कें लैकें जे भी फैसला करना छै, आखिर हमरै करना छै। लाल दा तें ऐतै नै, जानले छै आरो फेनु हुनका बोलावै के साहसो के करतै, केकरा नै मालूम छै कि हुनी अमर के बीहा कहीं आरो पक्की करी रहलौ छेलै। लड़कीवाला अच्छा दहेजो दैलें उतावला छेलै—उतावला छेलै, तें लड़की जरूरे दब होतै, नै तें दहेजो खूब दै आरो खूबसूरत लड़कियो, हेनौ कहीं होलौ छै की!”

ऐंगन लौटी कें वैं ऐंगनाहै में पढ़ैतें अमर कें हेना देखलें छेलै जेना कभियो देखले नै रहें—दाढ़ी-मूँछ सब निकली ऐलौ छै, एकदम घन्नो-घन्नो तें नै, मतुर आबें बीहा में देर करना ठीक नै, हीरू सें हों कही दै छियै, देखा सुनी के ही नै, लिखा-पढ़ी के भी। कांही कोय भाँगटों नै लागी जाय, यै लेली देखा-सुनी के दिन ही लिखा-पढ़ी के बातो होय जैतै। की होतै, लाल दा जों ऊ घड़ी में नहिये होतै। बीहा में हुनका आवै लें विवश करी देवै। की होतै, घंटा भरी बहुत कुछ बोलतै। लाल दा छेकै, बाप नाँखी करलें-धरलें छै। आरो फेनु हुनी नै जानै छै कि जों हम्मैं हेनौ करी रहलौ छियै, तें आपनों लेली नै, अमर के बाबू के मनो के शांति लेली। हुनी जहाँ भी होतै, आपनों संकल्प पूरा होतें देखी कें कतें विभोर होय जैतै।

एतना सोचिये कें सत्ती चित्त सें प्रसन्न होय उठलै, आरो बड़का कोठरी में बिछैलौ खटिया पर आवी कें बैठी रहलै। ऐंगन में बच्चा सिनी नया खोड़ा घोकना शुरू करी देलें छेलै,

एक हुट्टे साढ़े तीन
दू हुट्टे सात
तीन हुट्टे साढ़े दस
चार हुट्टे चौदह
पाँच हुट्टे साढ़े सत्रह
छः हुट्टे इक्कीस
सात हुट्टे साढ़े चौबीस

आठ हुट्टे अट्ठाइस
नौ हुट्टे साढ़े एकतीस
दस हुट्टे पैतीस

(२२)

“तोहें समझै नै छौ, हमरों गेला सें बीहा के रौनके उजड़ें लागतै। भूपेन के माय, तोहें बूझै छौ कैन्हें नी, कि अमर के बीहा पक्की करै में जे-जे तोरों भतीजा सिनी छेल्लौ, ऊ तें बीहा-घोर की, बारातियो में शामिल नै होथौं। हम्में कुछ नहियो बोलवै, तहियो लोगों कें यहा लागतै कि बहुत कुछ बोली रहलौ छियै। तोहें जैय्ये रहलौ छौ, जा आरो जरुरे जा। स्वाति कें लागतै, नै दादा, तें बोदी तें ऐलै, ओकरों मॉन कें बड़्डी संतोष मिलतै। अमरजीतो कें लागतै, बड़की मामी आवी गेलै, तें आबें कुछ भेद-ऊद नै रहलै। स्वाति के मजबूरी हम्मू समझै छियै, आरो हर स्त्री कें, आपनों पति के देलौ वचन कें निभावै में मदद करना चाही। आन लोगें जे बूझौ, हमरा कुछ दुख नै छै। हम्में तें स्वातिये के पारिवारिक शांति लें ऊ सब करी रहलौ छेलियै। जावें दौ, वें जे भी करी रहलौ छै, तें आपनों हित सोचिये कें।” पंचामृत बाबू बड़ी शांति के साथ अपनी कनियैनी सें कहलें छेलै।

आरो हुनी बीहा में ठिक्के नै गेलौ छेलै। सौंसे गाँव में ई बातों कें लै कें कुकुआरों मची गेलौ छेलै कि सत्ती बोदी के अपनी बड़की बोदी तें ऐलौ छै, मतर बड़का मास्टर मामा नै ऐलै। लोगों साथे आशु बाबुओ यहा अनुमान लगैलें छेलै कि इखनी नै, तें बराती जाय के दुओ घंटा पहलै पंचामृत बाबू जरुरे पहुंची जैतै, मतर जबें गाँव के सड़क सें गुजरैवाली अखिरलको मोटर गाड़ी भोंपू बजैतें गुजरी गेलौ छेलै, तें अनुमान आरो कानाफूसी आरो तेज होय गेलौ छेलै।

“हुएँ सकै छै, अमर के बड़का मामा सीधे भागलपुरे में बाराती में मिली जाय। होलौ रहें कि हुनका छुट्टी नै मिललौ रहें।”

“हों, यहू हुएँ पारें । हुवै के तें ढेरे बात हुएँ पारें । जानवे करै छैं, हुनी फूल के ससुराल गेला के बाद एक दिन यहाँ रुकी गेलों छेलै, आरो कथी लें—आबें ई बात गाँव सें छुपलों नै छै । आखिर सोचैं, वैद्य काकां, मास्टर साहब के एत्तें बड़ाय कैन्हें करी रहलों छेलै ।”

हेनों चौबाय तब तांय उठतै रहतै, जब तांय ऐंगना में अमरजीत के बारात विदाय के गीत नै गूजें लागलै,

घर सें बाहर भेलै सोहाना रे बने
बने, सिर केरों मोरिया, अजब रे, बने
अम्मां परेखै तोरों मुख रे, बने
बने, राम उड़हुल दुनू ठोर हे बने
घर सें बाहर भेलै सोहाना रे बने
बने, अंगहे के जोड़वा सोहाना रे बने

गाँव के बच्चा-बुतरु आरो छौड़ी सिनी सब्भे दुआरी दिस दौड़ी पड़लै । मोर पिन्हलें, धोती में दुल्हा बनलों अमरजीत सच्चे में कत्तें सुन्दर लागी रहलों छेलै ।

गीत पर गीत आरो जेन्है ऐभाती सिनी के बीचों सें शबरी काकी के गीत उठलै,

बाबा साजै बरियात रे बने
बने, मामा लुटावै बंगाला पान रे बने

कि सत्ती के आँख हठासिये डबडबाय उठलै । ओकरा ख्याल ऐलै, आय जेठे बेटा के बीहा में नै तें ओकरों बाबुए छै, नै तें ओकरों बड़का मामा, दोनों में से कोय नै । मतुर वै लोर के आँखी के ऊपर आवे नै देलें छेलै । अँचरा सें आँखी के कोर पोछी के सवासिन सिनी के पीछू होय गेलों छेलै ।

गाड़ी के भीतर हौ छवारिक सिनी आरो एकाध अधवैसू बैठलों छेलै, जे साफ-सुथरा धोती, कमीज, फुलपैटों में छेलै, बाकी बचलों तें गाड़ी के छत्ते पर सट्टी-सुट्टी के बैठी रहलों छेलै, जेकरों धराने से पता लागी रहलों छेलै कि ओकरा बीहा सें एतन्है भर मतलब रहें कि भोजों में जमी के ठाँसी लेना छै । हेनों लोगों में पनरों सें बीस बरस के छवारिक बेसी शामिल छेलै, जेकरों या तें कन्धा पर आकि माथा पर एक गमछी तें जरूरे छेलै आरो

लगभग सब्भे टा हाफपैटे में, जे गाड़ी के कुछ दूर गेला पर हेने लागी रहलौं छेलै; जेना मोटर गाड़ी के ऊपर कटहल से भरलौं, गोछियैलौं बोरिया सिनी धरलौं रहें ।

गाड़ी भोपूं बजैतें आँखी से ओझल होय गेलौं छेलै ।

सत्ती तब तांय डेढ़िया पर मुरुत नाँखी ठाढ़ी रहलौं छेलै, जब तांय आरो सवासिन साथें बारात के अरियातैवालाहौ घुरी नै ऐलौं छेलै । जाय वक्ती तें पचीसो ऐभातिन से कम नै होतै, मतुर घर लौटतें-लौटतें बस तीने टा बची रहलौं छेलै, एक तें सत्ती के बड़की बोदी, ओकरी जेठानी, आरो हबीब के बाबू मसूद्दी चाचा, जे बरात साथें गाड़ी तक तें गेलौं छेलै, पर गाड़ी खुलतैं, दुआर तांय आवी के घोर लौटी गेलौं छेलै । बाकी तें रास्ताहै से आपनों-आपनों घोर दिस ससरी गेलौं छेलै ।

शायत अनुकंपा कुछ पूछवे करतियै कि सकीचन के माय पूछी बैठलकै, “मर, अमर के बड़का बाबू के बराती में नै देखलियै । हुनी पहिले कोय आरो गाड़ी से निकली गेलौं छेलै की?”

तें, सत्ती ओकरो दिस बिन देखलें कहलें छेलै, “हुनको तबीअत खराब छै नी, यै लेली नै ऐलात । एक बीहा हेनो, सकीचन के माय, जे बिना बूढ़ों-पुरानों के बिनाहै । फेनु पुरैत तें साथें गेले छै नी, आरो फेनु कोय साथ छै कि नै छै, हमरों भगवान तें साथ होवे करतै ।” कहतें-कहतें ओकरो आँख एकदम छलछलाय उठलै । वैं आँखी के संभारें नै पारलकै, जे अभी तांय लोरों के संभारी राखलें छेलै ।

अनुकंपा ओकरा लैके ऐंगनों से कोठरी आवी गेलै । साँझ उतरी ऐलौं छेलै । गाँव-टोला में शांति फैलें लागलौं छेलै, जों गूजी रहलौं छेलै कांही कुछ, तें शबरी के कंठ, जे अभियो तांय मड़वा के नगीच बैठी के अकेले गीत गावी रहलौं छेलै,

संझा बोलथीं माई हे
किनका घर जैवे हे
के लेतै संझा मनाई हे
दुलरैइते बाबू घर हम्मों हो जैवे
दुलरैती देवी लेतै संझा मनाय हे

जबें सत्तीं रतजग्गी लें कोय जनानी के रोकवे नै करलें छेलै, तें

कोय डोमकच खेलै वास्तें रुकवे कथी लें करतियै। होन्हौ कें सबकें मालूम छेलै, ई घरों में कोय मरदाना रहौ कि नै रहौ, असकलिये कोय जनानिये कैन्हें नी रहें, कोय डोर-भय के बाते नै छै। होनौ कें ई बस्ती में कोय चोरी-डकैती के बातो दूरे छै। हिन्नें सें कोय डकैत निकलवो करै छै, तें ई घरों सें दस बाँस हटिये कें। हेने एक समय में ई घरों के मालिक के रुतवा रहलौ छै। आबें खगी गेलै, तें की होय छै।

तें एकरा सें की? डोमकच नै होतै—सकीचन-माय कें रहलौ नै गेलै। ऊ मने-मन बोललै, “कोय चोरी-चपाटी के भय रहें कि नै रहें आरो कोय साथ दौ कि नै दौ। जबें ऊ यहाँ छै, तें डोमकचो होतै, आरो वैं फाँड़ों कस्सी कें ऐंगना में पूरब दिस मुंह करी हाथ चमकाय-चमकाय गावें लागलै, अनारवती डुमरी, तोरों डुमरा कहाँ गेलों गे केना बेचै छें सुपती मौअनियां, केना बेचै छै डलिया फेनु जल्दिये सें समीचन-माय पूरब दिस आवी कें पछिये मूं करी उत्तर में बोलै लागलें छेलै,

अन्नी-दुअन्नी सुपती मौउनिया
टाका बेचै छी डलिया
डोम्मां गेलै पर देस
के बटिया, हम्मैं ऐलैं
हटिया।

सत्ती कें अनुकंपा हाथ पकड़ी कें ऐंगन लै आनलें छेलै, तें देखलकै सकीचन-माय माथा पर एक डलिया लेलें गोड़ हुन्ने फेकी-फेकी गैवो करी रहलौ छेलै,

जेठो नै ऐवौ वैशाखों नै ऐवौ
ऐवौ कातिक महीना

दोनों ननद-बोदी, वहीं ठां दू मचिया खींची कें बैठी रहलै। सकीचन माय कें तें जेना मोरों के पंख लागी गेलौ रहें।

(२३)

के जाने छेले समय एत्ते जल्दी-जल्दी बीते लागते। सत्ती के तें यहू नसीब नै होलें छेले कि वैं हाथोंहाँड़ी देखें सकें आरो अमर नौकरी पर जाय लें धड़पड़-धड़पड़।

असल में होलें छेले ई कि नौकरी के कागज तें आवी गेलें छेले, दस रोज पहिले, मतर पोस्टमास्टर साहब आपनों घोर चल्लें गेलें छेले। आबें शहर के तें डाकघर छेके नै कि एक डाकिया बीमार रहें, तें दोसरो डाकिया तैयार मिलै छै। ई तें गाँव के डाकघर छेले। बस लै दैके एक्के आदमी, ओकरहै चिट्ठी छँटना छेले आरो फेनु बाँटनाहौ छेले। पोस्टमास्टर रहवो करै, तें चिट्ठी होन्हौ कें तीन-चार दिन बादे बँटावै, यहाँ तें पोस्टमास्टरे घोर गेलें छेले, जब तांय ऐतियै नै, तें चिट्ठी केना मिलतियै।

डाकघर खुल्ला होतियै, तें केकरौ नै केकरौ वहाँ भेजियो देतियै—यहां तें डाकघरे दस रोजों से बंद छेले। जबें नौकरीवाला सरकारी पत्र मिललै, तें ज्वायन करै वास्तें तीन दिन बचलें छेले आरो जाना छेले, राँची। घोर भरी के हाथ-गोड़ फूलें लागलें छेले, आबें एत्ते जल्दी केना सबकुछ सड़ियैलें जैतै!

अभी जे कनियैन के हाथों के मेंहदियो नै छुटलें छेले, ओकरों हाथ-गोड़ों में पंख लागी गेलें छेले। होना कें घरों में सड़ियाय वास्तें चीजे की छेले, तभियो जतन्है टा छेले। सड़ियाना तें छेवे करलै, फेनु लुरगरी बहू होय के परिचयो तें देनाहै छेले। रास्ता भरी वास्तें खाय-पीयै के समानो बनाना-समेटना छेले। मतर अमरजीत ई सब बातों सें उदासीन, माय कें मनावै में लागलें होलें छेले, “देख माय, तोहें असकल्ली यहाँ रहिये कें की करवे? बेकारे बच्चावाला जिद लैके बैठलें छैं कि डीह छोड़ी कें हम्में परदेस में रहै नै पारहैं। हम्में पूछै छियौ, की राखलें छै, ई डीह आरो ढाबर में? बाबू के नै रहला के बाद कौन कटियो टा सुख देलें छै, ई घरें। हम्मूं घर सें बाहिरे रहलां आरो तहूँ भाय-भौजाय कन, हमरा सिनी लें मुँहें जोगै में बाहरे-बाहर रहले। घरों के कौन कोना सलामत छै, कखनी कौन बरसातों में ढनमनाय जाय, कहनौ मुश्किल।”

अमरजीतें मनो के बात राखी देलें छेले, मतर सत्तीं कुछ नै बोललें

छेलै। पुतोहू के कोय कपड़ा-लत्ता नै छुटी जाय, से घरों के कोना-कोना, अलगनी आरनी पर घुराय-फिराय के नजर फेरी रहलौ छेलै।

“कुछ बोललैं नै माय !” अमर नै फेनु आपनों बात राखलकै, तें अबकी ऊ चुप नै रहें पारलै। खटिया पर बैठली-बैठली आपनों दोनों हाथ के एक साथ पीछू करलकै आरो ओकरे बल्लों पर देह के सीधा करतें कहलकै, “तें आबें की चाहै छै, कि जौन घरों में तोरों बाबू के छाया भोरे सें साँझ तांय टहलतें रहै छै, ऊ घोर आरो छाया के साथ छोड़ी, हममें एक मुट्ठी सुख लें, तोरों साथ परदेसों में बसी जांव। ई जिद् छोड़ी दे, बेटा। आरो जों जान्है लें चाहै छै, तें जानी लें, ई मनो में बस एक्के किंछा छै, कि जोन माँटी पर तोरों बाबू के ठठरी समैलौ छै, वही माँटी में हमरो ई ठठरी समावें। एकरा सें बढीके आरो सुख की होतै, हमरों लें। तोहें नौकरी पर जाय रहलौ छौं, पुतोहू के रोकी नै रहलौ छियौं, हों, जों तोरों इच्छा हुआ, तें बलजीतो के साथ लै जो। जों तोरों पुण्य-फल सें यहू पढ़ी-लिखी के कोय रोजगार पकड़ी लै छै, तें बुझवै, तोरों बाबू रों जे मॉन छेलौं, ऊ पुरी गेलै।” एतना कही ऊ चुप होय गेलै। अमरजीतो आगू कुछ नै कहलकै, यहू लें कि वैं माय के जिद जानै छै; नै तें नै, हों तें हों। फेनु यहू बात छेलै कि सत्ती के आँखी के कोर ई सब कहतें-कहतें डबडबाय उठलौ छेलै, शायत वहीं सें वै दोनों आँख मुनी लेलें छेलै, जे अमर सें छुपलौ नै रहें पारलौ छेलै।

अमरजीत कोठरी सें बाहर निकली ऐलौ छेलै, तें देखलकै, घोष बाबू ऐंगना के बाहर हिन्ने-हुन्ने बड़ी तेजी सें घुमी रहलौ छेलै। देखलकै, तें ऊ बाहर निकली ऐलै। गोड़ छूवें लागलै, तें घोष बाबू ओकरो दोनों हाथ पकड़लें कहलकै, “कल्हे विहाने नी निकलवा, बेटा?”

“हों, बड़का बाबू ! जत्तें जल्दी भागलपुर पहुंची जाँव—कैन्हें कि ट्रेन तें वांही सें मिलतै।”

“से तें छै, बेटा। मय्यो के साथ लै जाय रहलौ छौं नी? यहाँ असकल्ली रही, कोय-नै-कोय बातों के लैके आरो खिन्न रहतौ। वहाँ नैकी बो साथें रहतै, तें मॉन बहाल रहतै। बलजीतो के भी साथ लै जाय रहलौ छै तें?”

“कल्हे सें माय के कही रहलौ छियै। एकदम सें नै मानी रहलौ छै। तोहें तें माय के जिद जानवे करै छौं। हों, बलजीत के साथ जरूरे लै जैवै,

यहाँ रहिये कें की करतै यें, बड़ों शहर में रहतै, तें बड़ों पढ़ैयो संभव होय जैतै, आरो कोय-नै-कोय नौकरियो मिलिये जैतै।”

“एकदम ठीक सोचलें छों, बेटा। मतुर हम्में तें कहभौं, अभी रात भर समय छै, माय कें केन्हौ मनावै के कोशिश करों। आबें हमरों की। देखवे करै छों, की रं देह होलों जाय रहलों छै। बलजीत माय यहाँ रहतै, तें मॉन दू घरों के चिंता में बँटलों रहतै। करै पारवै की, ऊ तें आगू के बात छै। जों तोहें माय कें लै जाय छों, तें एक घरों के चिंता से बचलों रहवै।” आशु बाबू बड़ी निरीह आँखों से अमरजीत कें देखलें छेलै।

“हम्में भोररियां तांय कोशिश करतहें रहवै, बड़का बू। जों माय नहिये मानलकै, तें तोरा बेसी फिकिर करै के जरूरत नै छै। खाली भोरे-साँझ दू दाफी पुछारी करी लियौ। माय कें खाय-पीयै के दिक्कत नै होतै। समांग छेवे करै, सब कुछ करी लेतै। आरो कुछ दुख होतै, तें यही महीना भर। फेनु तें सोचन्है नै छै। वहाँ गेला पर हम्में जेन्हें व्यवस्थित होय छियै, कोशिश करवै कि माय कें वहीं लै जैयै। इखनी नै चाहै छै, तें ओकरो मॉन तोड़ी कें नै जैवै।”

“यहू तोहें ठिक्के कहै छों। अच्छा बेटा, आबें जा—आराम करी ला। दू दिन के जगरना बनी जैथौं। बिहानै नीन नै खुलें, तें जगाय लीयों, बेटा। बुढ़ारी के देह छेकै नी। सुतलों बुझी कें निकली नै जैय्यो।” घोष बाबू अमरजीत के माथा पर हाथ राखलें छेलै आरो आपनों दुआरी दिस बड़ी गेलों छेलै।

हुनको आपनों दुआरी दिस जाना छेलै कि सत्ती घरों से बाहर निकली ऐलै। असल में वें अमर कें जेठ से बात करतें सुनी लेलें छेलै, मतर की बात होय रहलों छेलै, वही जानै के खयाल से वें ओकरा कोठरी में बुलाय कें आहिस्ता से पूछलकै, “की कही रहलों छेलौ, बड़का बाबू?”

“कहतै की, तोरों शुभ-लाभ के चिंता करी रहलों छेलै, आरो की? तोरों तें मनो में हमेशे उल्टे बात चक्कर काटतें रहै छौ।” अमरजीत के सुर नहियो बदलला के बादो बदललों होलों छेलै।

ई सुनी कें सत्ती के मॉन होलै कि वें कही दै—आखिर मरदाने नी छेकें, बेटा; माय केरों बात की समझवे, बापे के बात सही लागतौ, आरो बेसी से-बेसी कनियैनी के बात—मतर वें आपनों जुवान कें अमेठी कें राखी देलें

छेलै। ठोर तांय नै पटपटैलै। ऊ क्षण भरी चुप्पे रहलौं छेलै, फेनु बाहर निकलतें हुएँ कहलकै, “हमरो लाभ-शुभ के बारे में सोचै के केकरौ जरूरत नै छै। हुनी सरंगों पर भले रहें, दुख-विधा वक्ती हुनी उतरी के नीने में सब कुछ समझाय-बुझाय जाय छै। बस आपनों ख्याल राखियो, बेटा। आँखी से बड्डी दूर रहवा। भागलपुरों में रहै छेला, तें जखनी मॉन छटपटावै, तोरा देखै लें दौड़ी पड़ियो। आबें तें वहु मुश्किल।” कहतें-कहतें ओकरो ठोर लटपटाय गेलौं छेलै।

“तें ठीक छै, नै जैयें। आबें तें निश्चिन्त; आरो तोहें हमरो लें चिंता एकदम नै करियो, हम्मं असकल्ले नै होवै, तीन-तीन आदमी होवै। बस एतन्है तोहें करियो, कि घोर ढनमनावौ नै।”

(२४)

सत्ती आय के दिनों से सोची रहलौं छै कि आखिर हौ राति अमर नें है केन्हें कहलकै—बस एतन्हें तहूँ करियो कि घोर ढनमनावें नै। तखनी तें हम्मं यहा सोची लेलें छेलियै कि घरों के दीवारी बारे में बोली रहलौं छै। नै, ओकरो कहै के मतलब कुछ आरो छेलै। तें, वहुँ यही बूझै छै कि घोर में जे कुछ भितरिया अशांति चली रहलौं छै, वैमें हमरे हाथ छै।

ई सोचतैं ऊ मनेमन बड़बड़ाय उठलै, “जों यही बात सही छै, तें तहूँ जानी ले, अमर; कुल खानदानों के इज्जत सोचिये के आय तांय सब कुछ बर्दास्त करी लेलियै, नै तें गोदी के बच्चा सिनी के पालै-पोसै लें हमरा नैहरा से लैके ससुरारी तक के लोगों के मुँह नै पोछै लें लागतियै आरो जों आपने घरों में नौड़ी रं रहलियै, तें केकरों लें? तोरे सिनी लें नी। हुनी गोदी में चार-चार ठो बुतरु दै गेलै, यही लें नी सबके मुँह जोगैलें लागलै, नै तें राँढ़ होला के बादो, दू शाम पेट भरवो कौन मुश्किल छेलै, बेटा !

“अरे, तोरो सिनी के पालवों कौन बड़का बात छेलै, जों आपनों जिद् पर अड़ी जैतियै। आय तांय तोरा सिनी से ऊ बात के छिपैतें ऐलों

छियौ, जे तोरों बाबू हमरों सपना में आवी-आवी कें कहते रहलौ। तोरों परबाबा कें एहै जमीन महाशय जी के धरम कचहरी सें मिललौ छेलै कि मत पूछौं। हौ सब के देखभाल करनाहौ मुश्किल। अमर, तोरों बाबू के तें बस एक वहा पढ़ना आरो पढ़ैबों। जमीन दिस कभी ताकवो नै करलकौ।

“आरो जबें तोरों बाबां देह तेजलकौं, तभियो तोरों बाबू के धियायन ऊ दिस नै गेलौ। के जानै छेलै, हमरों ऊपर हेनौ बज्जड़ खसी जैतै, नै तें तखनिये हम्मैं जमीनों के खाता-खसरा आपनों जिम्मा नै करी लेतियै। आबें तें बस ओतने टा जमीन हम्मैं जानै छियै, जे तोरों बड़का बाबू हमरा बताय छौं। मतर एतन्है टा जमीन होतै की? हुनी तें बतावै छै, आबें जमीन के नामों पर बस पछियें वीरान पड़लौ सवा बीघा जमीने छै, आरो जे छेलै, ऊ तें फूल के बीहा में बिकिये गेलै।

“ई बात आरो कोय पतियाय लौ, तें पतियाय लौ, हम्मैं नै पतियावें पारौं। वही दिन हुनी सपना में ऐलौ छेलै, आँख लगलौं नै होतै कि नींद चाँक होय गेलै। लागलै, कोय ऐंगना में खड़ाऊँ पर बुली रहलौ छै। देखलियै, तें झूठ नै छेलै। हुड़का पकड़ी कें हुलकलियै, कि आखिर ऐंगना में हिन्नै-हुन्नै के घूमी रहलौ छै? यही सोची हम्मैं डेढ़ियो दिस देखलियै, तें देखलियै कि ऐंगना सें लागलौ कोय दुआर आरो दीवार काँही नै छै, एकदम चारो दिस उदामौं। भकचकी मिटाय लेली हम्मैं आपनों कोठरी देखलें छेलियै, तें कोठरियो कहाँ छेलै—नै दीवार, नै धरान, नै छप्पर। कहाँ सें हमरा में हौ हियाव आवी गेलौ छेलै कि हम्मैं हौले सें ऐंगना आवी गेलौ छेलियै, तें देखलियै, हुनी हमरा ईशारा करी नद्दी दिस बड़ें लागलौ छेलै। हम्मू रुकलौं नै छेलियै, हमरा झटकतें ऐतें देखी कें हुनी आपनों गोड़ रोकी लेलें छेलै; जेना मंत्र के प्रभाव होय गेलौ रहें, हमरों गोड़ जहाँ के तहाँ रुकी गेलौ छेलै। ऊ दिन पहिलौ दाफी हम्मैं हुनका एकदम निरयासी कें देखलें छेलियै—होने देह, काँही कोय अन्तर छै, अन्तर छेलै, तें बस यही कि एक्के धोती में हुनको सौंसे बदन लिपटलौं होलौ छेलै। छाती-बाँही तें खुल्ले छेलै, हौं, कान्हा सें धोती के छोर जरुरे छाती तक लटकी रहलौ छेलै.....।

“हम्मैं कुछ पुछतियै कि तखनिये हुनको दायां हाथ उठलौ छेलै आरो वही हाथों के तर्जनी सें हुनीं पूबारी बंसबिट्टी सें लैकें उतराही बंसबिट्टी तांय कुछ बताय के कोशिश करलें छेलै। अभी घूमी कें हम्मैं

पूवारी के बँसविट्टी दिस देखवे करतिये कि देखै छियै, हुनी वैठां नै छै। एक क्षण लेली हमरों देह-हाथ सुन्न हेनों होय गेलों छेलै। देखलिये चारो दिस अन्हारे-अन्हार, काँही कोय हमरा देखी नै लें, तें धतपतैलों लौटी पड़लिये। घोर तें होने छै, कन्हौ सें कुछ उदामों नै। जों कुछ छेलै, तें बस यही कि दुआर एकदम खुल्ला छेलै, जेना कोय दोनों किवाड़ खोली कें बाहर निकललौं रहें।

“तें, की हुनी हौ दिन यहा बताय लें ऐलों छेलै, कि हमरा सिनी के जमीन वहाँ सें लैकें वहाँ तांय पड़े छै? जों हेनों, तें की होय गेलै, ऊ जमीन? यही नी कि हिनकों देह छोड़ला के बाद दादां थोड़ो-थोड़ो करी कें ऊ सब बेचतें गेलै कि केकरो भनक तांय नै लागें। एक्के दाफी बेचतियै, तें कुकवारों होवे करतियै। बात हमरों कानों तांय पहुँचतियै, यही लेली सब काम टुकनी-पाँखों के आवाज रं निपटैलों गेलों होतै।

“आबें घरों के आगू के जमीन केना बेचतियै, तें हमरा दीदी सें कहवाय देलकै कि घरों के दीवारी सें सटलों जे जमीन छै, हौ अमर के बाबू आपनों कमाय सें किनलें छेलै, होना कें दियोरें किनलें तें छेल्हौं दादाहै के नामों पर, मतुर दादा के कहना छौं—ई जमीनों पर बोमाँए के हक बनै छै, से लै के कुछ चाहो नै छें।

“हम्मू जानै छियै कि दादा कें चाह कैन्हें नी छै, यही लें नी, कि खाता-खसरा आरो जमीनों के बारे में हम्मों कोय खोज-खबर नै लौं। हौ तें नहिये लेवै, कैन्हेंकि नै तें ऊ सबके बारे में हम्मों जानै छियै, आरो नै खाताहै-खसरा मिलै छै, मिलियो जाय छै, तें की पढ़ें पारवै, फेनु के पढ़ी कें बतैतै? कैथी जानवे के करै छै—ई गाँव में, एक दादाहै छोड़ी कें? जों जानवो करतें होतियै, तें कोय बतैवो करतियै की? सौंसे गाँव के हुनी वैद्य छथिन, सबकें हिनकों दुआरी पर आनाहै छै, के बैर लैकें जिनगी रोगों के बीच गुजारै लें चाहतै? वहूमें एकठो राँढ़ के न्याय मिलें, यही वास्तें ! यैमें केकरौ कोय फायदा होतियै, तें बातो अलग छेलै।

“आबें देखौ नी, जोन दिनों सें हम्मों सवा विधिया जमीनों के बात उठैलें छियै, की रं, दीदीं हिन्ने हुलकवौ छोड़ी देलें छै। विनमा माय सें खाली केन्हौ कें कहलवाय देलकै कि अमर के बड़काबू के छाती में कुछ दरद रहै छै, से घरों सें बाहर निकलौ नै पारै छियै, बोमाँओ के ऐंगन कै दिनों सें नै

जावें पारलें छियै।

“आबें दीदी नै आवें पारी रहलौं छै, तें बात बीमारिये के खाली नै हुएँ पारें, बात तें कुछ आरो होतै। दादा तें आपने वैद्य छेकात, छोटों-मोटों रोग तें हुनी देहों के नसे दबाय कें दूर करी लै छोंत। तबें हमरा तांय घुमाय-फिराय कें खबर पहुंचवाय के की अरथ?

“सब झूठ हुएँ पारें मतुर अमर के बाबू हमरा सें झूठ नै बोलें पारें। बहुत कुछ देखिये-सुनी कें हुनी हौ रात, हमरा सब कुछ बताय लें आवी गेलों छेलै। लाल दा कें है सब की मालूम। एक दाफी बताय के कोशिशो करलियै, तें उल्टे हमरा समझाय देलकै—“तोहें आपनों देवता हेनों भैसुरों पर शंका करै छें, कुल आरो कपड़ा जोगलै सें जोगावै छै—आबें तें खैर लालदा सें कुछ कहै के रास्ताहै खतम होय गेलों छै। जे कुछ करना छै, ऊ हमरै। अमर के बाबू देहों सें नै छोंत, तें की, मनो सें तें छै। जो आय ऊ जमीन कें छोड़ी दै छियै, तें कल ई घरो पर दादा कब्जा जमाय लेतै, खाताहौ-खसरा के बारे में अमर कें पता नै लागें पारतै। अमर कें अकीले की छै ! उल्टै बड़काए बू के पच्छों में चल्लों जाय छै, कहै छै—हमरै सें भूल होय रहलौं छै। घर में अशांति के जोड़ हम्मिये छेकियै। सपनाहौ कांही सच होय छै, सपना तें मनो के रोग छेकै।

“आबें छेकै तें छेकै, आरो अशांति के जोड़ छेकियै, तें छेकियै। कौन हमरो शांत रहला से ऊ आवैवाला समय शांते होय जैतै। शांति तें रहतै, जबें हम्में जीते जी अशांत रहियै। कुछुवो होय जाय, ऊ सवा बीघा जमीन पर हम्में आपनों हक नै छोड़ें पारों। पंच बैठाय लें पड़ें, तें वहू बैठतै। कुल आरो कपड़ा खाली हमरै जोगे वास्तें नै छेकै। होन्हौ कें कोन मारे नैहरा आरो ससुरार सें अच्छा संबंध रही गेलों छै। सब केला-पत्ता के कपड़ा रं, कखनियो चिरावें पारें।

“आय नी दादा के तबीअत खराब छै, महीना भरी के बादे सही, हुनका सें एक दाफी जरूरे बात करवै। आबें कहै के जेकरा जे कहना छै, कहौ। जो कुछु नै, तें एक उपाय छेवे करै नी। झिटकिया बचले छै, हुनी की नै करलें छेलै, झिटकिया लें, एकरों घरे नै बसवैलें छेलै, घरो बनवाय देलें छेलै। झिटकिया के तें आवाजो नै दै छियै कि हाजिर आरो जबें हेनों समय में कुछ करै लें कहवै, तें केना नै करतै, जानो दैकें करतै।

“बस नद्दी के एक जोर सवा बिधिया जमीन दिस बढ़वाय देना छै, जोरिये के पानी सँ आधों जमीन पटवाय देवै, जे कुछ उपजौ कि नै उपजौ, खेतों पर हक तँ बनलौ रहतै।”

“अहे बोदी, घोर अन्हार बनाय कें कैन्हें राखलौ छै” सकीचन-माय एंगना में गोड़ राखथें कहलें छेलै, “अगे माय, संझवाती के बेरो तँ होय चल्लौ छै, लालटेन कैन्हें नी जरैलौ छौं, बोदी? किरासन तेल छौ तँ? तबीअत ठीक छौं, तँ? रुकी जा हम्मी जराय दै छियौं।”

सत्तियो के ध्यान एंगना दिस गेलै, तँ ऊ धड़फड़ाय कें उठलौ छेलै आरो कपड़ा बदलै लें एक कोना पकड़ी लेलें छेलै, तब तांय लालटेन के रोशनी देहरी सँ टघरी कें एंगन दिस बढ़ें लागलौ छेलै।

(२५)

दस दिन सँ बेसिये होय रहलौ होतै। आशु बाबू के दुआरी पर पहिलकों नाँखी आवै जावैवाला के कमी आवी गेलौ छेलै। जौं कोय एवों करै, तँ कुछ देर बैठी कें लौटी जाय।

असल में आशु बाबू कें कुछ कहना रहै छै, तँ आबें लेटले-लेटले इशारा सँ कही दै छै, नै तँ बस ओघरैले-पटैलौ रहै छै।

सत्तियो ई बातों कें गमी रहलौ छेलै। दिनो में दू-एक दाफी तँ घरों सँ बाहर निकलवे करै छेलै, आरो लौटै वक्ती एक दाफी कोनराय कें ऊ बरन्डा दिस जरुरे देखी लै छै, जैठां आशु बाबू के बिछावन लगाय देलौ गेलौ छेलै।

है नै कि बरन्डा पर हुनकों बिछावन नया-नया लगैलौ गेलौ छेलै, बीस बरसों सँ हुनकों बिछावन यहीं पर लगै छै, एक चटाय पर मोटों रं सतरंजी आरो वही पर एक चद्दर। पहिलें ई बिछावन भोर होतै मोड़ी कें राखी देलौ जाय छेलै, मतर जहिया सँ हिनको मॉन दब होलौ छै, बिछावन नै उठै छै। खाली दू-एक दिन के बाद चद्दर बदली देलौ जाय छै।

हौ दिन नै तें सकीचन-माय आरो नै शबरिये माय गाँव में छेलै, शायत दोनो केकरो नेतों पूरे लें आन गाँव गेलों छेलै—यहीलें सत्ती आपनों घरों में अकेले छेलै। हेनों बात नै छेलै कि ओकरा अकेला में कोय डोर-भय लागै छेलै। असकरी तें ऊ सालों तांय रहलौ छै, वहू वक्ती, जखनी नद्दी किनारा में केकरो लहाश जलतें रहै, आरो एक्के साथ कत्तें नी कुत्ता-सियार चिकरें-कानें लागै। तखनी एतना जरूरे हुए कि जेठ रात भर झुट्टे के खाँसी सें बतैतें रहै कि डर के कोय बात नै छै, हम्में जगलौ होलौ छियै। मतर आय ऊ भीतरों में रही-रही कें दहली उठै छै, जखनी जेठों के ऐंगना दिस सें कोय बिल्ली रों कानै के आवाज आवै छै। जखनी भिरगु मिसिर के यहाँ सें संझकी ऊ लौटी रहलौ छेलै, तखनियो तें वै भोकसी, करकी बिल्ली कें छपरी पर बैठली कानतें देखलें छेलै।

भगाय के ख्याल सें वै हट-हट करलें छेलै आरो बिल्ली कें आपनों दिस देखतैं झुकी कें झिकटी उठाय के ढोंगो करलें छेलै कि बिल्ली ऊ सब देखतैं भागी जाय। तखनी ऊ भागी तें गेलों छेलै, मतर कुछुवे देरी के बाद फेनु घुरियो ऐलौ छेलै।

बिल्ली कें भगाय के कोशिश में जेठानी के आवाज रही-रही कें गूँजी उठै छेलै।

“नै, दीदी कें हेनों हालातों में असकली छोड़ना ठीक नै, वही ऐंगना में रहना ठीक होतै। जबें दादा के तबीअत खराब छै, आरो घरों में कोय मरदानाहौ नै छै, एक बेटा टुनुआ, वहू गोड्डा में। सेठों कन नया नया नौकरी मिललौ छै, ऐवो करतै केना। प्राती के रहलौ सें की। घोर हवांक छै, तें दीदी केना नै डरतें होतै। आय बिल्ली के कानवों भी तें अलगे किसिम के छै, ठीक होने, जबें विनय बुखार सें हफड़ी रहलौ छेलै, आरो एक ठो करकी बिल्ली परछती पर रही-रही कें कानी जाय। ठीक ओकरे बिहानिये तें विनय नै रहलौ छेलै। ई सोचतैं, ऊ धड़पड़ाय कें उठी गेलै, ई सोची कि वै रात जेठे के ऐंगना में बितैतै; यैसैं आरो कुछ होतै-नै-होतै, दीदी कें थोड़ों टा बॉल तें मिलवे करतै नी।

अभी ऊ आपनों ऐंगना सें बाहर निकलवे करतियै, कि झिटकिया, डेढ़िया पार करी ऐंगना में आवी बोललै, “काकी, तोहें हमरा बोलैलें छेलौ की? ऐतियै तें हम्मैं विहानिये, मतर संझकी निर्गुणियां हमरा सें कहलकै, तें

झटकलों-झटकलों आवी रहलौ छियौं। की बात छै, काकी? कथी लें याद करलौ?”

“कुछु खास नै। खाली गामों के हाल-समाचार जानै लें। आबें तें एक-दू घोर छोड़ी कें केकरौ कन जावों-आवें नै पारै छियै।” सत्ती नें असली बात कें एकदम छुपैतें हुए कहलें छेलै।

“गामों के हाल-समाचारे की, जेन्हों पहलें छेलै, इखनियो होने छै। हों, सुनै में ऐलौं छै, वैद्य काका के तबीअत ठीक नै छै; आबें केन्हों छै? तोरों खबर मिललै, तें सोचलियै, एक पंथ, दू काज। तोरो काम करी ऐवै, आरो वैद्य काका के हालो समाचार जानी लेवै। आयकल दुआरिये पर एतें काम बढ़ी गेलौं छै, कि हिन्ने-हुन्ने निकलै के फुर्सते कहाँ मिलै छै, काकी।”

“तोरा, जेठ के तबीयत खराब होय के बारे में के कहलकौं?” एतना पूछी सत्ती आपनों बायां हाथ के पांचो अंगुली मुंहों पर राखी लेलें छेलै।

“कहतै के, काकी, सौंसे गाँव में के नै जानी रहलौं छै। गाँव भरी सें पूछतें ऐलौं छियै। हुनकौं बारे में कोय एक-दूसरा सें नै पूछतै, हेनौं हुए पारें की? आरो तोरा है बात मालूम नै छौं कि हुनी दू-तीन दिन सें अन्न-जल भी लेना छोड़ी देलें छै।”

“की?” सत्ती के आँख आरो अंगुली सिनी के बीच दोनों ठोर फैली कें रही गेलौं छेलै। ऊ घुमलै आरो देहरी पर थकथकाय कें बैठी रहलै।

“की, तोरा है सब नै मालूम छौं, काकी?” झिटकियां फेनु सें आपनों बात दोहरैलें छेलै।

“के कहतै, झिटकी ! केकरौ सें मिलवे करै छियै कहाँ, जे कुछु सुनैतै। पता नै की होय गेलौं छै हमरा; जेना केकरौ पर कुछ विश्वासे नै रही गेलौं रहें। जेकरा आपनों लाल दा हेनौं भाय्ये पर विश्वास नै रहें, ऊ भला केकरा पर विश्वास करें पारें ! मतर तोरा तें हमरा पर विश्वास छौं नी, झिटकी?”

“की बोले छौ, काकी! हम्में आपना पर विश्वास करौं कि नै करौं, तोरा पर विश्वास नै करौं, हेनौं तें हुए नै पारें।” वेंने आपनों दोनों कान दोनो हाथों सें पकड़तें हुए कहलें छेलै।

“तें, एक काम करौं झिटकी, तोहें आय राती सें यही घरों में

रहियों। अभी दोनों ऐंगनों में कोय मरद नै छै, तोहें रहवौ, तें यहू घोर देखाय जैतै, आरो दादाहौ के। दादा के तबीअत भले खराब रहें, मतर दीदी के तें प्राण निकलतें होतै—की करें, की नै करें। हम्में दू-चार दिनों वास्तें मनार सेवी आवै छियै। हमरा पूरा विश्वास छै, भगवान मसूदन हमरों लाज राखी लेतै, दुनियाँ के सब चीज डिगें पारें; मनार नै।” सत्ती नें आपना पर एकदम नियंत्रण रखतें हुए कहलें छेलै।

दरअसल हेनों सब दुख तें वैं जुआनिये सें देखतें ऐलों छै, यै लेली घोर विपत्तियो में अपना पर नियंत्रण पावै के हुनर सीखी लेलें छेलै।

“काकी, अभी रात बीतै में दू पहर बाकी छै, तोहें इखनी आराम करों, आरो हम्में ऊ ऐंगना में चल्लों जाय छियों। कुछ सोचिये कें घरों में कही देलें छेलियै कि कोय विशेष काम होलै, तें नहियो लौटें पारों। काकी, तोहें कोय चिंता नै करों। कसम खाय कें कहै छियों, हम्में पाँचो रोज, वैद्य काका के दुआरिये जोगतें रहवै, पाँचे की दसो रोज—जब ताँय तोहें लौटी नै आवै छों। होना कें आबें कोय भगवानों सें की कुछ मांगना, जेहनों कि काका के बारे में सुनलें छियै; तबें, सुनै छियै, मसूदन भगवान के दुआरी सें कोय निराशो नै लौटलों छै।” ई कही कें झिटकिया, डेढ़िया सें बाहर निकली आशु बाबू के ऐंगनों आवी गेलों छेलै।

(२६)

सत्तीं आकाश दिस देखलकै। सरंग गजगज तारा सें भरलों होलों छेलै, आरो अन्हारो होने। ऊ आय आपनों मुँहों में कुछ अन्न नै राखलें छेलै, होन्हौ कें आय बुधवार छेकै, ओकरो वास्तें उपवास के दिन।

यही बुधवार के दिन छेलै, नै जानों कहाँ सें हौ औघड़ ओकरो दुआरी पर आवी गेलों छेलै। चुट्टा ऊपर उठाय कें खनखनैलें छेलै, मतर सत्ती कें देखिये ऊ लौटी पड़लों छेलै, ई कहतें, “बेटी, तोरों चित्त में एखनी कत्तें उथल-पुथल चली रहलों छौ आरो हेनों हालतों में हम्में तोरों देलों

अन्न ग्रहण नै करें पारों। ” ई कही ऊ लौटवे करतियै कि घुमी कें फेनु बोललै, “बेटी, तोहें आपनों ई हालतों से तभिये निजात पावें पारें, जबें तोहें बिना नागाहै बुध कें उपवास राखलों करवै। आरो सुनों, माँटी केरों चिंता नै करें; माँटी में तें सब्भे कें मिलना छै। तोरों पास तें सबसे बड़ों धॉन, तोरों छोटका-बड़का बेटा छेवे करौ, बेटी—ठठरी उठै तांय तोरों सेवा करैवाला। अलख निरंजन।” आरो वहा दिन सें मन-मस्तिष्क के शांति वास्तें सत्ती बुधवार कें जल आकि शर्बत छोड़ी कें कुछुवो ग्रहण नै करै छै। तखनिये कोय आवाज सुनी कें ओकरो देह भुटकी गेलों छेलै।

सटाक, आरो फेनु केकरो ससरी कें धम्म सें गिरे के आवाज। सत्ती बुझी गेलै—झिटकियां जरूरे ऊ करकी बिल्ली पर साटों चलैलें होतै, आरो छपरी सें ससरी कें ऊ जमीनों पर गिरी पड़लों होतै।

“चलों घरों में शांति तें रहतै, अलखनों हेनों कल्हे सें कानी रहलों छेलै” ऊ मनेमन बुदबुदैलै, आरो फेनु सरंग दिस देखलकै। अभी तारा के टिमटिमैवों आरो अन्हार में कोय फरक नै पड़लों छेलै। कि तखनिये बगरो सिनी उतरवारी कोठरी में जोरों-जोरों से चीखना शुरू करी देलकै।

“अगे माय, कहीं करकी बिलैया बगरो कें तें नै दबोची लेलकै! दू दिन पहले तें परछत्ती के खोता में बगरो-बच्चा सिनी के चीं-ची करतें सुनलें छेलियै, हुए सकें छै, मौका देखी बिल्लिया झपटी पड़लों रहें, धरान सें सटले तें छै खोता। धराने पर चढ़ी के धरी लेलें होतै बगरो कें।” एतना सोचना छेलै, कि ऊ सबकुछ भुलाय कें सीधे उतरवारी घरों दिस लालटेन लैकें धातपतैले भागलै।

कोय्यो तें नै रहै छै, उतरवारी घरों में। एक दिसों के दीवार हेने ढनमनाय गेलों छै कि कखनियो भसकी जावें पारें आरो वहा दीवारी बल्लों पर धरान टिकलों होलों छै, से ऊ घरों में राती कोय नै सुतै, कोय बहुत जरूरिये काम होलों, तें कोय ऊ घोर घुसै छै।

सत्ती बगरो-बच्चा दिस लालटेन के रास उसकाय कें देखलकै, तें देखलकै कि बगरो के एक बच्चा नीचे भूसा के ढेरी पर गिरी गेलों छै, आरो दू टा बगरो हिन्ने-हुन्ने उड़ी कें शोर मचैवो करी रहलों छै।

ओकरो धड़कन इस्थिर होलों छेलै। वैंने लालटेन कें एक दिस राखी कें बड़्डी सावधानी सें बगरो-बच्चा कें चुटकी में लेलें छेलै आरो भूसा

के बोरिया पर संभारी के आपनों गोड़ राखलें छेलै; फेनु दीवारी के सहारा लेतेँ ठाढी होय गेलों छेलै।

बड़्डी संभली के वें चुटकी के बगरो-बच्चा के खोता में उतारी देलें छेलै, आरो वहा रं दीवारिये के सहारा लेतेँ बोरिया पर सेँ नीचेँ उतरियो गेलों छै।

वें लालटेन उठाय केँ देखलकै, खोता में चीं-चीं के आवाज फेनु सेँ हुएँ लागलें छेलै, आरो धरानी पर बैठलें दोनों बगरो शांत होलै। बारी-बारी सेँ खोता दिस उड़ी के फेनु धरानी पर बैठी जाय। सत्ती कुछ देर तांय ई सब देखतहै रहलै आरो फेनु लालटेन देहरिये पर राखी केँ भोरकवा उगै के प्रतीक्षा करेँ लागलै।

(२७)

पहाड़ों पर रहतेँ हुए सत्ती केँ तीन दिन बीती रहलें छै। गांवों में ई बातों के लैकेँ खूब गलगुदुर होय रहलें छेलै, कि आखिर सत्ती बोदी गेलै, तें गेलै कहाँ? ई बात तें गाँव के अधिकांश लोगों जानै छै कि आबें बोदी वास्तेँ हुनकोँ लाल दा के द्वार बंद होय गेलें छै, आरो कोय भाय कन एतेँ दिन ठहरी जैवों, है तें हुऐ नै पारें। बेसी-सेँ-बेसी एक रात, दू रात। तीन-चार रोज तें बस लाले दा कन, आरो आबें वहु द्वार बंद। तें आखिर गेलें होतै कहाँ?

आरो सबमें ओतेँ तें नै, मतर साधो आरो सिद्धी के मंडली में ई बातों के लैकेँ दिन-रात चर्चा होय रहलें छै। जतेँ किसिम सेँ जे-जे अनुमान लगैलें जावै सकै छै, सब लगैलें जाय रहलें छै—

“हमरा तें लागै छै कि आपनों भाय के मॉन-मिजाज के खोज-खबर लैलें आपनों समधियारों में होतै, सीधे लाल दा कन तें जावें नै पारें, वहां सेँ हिनकोँ लालदा के घोर छेवे करेँ कतेँ दूर, बस कोस भरी, अमर बतैलें छेलै, आरो बोदी तें पैदले पाँच कोस बूलेँ पारें। दिने दिन अपनी बड़की

बोदी से मिली के समधियारों लौटी जैते होते। पर समधियारा में कोय रहौ पारें कत्ते। बहुत, तें पाँच-छों रोज, वहू नै। देखियें नी दसमे रोज यहाँ दिखतै, सत्ती नैकी बोदी।” माधो मिसिर नें कान्हा से नीचे लटकी ऐलों जनेऊ के ठीक से कंधा पर रखते कहलकै, तें गुलगुलिया, भदेवा, अदरी आरो अनारसी नें एक्के साथ कहलकै, “हुँ पारें छै।”

कि तखनिये मंगलिया दायं हथेली के ऊपर करते कहलकै, “रुकें, रुकें। एते जल्दी निष्कर्ष पर नै पहुँची गेलों करे। जेना लागे छै, तोरा सिनी के ई बोदी के मॉन-मिजाज के बारे में कोय पते नै छै। नैकी बोदी, कविराजिन बोदी नै छेकै—कपली गाय रं सिद्धि। सत्ती बोदी के मनो में बहुत कुछ उमड़ते-घुमड़ते रहै छै, जेकरा सिरिफ हुनिये जानै छै।”

“ई तें ठिक्के कहलै” सिरचने समर्थन में मूड़ी हिलैते कहलें छेलै, “ऊ दिन देखलें नै, कविराज दा, कत्ते समझैते रहलै, नैकी बोदी के, कि पंचामृत बाबू के पंचैती करै वास्ते बुलाय के जरूरते की छै, मतर मानलें छेलै की? लै आनलें छेलै आपनों लालदा के। वहू कत्ते छोटी बात वास्ते—डॉड हौ दिशों से नै, है दिसों से हुनको खेत में जैते।”

“हौ दिन वैद्य दा के मनो के कत्ते धक्का लागलें छेलै, मतर, सब कुछ सही लेलें छेलै।” सिद्धि बहुत देर के बाद आपनों मुँह खोललें छेलै, जे अभी तांय साधो से बतियाय रहलें छेलै।

साधो नें मूड़ी के कंठो तांय दू-तीन बार लानते-उठैते सिद्धि के बात के समर्थन करलें छेलै, तें कपिल बोली पड़लै, “मूड़ी गांती के की हामी भरी रहलें छें, खखसी के कहै नी ‘हों।’ डोर लागे छै, नैकी बोदी से की? की भोजों में खैलों मछली कुछ बोल्लै नै दै रहलें छै?”

“यैमें डरै के की बात होलै। जे सच छेकै, ऊ तें सच्चे छेकै, ओकरा हम्मू कहवै, तहूँ कहवै, आरो वैदराजिन बोदियों कहतै।”

“सिद्धि, गलत की कही रहलें छै” सिवने सिद्धि के बात लोकते कहलकै, “हे ठीक छै कि सत्ती बोदी के वेवहार हमरा सिनी के प्रति कभियो भी, कटियो टा भी खराब नै रहलै, मतर यही बात जेठ आकि जेठानियो के प्रति हुनको रहलै, है के कहें पारें। वसोवासी जमीन के बेचै वक्ती ओते जे कुछ होलै, केकरा से छुपलें छै।”

“जमीनवाला विवाद रुकवे कहाँ करलें छै। आबें सवा बीघा जे

जमीन बचलों छै, ओकरै पर नैकी बोदी के दाँत गड़लों छै, आधों हिस्सा के बखरा चाहै छै। हे बात कें लैकें भीतरे-भीतर वैदराजिन बोदी की कम दुखित छै, बोलै कुछ नै छै, ई अलग बात छेकै।” साधूं, अबकी मूड़ी ऊपर करतें कहलें छेलै।

“सुनै के तें यहाँ तक सुनलें छियै, महीना भरी पहिलें हुनी झिटकिया कें बोलाय कें कहलें छेलै, जोर के धार जेना हुए तेना, खेतों तांय लै जो।’ अजनसिया बोललै, तें अब तांय सब के मुँह ताकतें गुलगुलियां बीचे में टोकतें पूछलकै, “हे तोरा के कहलकौ? भदेवाहें कहलें होतौ, एक नम्बर के लुतरलग्गा। की एकरा झिटकियां आपनों मुँहों सें बतलें छै आकि सत्ती वोदियें? झूठ-झूठ के केकरौ पर ढेंस आकि लांछन लगैवौ ठीक नै। बेसी तोरा सिनी बोलवे, तें पुरवासखी होय जैतौ। कोनो कल्पवास पर नै गेलों छै, नैकी बोदी।”

पुरवासखी के बात सुनलें सब चुप्पी धारण करी लेलें छेलै, तें गुलगुलिया आगू बोललै, “हों एतना जरूरे कभियो कहलें छेलै कि हौ जोर, जों ऊ जमीनो तांय केन्हौ कें होतियै, तें खेत के किस्मते बदली जैतियै। हे बात तें सत्ती बोदीं हमरै सें कहलें छेलै। हे कोय चोरका बात थोड़े छेकै। तें, एकरों अरथ ई कहाँ निकलै छै कि हुनी झिटकिया सें जोर वहाँ तांय बहवाय के बात सोची रहलें छै। अरे, तोरासिनी नै बूझें पारवें नैकी बोदी कें। एतें दुक्खों के बादो केन्हों इस्थिर छै। कटलों ठूठ गाछ के देखलें छै, जेकरों खोड़ासिनी में सुग्गा-मैना आरनी हुलकतें रहै छै—बोदी कें वहा समझें।” ओकरों बोली में झाँस आवी गेलों छेलै।

“गुलगुलिया, जरा नरमैय्ये कें बोलवें, तें कुछु घटी जैतौ की? अरे, एक बात तें तहूं सोचें, जबें हुनी हे बात तोरा सें कहें पारें, तें एकरा में कौन अचरज कि यहा बात झिटकिया कें नै कहलें होतै। अच्छा, ई तें बताव कि नैकी बोदी लें पहिलें तोहें आपनों कि झिटकिया?” मंगलिया गुलगुलिया के चेहरा पर आपनों नजर गड़तें हुए कहलें छेलै।

“से तें नहिये।”

“तें, फेनु तोहें पच्छ कथी लें लै छें !”

“पच्छ के बात नै छै, यहाँ तें बाते पर बात निकली रहलें छै नी। जे असली बात छै, ऊ तें हटी चुकलें छै” गुलगुलिया नें विषय कें घुमैटतें

हुए कहलें छेलै, “बात तें छेलै कि आखिर नैकी बोदी गेलों होतै कहाँ? हमरा तें लागै छै कि हुनी नै तें समधियारा में होतै, नै आपनों लाल दादाहै कन होतै, होतै हुनी हिन्नें-हुन्हें कहीं।”

“हिन्नें-हुन्हें की? बँसबट्टी आकि बारी में?” अरदसिया दायां हाथ के औंगरी सब चमकाय कें बोललें छेलै।

“अरे मुरुख, हिन्नें-हुन्नें के मतलब छेकै, या तें बींसी में होतै या फेनु मनार पर्वते पर हुए पांरें। याद छौ नी, जबें विनय होनों बीमार पड़लें छेलै, तें दिन में एक-दाफी मनारों पर जरूरे चल्लों जाय। मसूदन मन्दिरों के पिण्डा पर माथों टेकै लें।”

“तोरो बात सहियो हुए पांरें, मतुर तखनी तें कारण छेलै; बेटा के प्राण के सवाल छेलै; इखनी भला कथी लें जैतै?” अरदसियां पुछलें छेलै।

“वैद्य दा लेली !”

“भला वैद्य दा लें कथी लें जैतै? कौन मारे, हुनकों प्रति सत्ती बोदी के मनो में कोय्यो सुभाव छै !” कपिल नें टोकलें छेलै, तें गुलगुलिया बोललै “यहा तें तोहें नै समझें पारलें छैं, कपिल। कहलियौ नी, नैकी बोदी के मनो के गति तें देवताहौ नै समझें पांरें। एकदम बदरकटुओं रौद। तबें यहू छै कि वैद्य दा लेली हुनकों मनो में जे श्रद्धा छै, ऊ फलगु नद्दी के पानी रं बूझें। दिखावै तें नै छै, बस बहै छै भीतरे-भीतर। आरो कैन्हें नी बहतै, जखनी लछमी दा के इन्तकाल होलें छेलै, वैद्य दां की रं दोनों घोर संभाली लेलें छेलै, जरियो टा भेद नै करलें छेलै। है बात जबें हमरै सिनी नै भूलें पारलें छियै, तें नैकी बोदी की भूलें पारतै। तखनी हमरों सिनी के उमरे की होतै। बेसी सें बेसी अमर सें साल दू साल बड़ों। “खैर जे भी हुए” माधो बातों कें संक्षिप्त करतें कहलें छेलै, “भगमानों सें मनावें कि तोरो सत्ती बोदी मनारे पर रहें, आरो हुनी आपने मनो से घुरियो आवै, कैन्हें कि केकरो मनैला आकि बुलैला पर तें हुनी ढेर आवैवाली छै, आरो जो सचमुचे में हुनकों बारे में जानै के किंछा राखै छैं, तें चल झिटकिया लुग। सब नहियो जानतें होतै, तें कुछ-नै-कुछ जरूरे जानतें होतै।”

“जानना तें चाहवे करियो।” अजनसिया ई कहतें आपनों चूतड़ झाड़तें उठलें छेलै, तें सब्भे उठी कें दखिने दिस सिधयाय गेलें छेलै।

(२८)

सत्ती धड़फड़ाय के उठलौं छेलै। ओकरा यही लागलौं छेलै कि चारो दिसों से दस प्रेत ओकराहै पकड़े लें हाथ फेंकतें रहें।

“की होलौं, दीदी?” मठ के एक वैरागन ने ओकरा ई किसिम से चौंकते देखी के पूछलें छेलै, “की कोय बुरा सपना देखी लेलौ की? हममें देखी रहलौं छेलियै कि तोहें बैठले-बैठले घुमनियाय रहलौं छेलौ। दिन भरी, है गुफा से हो गुफा के देवता के पूजलें फुरै छौ, ओकरा पर एक दाफी शिखर के मनीरों में जरूरे जौल चढ़ाय आवै छौ, भला कोय केना नै थके ! ओकरा पर है वयस, के दाफी तोरा कहैलियौं कि आश्रम में रही के सबके ध्यान करी लेलौं करौं। चन्द्र बाबाओं तोरा के दाफी सफा-सफा कही के समझैलकौं, मतुर तोहें सफा के जानाहै लें नै चाहै छौ।”

वैरागन बहुत कुछ बोललौं गेलौं छेलै, मतुर सत्ती कुछ सुनतियै, तबे नी। वैं एक दाफी मनारों के ऊपर नजर दौड़लकै, आरो लम्बा डेग भरते पथल के बनलौं सीढ़ी पर झब-झब चढ़े लागलै। पता नै, केना के ऊ नरसिंह गुफा लुग पहुँची गेलौं छेलै, आरो वही से पथले पर बनलौं छोटों-छोटों सीढ़ी के पार करी योगमठ के नगीच आवी गेलै। वही से वैं दायां से बायां, पूरे दक्खिन के देखलकै, बड़ी निरयासी-निरयासी के; वहाँ कोय बोहो आवै के निशान नै छेलै, चीर नद्दी ते होने शांत बनलौं बही रहलौं छेलै, आरो पार के बस्ती, टोला, गाछ, बिरिछ सब-के-सब वहा रं छेलै, जेना बिहैला के बाद वैं पहिलौं दाफी ई मनारों से देखलें छेलै।

वैं दोनों हाथों से दोनो आँख हौले से मलते हुँ दौलतपुर के देखलकै, मने-मन बोललै, “यहाँ से हमरौं ससुरालो केन्हो साफ-साफ दिखाय छै। बस्ती भले नै दिखावै, हो विशाल बौर गाछ से ते हममें आपनो घोर के पहचानै सकै छी। हुनी कहलें छेलै, जो यहाँ से हममें आपनो गाँव के कोय आदमी के हाँक लगैयै, ते ऊ आदमी हमरौं हाँक सुनी लेतै।

“आरो जो कुछ होनो होलौं होतियै, ते कुहराम नै मची गेलौं होतियै। सौंसे मनार आरो एकरों सबटा गुफाओ कुहरामों से गूजते होतियै। जरूरे हमरा भरम होय गेलै, तखनी भरमैलौं नै होवै, नींदे लागी गेलौं होतै, आरो हो सब देखी लेलियै।” निचिन्त रं होलै ते आहिस्ता-आहिस्ता चली के

योगमठ के पथल-छतरी के नीचे बैठी गेलों छेलै ।

“बाप रे, हौ केन्हों भयानक सपना छेलै ।” वैं मठ के दीवारी सें कोकड़ी टिकैतें हुएँ, कुछुवे देर पहलकों दिरिश कें याद करलकै; “देखतैं, देखतैं आकाशों में की रं घन्नों-घन्नों मेघ घुमड़ी ऐलों छेलै, जबकि अखाड़ो के अभी दूर-दूर तांय दरश नै छै । झोंड़ पड़ना शुरू होलै, तें चीर नद्दी तें देखतैं-देखतैं खौलें लागलै । कम-से-कम ससुराल में गोड़ राखला के बाद सें तें वैं हेनों बोहों चीर में कभियो नै देखलें छेलै । बोहों आवै छै जरूरे, गाँव आरो बस्ती कभियो नै डुबैलें छै, मतुर आयकों सपनावाला बोहों तें भगवान मसूदने जानै कि सतयुगों में होने ई नद्दी उमड़ै छेलै कि नै । उमड़तौ होतै, की पता । हुनी बतैलें छेलै, ई चीर वहा क्षीरसागर छेकै, जै पर भगवान विष्णु के शेष नाग के शैय्या लागलों रहै । क्षीर सागर सूखतें गेलै, आरो नद्दी बनी गेलै । तें, ई नद्दी जों वही रं फेनु सें सागर बनिये उठै; प्रकृति के कौन ठिकानों । कखनी खाई पहाड़ बनी जाय आरो पहाड़ कखनी खाई । तबें ऊ सपना झूठ केना हुएँ पारें ? आयकों सपना में देखलों, कल आँखी के देखलों बनी जाय” आरो एतना सोचतैं सत्ती फेनु सें सीधा होय कें बैठी गेलै ।

“हे भगवान, केन्हों ऊ दृश्य छेलै” की हेनों हुएँ पारें—ई सोचतैं ओकरा कंपकंपी छुटी गेलों छेलै, “चीर के बोहों पहलें डाँड़ी से होलें ऊ जोर तांय पहुंचलों छेलै आरो फेनु सब आरी-बारी तोड़तें पहलें तें खेतों में घुसलों छेलै आरो वहीं सें ऐंगना में बोहों के लहर उतरना शुरू होय गेलों छेलै । लगै छेलै; जेना तलवार के धार रहें, गाछ-बिरिछ कें काटतें घरों कें तरी सें ही काटी कें राखी देलें छेलै ।

“जेठानी ऊ धार में बहें लागलों छेलै, ई देखी दुनुआ के कनियैनी हेलतें हुएँ, हों, ओकरा हेलवे नी कहें पारों, दीदी कें भरी पाँजों पकड़लें छेलै आरो ठामें के आमों गाछी कें धरी लेलें छेलै । हमरों दिस केकरो ध्यान छेलै, जों दादां नै देखतियै, तें तालाहै पुल में समाय कें रही जैतियों । हौ तें जेठों दां आपनों धोती कस्सी कें बाँधिये पुल में छलांग लगाय देलें छेलै, आरो हमरा बचाय लेली, गिरलों बांस लैकें हेलें लागलों छेलै । भैसूर नगीच आवी रहलों छेलै, तें देहों पर कपड़ा झब-झब राखें लागलियै, कि नींद खुली गेलै ।”

सपना के ऊ सब बात याद करी कें सत्ती जानें कौन दुनियां में

हेराय गेलै—अमर के बाबू देह तेजी देलें छेलै। तखनी हमरों की रं दशा होय गेलों छेलै, है बात सालो बाद देवदासी ओकरा बतैलें छेलै, नै देहों के सुध, नै कपड़ा के; बच्चा-बुतरू तें हमरों हालत देखिये कें मुँह सुखैलें रहै आकि कानहैं रहै। हौ वक्ती जेठे दा तें आपनों घरों के चिंता छोड़ी, दीदी कें भेजी-भेजी, हमरों खोज-खबर लेतें रहै। दीदी कें भेजै की, हुनी तें दिन-रात हमरे लुग बैठलें रहै। जेठों दा के भेजलें दबाय दीदिये कें पिलाना छेलै, खिलानौ छेलै, तें हुनकै। तंत्र-मंत्र सें लैकें किसिम-किसिम के दवाय-दारू। देवदासी बतैनें छेलै—है कहों कि की नै जेठें तोरा लें करलें छेलों, तबें तोहें रास्ता पर ऐलें छेलौ।”

“मतर है कोय बतैलें बात तें नै छैकै, ऊ तें हमरों आँखी सें देखलें छैकै। लोगें तें यहा कहै छेलै— ई तें केकरो नजरी के बाण लगलें छैकें, माय की ठीक हुए पारथों, कोय कुछ, तें कोय कुछ। माय के सौंसे देह केन्हों चित्ती सें भरी गेलों छेलै! हम्में लाल दा सें कही-सुनी कें माय कें दौलतपुर लै आनलें छेलियै। जेठें देखलें छेलै, बड़ी देर तांय, आरो फेनु अमर कें बोलाय कें कहलें छेलै—कनेली पंडित कें हमरों नाम कहियें, यहू कहियें कि एक बड़ों रं कंतरी, मोटों दलों के, बड़का बाबू मांगलें छों, कल्हे भेजी दियौ! दोसरे दिन एकदम भोरे-भोर माय वहा कंतरी पर अमर के सहारा लेलें चुकूमुकू बैठी रहलें छेलै। जेठें मने-मन मंतर पढ़ना शुरू करलें छेलै आरो एकरों साथे कंतरी रसें-रसें आपनों जग्घा पर घूमें लागलें छेलै, एकदम होने; जेना कंतरी मट्टी में गढ़लें घूमतें रहें। आपनों जग्घा पर कंतरी ओत्ते देर घूमी कें रुकी गेलें छेलै, जत्तें देर पाँच बेरी जोरों-जोरों सें साँस लै आरो छोड़ै में लागै छै। चार दिन तांय हेने होतें रहलें छेलै। पाँचवों दिन कंतरी घूमी कें चार टुकड़ा में बँटी गेलें छेलै आरो दोसरो दिन के बिहानिये सें माय के शरीर केला के गब्भा नांखी चिकनों हुए लागलें छेलै। ई तें हमरों आँखी के देखलें छैकै। माय मरै सें बची गेलें छेलै, तें जेठे के पुण्य-प्रतापों सें आरो देवदासी कहै छै—जों हम्मू बची गेलियै, तें जेठे के कारण। भला वैं कथी लें कुछ लगाय-भिड़ाय कें कहतै?”

देवदासी के बात याद ऐहैं ओकरा लागलै कि कड़कड़िया धूप पर दूर-दूर तांय मेघ बिछी गेलें रहें, पानी तें नै, मतर बरफे रं शीतल हवा चौवाय बनी कें बहें लागलें रहें। कि तखनिये ओकरा खयाल ऐलै—की रं

जेठें खाना-पीना छोड़ी देलें छेलै, कमजोरी सें मुँह तांय नै खुलै छै, आरो हम्में यहाँ भगमानों सें दादा के औरदा मांगी रहलौ छी, जबेकि वहाँ रही कें हमरा सेवा करै के जरूरत छै। इखनी तें दीदियो कें हमरों होने जरूरत छै। आरो हम्में मनारों पर बैठी कें की करी रहलौ छियै। सत्ती बुदबुदलै, “हे भगवान.. भला कथी लें, की-की सोची, हम्में की-की करतें रहलियै। हमरों सोभाव हेन्हों छै कि जे हमरा लें एतें सोचै छै, हम्में ओकरे विरुद्ध बनी जाय छियै। नै तें की लाल दा के मॉन हेना उचाटतियै, आरो जे बेटा लें हम्में ऊ सब करलियै, वही कौन हमरा सही बतलकै ! तबें सही तें जेठे नी। हुनी हमरों की-की बात नै सहलकै, मतर कभियो नै आपन्है सें, नै दीदिये सें कुछ कहवैलकै। आरो एक हम्में, कि आपनों बात ऊँच्चों राखै के फेरा में सब कुछ अनसुना करतें रहलियै। यहाँ तांय कि झिटकिया सें, जमीन तांय जोर खोदवाय के भी बात सोची लेलियै....कहीं हेनों तें नै कि हौ बात बाते-बातों में झिटकिया करी देलें रहें कि डॉड़ कें छीलतें-छीलतें खेतों तांय पहुंचाय देलें रहें—ई सोची कि वैद्य का के पूरा घोर तें हुनकों बीमारिये लैकें ओझरैलौ छै, आरो यही मौका छै....हे भगवान जों केन्हों कें ई बात जेठ, आकि दीदिये कें मालूम होय जाय, तें हुनका सिनी पर की गुजरतै, कुछुवो गुजरें पारें...एतना सोचहैं ऊ योगमठ सें बाहर निकली गेलै आरो सीधे पापहरणी तांय उतरै लें हिन्ने-हुन्ने रास्ता सें तेज-तेज निकलें लागलै, जेना ऊ चलतें नै रहें, मनारों पर ससरतें रहें।

पापहरणी तांय ऊ एक्के साँस में उतरी ऐलौ छेलै। पापहरणी देवी कें दूरहै सें सिर नवैलें छेलै आरो पूवारियेवाला रास्ता पकड़ी लेलें छेलै, जे रास्ता पकड़ी कें तीन दिन पहिलें ऊ यहाँ ऐलौ छेलै। अभी तें गोधूली बेराहौ नै होलौ छेलै; डेढ़ कोस नापाहै में कतें समय लागतियै, तभियो सत्ती आपनों चाल नरम नै करलें छेलै। सोचलकै—नाथ मंदिर होले निकली जांव, तें अच्छा।

अभी ऊ नाथ मंदिर के नगीच पहुँचलो नै होतै कि ओकरों सामना में वही औघड़ ठाढ़ों दिखलै, जे कै साल पहिलें ओकरों दुआरी सें बिना कुछ लेलें लौटी गेलौ छै। सत्ती ऊ दिस बढ़तियै, कुछ बोलतियै, एकरों पहिले ऊ बोली पड़लौ छेलै, “माँटी के की चिंता करवों, सबकें माँटीहै में मिलना छै। अलख निरंजन!” एतना कही ऊ नाथ मंदिर के नीचे उतरी गेलौ छेलै। सत्ती

सें कुछ बोललौं नै गेलौं छेलै, बस होन्हे झटकलौं आगू बढ़ी गेलौं छेलै ।

(२६)

अय्ये वैद्य आशु बाबू के पत्थ पड़लौं छै । कै दिनों के बाद खाय के रुच होलै, तें मूंग के पानी रं दाल में पुरानों चौर के भात मत्थी के हुनकों आगू में राखलौं गेलौं छेलै, आरो कल्हे-कल्हे उठाय के हुनी वहा पीवी लेलें छेलै ।

दीदी के पीठ पीछू सत्ती रात भरी बैठले रहलै, जेठानी गोतिनी के सहारा पावी झुपनियैतें रहली छेलै, मतर सत्ती नै सुतली छेलै; जेना नींद आँखी के चीज नै रहें, मनो के बात रहें । ई बीचों में ऊ आपनों ऐंगन गेवो करलै, तें जेना हुलकी भरै भर ।

आय तेसरो दिन छेकै । भोरकवा उगै पर ऐलै, तें ऊ आपनों ऐंगन आवी गेलै । है बात छुपलौं नै छेलै कि सत्ती घोर लौटी ऐलौं छै । जानी तें लेलें छेलै गाँवभरी तभिये, जबें ओकरो घरों के पिछुवाड़ी में झबरलौं कचनार गाछी परको चिड़िया सिनी खूब देर तांय चहचहैतें रहलौं छेलै ।

आरो जखनी बँसबिट्टी आरो बरो गाछी पर भोरको चुनमुनैवो शुरूवो नै होलौं छेलै, तखनिये सें सत्ती के ऐंगनों में टोला-टोला के जनानी सिनी के ऐवों-जैवों शुरू होय गेलौं छेलै ।

जे नै आवें पारलौं छेलै, वहु ओकरो बात केकरौ सें नै केकरौ सें करी रहलौं छेलै । पनसोखा माय तें सबके एक्के बात कही रहलौं छेलै—“वैद्य दा के मॉन तें वहा दिन सें बदलें लागलौं छेलै, जौन दिन नैकी बोदी मनारों पर वास करै के बात हमरा बतैलें छेलै । गाँव के सीमाना पर पहुँची के हुनी सुग्गी माय के जगैलें छेलै, आरो कहलें छेलै, हमरो घोर दिनों में एक झपट जरूरे झाँकी अय्यो, ननद । कुछ दिन मनारो पर वास लेली जाय रहलौं छियै ।”

पनसोखा माय के बातों के कोय विरोध तें नै करलकै, मतर

शिवरानी काकी, जरूरे बीचों में बोली देलें छेलै कि, “जे भी हुएँ, बड़की बोदी के धीरज आरो हौ सेवा केना भुलैलौ जैतै, जिनको आँख एत्तै-एत्तै रात नै सुतें पारलै, नै जीहा कोय सुआद जानें पारलकै। कनियाय होय के धरम निभाय देलकै बड़की बोदी। तबें यहू बात तें सोचैवाला छेवे करै कि जौन दिन सत्ती बोदी के गोड़ मनार छोड़ी कें यहाँ पड़लै, वही दिन वैद्य दाँ पथ्य खाय छै, ई कुछ तें मानै जरूरे रक्खै छै।

सूरज दू बाँस सें ऊपर चढ़ी ऐलौ होतै। इखनी सत्ती के ऐंगना में दू-चार बूढ़ी छोड़ी कें आरो कोय जनानी नै छै। बाकी जे लोग हिन्ने-हुन्ने देहरी, मचिया, खटिया पर बैठलौ होलौ छै, ओकरा में माधो, मंगलिया, अदरी, सिमरन, कपिल, सिद्धि, झिटकिया आरो साधो तें छेवे करै, ई सब सें अलग तीन हेनौ लोग छै, जेकरा ई गाँव में पहिले दाफी देखलौ जाय रहलौ छै।

हों, अजनसियां जरूरे ई तीनों कें भोरियें गाड़ी सें उतरतें देखलें छेलै, तखनी लोटा लेलें ऊ बँसबिट्टी दिस जाय रहलौ छेलै। गोड़ तें छेलै बँसबिट्टिये दिस, मतर नजर वहा तीनो लोगों पर—कैन्हेंकि ऊ सब गामे दिस आवी रहलौ छेलै। वें यहू देखलें छेलै कि जखनी ऊ तीनो आदमी गाड़ी सें उतरलौ छेलै, तखनी सुग्गी माय वही आमी गाछ के नीचे ठाढ़ी छेलै। सुग्गीमांय तीनो आदमी कें देखलैं, ऊ सब के नगीच गेलौ छेलै आरो फेनु ऊ तीनो आदमी सुग्गी-माय के पीछू-पीछू बड़ें लागलौ छेलै।

तखनी अजनसियां ई बातों कें लैके कोय खास माथा-पच्ची नै करलें छेलै, ई सोची कें कि एत्तें बड़ों गाँव छै, केकरो कन कुटुम-उटुम ऐत्तै रहै छै, तें माथों लड़ैयो की?

आरो इखनी जबें वहा तीनों आदमी कें यहाँ सत्ती बोदी के ऐंगन में देखलकै, तें ओकरो माथों ठनकलौ छेलै। एक दाफी तें यहा सोचलकै कि हुएँ नै हुएँ, बोदी सवा बिधिया जमीनों कें हथियाय लेली ही कोय लब्बों व्यूह रचलौ छै। यहू सोचलें छेलै कि बोदी ओकरा सिनी कें कोय-न-कोय फेर में जरूरे फसाय देतै—यै लेली यहाँ सें निकल्लैं में भला छै। मतर केकरो हिलतें-डुलतें नै देखी कें वहू पुतला बनले रहलै, मतर सोचतें तें चलले गेलै कि कल ओत्ते भोरिये कैन्हें सत्ती बोदी भटकली-भटकली यशपुरा दिस चल्ली जाय रहलौ छै? ई बात इखनी समझें पारी रहलौ छियै।

ई बात खाली अजनसिया के मनो में नै उठी रहलौ छेलै, वहाँ पर जौरो होलौ मंगलिया, बदरी, सिद्धि आरो साधुओ के मनो में उठी रहलौ छेलै, फेनु के कहें पारें कि माधो के भी मनो में यही बात नै उठतें होतै। मतर सब चुप छेलै।

चुप रहै के कारनो शायत यही बात होतै कि जो सवा बिधिया जमीन के हथियैय्ये के बात छै, तें हेनाके सबके बोलाय के बाते कहाँ उठै छै, ऊ तें एकांतिये में गुपचुप-गुपचुप होतियै। तबे सत्ती बोदी के बारे में कुछवो कहना मुश्किल; कखनी की करी बैठें।

कि तखनिये तीनो में से एक आदमी ठाढ़ो होलै। ओकरो ठाढ़ो होतैं सबके ध्यान ओकरे दिस होय गेलै। सब एकदम शांत, सबके मुँह कुछ ऊपर होय के खुली गेलौ छेलै।

“तें आपने सिनी सुनियै” ऊ आदमी बोलना शुरू करी देलें छेलै, “होना के तें दिवंगत मास्टर लक्ष्मी घोष के विधवा पत्नी स्वाति जी के इच्छा ही काफी छै, यैमें गाँववाला के सहमति आरो असहमति के कोय जरूरते नै छै; तभियो जबे हिनको इच्छा छै, तें आपना सिनी के बीचो में, हिनको है वसीयतनामा पढ़ी के सुनैलो जाय छै। होना के आपने सिनी चाहौ तें ई वसीयत खुददे पढ़ो पारै छौ, जे कैथी अक्षर जानै छौ; नै तें सब्भे के सहूलियत वास्तें हम्मैं संक्षेप में ई वसीयतनामा के बात सुनाय दै छियौ।

“ई वसीयत में लिखलौ छै कि हम्मैं यानी स्वाति घोष आपनो स्वेच्छा से आपनो हिस्सा के घोर-बारी आपनो जेठानी के नाम करी रहलौ छियै, आय से ई घोर आरो बारी के कोनो कोनाहौ पर हमरो आकि हमरो कोय संतानो के कोय्यो अधिकार नै होतै। चूँकि है सम्पत्ति हमरो मालिके हमरो नाम करलें छै, यै लेली हमरो इच्छा के विरुद्ध हमरो कोय संतान कभियो कुछ नै बोलें पारें। ई हमरो अकाट्य आरो अंतिम इच्छा छेकै।” ई कहला के बाद ऊ आदमी आपनो हाथ के कागज एक दिसो से दूसरो दिसो के सब आदमी के देखलें छेलै, जे कागज में सत्ती घोष के अंगूठा के दू-दू छाप छेलै।

कोय कुछ नै बोली रहलौ छेलै, कुछ बोलै नै पारी रहलौ छेलै। ऊ आदमी के बैठतैं सबके नजर एक कोना में बैठली स्वाति पर टिकी गेलै। सबने देखलकै, वहाँ कोय सत्ती बोदी नै, तुलसी चौरा पर सूखी के काँटो

बनलौं तुलसी पौधा बैंगनी आरो हरा रंगवाला पता सें ढकमोरी ऐलौं छै,
जेकरो रोआं-रोआं रोमांचित । खिलखिलैलौं शिशिर हाथ हिलाय-हिलाय के
सबके सुआगत में विभोर छैलै । ■■